बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन : 100

हिन्दी (कक्षा : 10)

पढ़ेगा राजस्थान

बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय : संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

संयोजक कार्यालय - संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन - 100 मार्गदर्शक

पितराम सिंह
संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू संभाग, चूरू

महेन्द्र सिंह बड़सरा
सहायक निदेशक
संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

संकलनकर्त्ता टीम - हिन्दी

मन्नाराम मिडल
रा.उ.मा.वि.सामी

सरोज धायल
रा.उ.मा.वि. खाटूश्यामजी

चांदनी राठौड़
रा.उ.मा.वि.गोवटी

शंकर लाल चाहिल
रा.उ.मा.वि.गनोड़ा

प्रश्न–पत्र की योजना

कक्षा – **Xth**
विषय – हिन्दी (01)
अवधि – 3 घण्टे 15 मिनट पूर्णांक – 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

क्र.सं.	उद्देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	ज्ञान	17	21.25%
2.	अवबोध	19	23.75%
3.	अभिव्यक्ति	29	36.25%
4.	मौलिकता	15	18.75%
योग		**80**	

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार –

क्र. सं.	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रति प्रश्न	कुल अंक प्रतिशत	प्रतिशत प्रश्नों का	संभावित समय
1.	वस्तुनिष्ठ	18	1	22.5	36	22
2.	अतिलघूत्तरात्मक	12	1	15	24	27
3.	लघूत्तरात्मक	13	2	32.5	26	69
4.	दीर्घउत्तरीय प्रश्न	–	–	–	–	–
5.	निबंधात्मक	4 3	3 4	30	14	77
	योग	50				195

3. विषय वस्तु का अंकभार –

क्र.सं.	विषय वस्तु	अंकभार	प्रतिशत
1.	अपिठत	10	12.5%
2.	निबंध	4	5%
3.	पत्र	4	5%
4.	विज्ञापन	4	5%
5.	व्या.व्याकरण एवम् रचा	12	15%
6.	क्षितिज (पाठ्य पुस्तक)	36	45%
7.	कृतिका (पाठ्य पुस्तक)	10	12.5%
	योग	**80**	**100**

प्रश्न–पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट

कक्षा –10 विषय :– हिन्दी पूर्णांक –80

क्र. सं.	उद्देश्य इकाई/उप इकाई	ज्ञान					अवबोध					ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति					कौशल/मौलिकता					योग
		वस्तुनिष्ठ	अति.लघु	लघु उत्तरात्मक	दीर्घउत्तरीय	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ	अति.लघु	लघु उत्तरात्मक	दीर्घउत्तरीय	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ	अति.लघु	लघु उत्तरात्मक	दीर्घउत्तरीय	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ	अति.लघु	लघु उत्तरात्मक	दीर्घउत्तरीय	निबन्धात्मक	
1.	अपठित	6(6)			-		2(2)			-							2(2)					10(10)
2	निबंध				-					-	1(-)					1(-)					2(1)	4(1)
3	पत्र				-					-	1(-)					1(-)					2(1)	4(1)
4	विज्ञापन				-					-	1(-)					1(-)					2(1)	4(1)
5	व्या0 व्याकरण एवं रचना	6(6)	1(1)		-			2(2)		-				2(1)				1(1)				12(11)
6	क्षितिज		2(2)		-			1(1)	3(-)	-	2(-)		3(3)	11(7)		8(4)	-	-	4(2)		2(-)	36(19)
7	कृतिका	1(1)			-	1(1)	2(2)	4(2)		-				2(1)								10(7)
	योग	**13(13)**	**3(3)**		**-**	**1(1)**	**4(4)**	**7(5)**	**3(-)**	**-**	**5(-)**		**3(3)**	**15(9)**		**11(4)**	**2(2)**	**1(1)**	**4(2)**		**8(3)**	**80(50)**
			17 (17)				**19(9)**						**29(16)**				**15(8)**					

विकल्पों की योजना :– प्र.सं. 17, 18, 19, 20 21, 22, 23 में एक आंतरिक विकल्प है। नोटः– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंकों की तथा भीतर प्रश्नों की द्योतक है।

प्र0 1 में 1–12 समाहित है।
प्र0 2 में 1 से 6 समाहित है।
प्र0 3 में 1–12 समाहित है।

हस्ताक्षर

हिन्दी अनिवार्य

कक्षा -10

पद्य-खण्ड (क्षितिज)

सूरदास

जन्म - सन् 1478

जन्म स्थान- एकमत के अनुसार मथुरा के निकट रूनकता/रेणु का, दूसरे मत के अनुसार - दिल्ली के पास सीही

गुरू - वल्लभाचार्य

☞ विट्ठलनाथ (गुरुपुत्र) द्वारा स्थापित अष्टछाप के सर्वप्रिय कवि

निवास - मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट

☞ श्रीनाथजी के मंदिर में भजन कीर्तन - प्रसिद्ध ग्रंथ या

रचनाएँ - सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर-सारावली।

प्रिय रस - वात्सल्य और श्रृंगार रस के साथ भक्ति वात्सल्य के सम्राट

भाषा- ब्रज

निधन - सन् 1583 पारसौली में

☞ प्रारम्भ में दास्य तत्पश्चात् सख्य भाव की भक्ति।

1. 'उधौ, तुम हौ अति बड़भागी' गोपियों ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर क्योंकि ऊधो प्रेम-बंधन से सर्वथा उसी प्रकार मुक्त रहे हैं जिस प्रकार कमल जल में रहकर भी जल से प्रभावित नहीं होता उद्धव के प्रेमहीन होने पर व्यग्यात्मक रुप में गोपियों ने उसे भाग्यशाली कहा है।

2. 'ज्यों जल माँह तेल की गागरि' - पंक्ति में निहित अलंकार बताइए ?

उत्तर उदाहरण अलंकार।

3. प्रीत रूपी नदी में गोपियों के अनुसार पाँव किसने नहीं डूबोये?

उत्तर उद्धव ने

4. गोपियों ने अपने भोलेपन को कैसे व्यक्त किया ?

उत्तर जिस प्रकार चींटी गुड़ में ही चिपक कर प्राण दे देती हैं, उसी प्रकार कृष्ण प्रेम में वे भी अनुरक्त होकर अपने प्राण त्याग देंगी परन्तु किसी योग जैसे अन्य का वरण नहीं करेंगी।

5. गोपियों की क्या अभिलाषा मन में ही रह गई ?

उत्तर श्रीकृष्ण मिलन की आशा अधूरी रह गई।

6. **'अवधि अधार आस आवन की.....'- पंक्ति में निहित अलंकार का नाम व पहचान बताइए।**

उत्तर अनुप्रास अलंकार- एक जैसे वर्ण की आवृत्ति का एक से अधिक बार आना 'अ' वर्ण की अधिकता से अनुप्रास है।

7. 'अब इन जोग संदेसनि.....' पंक्ति पूर्ण करे।

उत्तर 'अब इन जोग संदेसनि सुनि-सुनि, विरहिनि बिरह दही।'

8. गोपियों की सूर के अनुसार अश्रुधारा कहा तक बहने लगी।

उत्तर जहाँ कहीं भी वे अपने विरह दु:ख की पुकार करने लगती, वहीं से उनका दुख सुनकर हर किसी के मन में दुख होता और आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती।

9. गोपियों ने अपने कृष्ण-प्रेम को किसके समान बताया है?

उत्तर हारिल पक्षी की लकड़ी के समान

10 कृष्ण प्रेम रूपी हारिल की लकड़ी को गोपियों ने कैसे पकड़ा हुआ है?

उत्तर जिस प्रकार हारिल पक्षी रात-दिन अपने पंजों में लकड़ी के टुकडों को थामे रहता है उसी प्रकार गोपियाँ भी मन-क्रम और वचनों से दृढ़ निश्चय करके कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम को अपने मन में बसाए रखती है।

11. सोते-जागते गोपियाँ क्या करती रहती है?

उत्तर कन्हैया - कन्हैया की रट लगाए रहती है।

12. योग को गोपियों ने किसकी उपमा दी है?

उत्तर कड़वी ककड़ी की।

13. गोपियो द्वारा क्या नहीं देखा और सुना हुआ था?

उत्तर योग रूपी व्याधि (रोग) के बारे में ।

14. गोपियों ने ऊधौं को योग संदेश किसे देने की सलाह दी?

उत्तर जिनका मन अस्थिर, चंचल होकर चकरी की तरह भटकता है।

15. 'भ्रमरगीत ' के रचनाकार कौन है?

उत्तर सूरदास

16. मधुकर किसे कहा गया है ?

उत्तर गोपियों द्वारा उद्धव को ।

17. उद्धव को योग संदेश के लिए किसने भेजा ?

उत्तर श्रीकृष्ण ने।

18. सूर की गोपियों के अनुसार एक योग्य -सच्चे पुरुष का राजधर्म क्या कहता है?

उत्तर- जो राजा प्रजा को बिलकुल न सताये, अन्याय से बचाए, दु:ख-वेदना से उनकी रक्षा करें।

19. गोपियों के अनुसार श्रीकृष्ण ने क्या पढ़ लिया?

उत्तर- राजनीति।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

20. 'मरजादा न लही' में किस मर्यादा के विषय में कहा गया है?

उत्तर- परस्पर विश्वास और पूर्ण समर्पण प्रेम की मर्यादा है। छल, कपट, चतुराई और दु:ख, प्रेम की मर्यादा को भंग कर देते है। श्रीकृष्ण ने भी वचन तोड़ने के साथ योग-संदेश भिजवा कर गोपियों के विश्वास को भंग किया। उक्त पंक्ति के माध्यम से इसी प्रेम मर्यादा के नष्ट होने की बात कही गई हैं। जबकि गोपियों ने वंश, परिवार की मर्यादा कृष्ण के लिए त्याग दी।

निबंधात्मक प्रश्न

21. सूर की गोपियों के वाक चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर सूरदास के भ्रमरगीत से संकलित पदों में गोपियों के उद्धव के साथ जो संवाद हुए है, उनमें गोपियों ने अपनी सरल व भावपूर्ण प्रेम भक्ति की अभिव्यक्ति से उद्धव के ज्ञान योग को तुच्छ सिद्ध कर दिया। उद्धव को अपने निर्गुण योग पर बड़ा अभिमान था। गोपियाँ अपने हृदय की वेदना प्रकट करती हुई सगुण प्रेम का महत्व प्रकट करती है और उद्धव जैसे ज्ञानी और योगी को निरूत्तर कर देती है। योग साधना को कड़वी ककड़ी और व्याधि कहना तथा व्यंग्य में उद्धव को बड़भागी और कृष्ण को राजनीति शास्त्र का ज्ञाता कहना गोपियों के वाकचातुर्य को स्पष्ट करता है। गोपियों के तर्कों और शंकाओं का कोई समाधान उद्धव के पास नहीं होता। इससे गोपियों के एकनिष्ट प्रेम के सामने उद्धव का सारा ज्ञान व नीतिज्ञता असहाय हो जाती हैं।

सप्रसंग व्याख्या

22. हरी हैं राजनीति पढ़ि आए।

समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार अब पाए ।

इक अति चतुर हुते पहिलै ही, अब गुरु ग्रंथ पढाए।

बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-संदेस पठाए।

ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।

अब अपने मन फेर पाइ हैं, चलत ज हुते चुराए।

ते क्यों अनीति करे आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।

राज धरम तो यह 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।''

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज' में संकलित, महाकवि कृष्णभक्त 'सूरदास' की रचना 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' प्रसंग से अवतरित है। इस पद में गोपियाँ उद्धव को व्यंग्य द्वारा उपालम्भ देती है की श्रीकृष्ण के प्रेम के बदले राजनीति सीख ली है और उसका प्रयोग योग संदेश देकर कर रहे है।

व्याख्या - गोपियाँ कहती है कि हे उद्धव ! हमें लगता है कि श्रीकृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। उनके व्यवहार में 'राजनीतिज्ञों' जैसा छल-कपट झलक रहा है। तुम्हारी बातें सुनकर श्रीकृष्ण की सच्चाई, उनकी वास्तविकता का सारा समाचार हमें पता चल गया। एक तो श्रीकृष्ण पहले ही बहुत चतुर थे और अब तो गुरू से उन्होंने राजनीति भी पढ़ ली है। वह कितने बुद्धिमान हो गए हैं कि हम प्रेम की उपासिकाओं के लिए योग संदेश भिजवा रहे है। हे ! उद्धव , पुराने समय के लोग तो दूसरों की भलाई के लिए दौड़े चले आते थे। और यहाँ आप हमारा अहित करने के लिए मथुरा से आए है। और कुछ नहीं तो आप हम पर इतना-सा उपकार ही कर दो कि श्रीकृष्ण जाते समय हमारा जो मन चुराकर ले गए थे, वह हमें वापस करा दो। ये श्रीकृष्ण किस तरह के राजा है? जो सदा दूसरों को अनीति और अन्याय से बचाते है आज वो हमारे साथ अन्याय कर रहे है। एक राजा का राजधर्म तो यही होता है कि उसकी प्रजा को सताया न जाए । परन्तु यहाँ श्रीकृष्ण ने तो स्वयं ही हमें सताने के लिए तुम्हें योग संदेश देने के लिए भेज दिया। अत: अब आप यहाँ से प्रस्थान कर हमें इस विरह-व्यथा से मुक्त कराने हेतु अपने मित्र को समझाइए।

विशेष - 1. इस पद में गोपियों द्वारा राजधर्म को स्पष्ट किया गया है।

2. भाषा ब्रज भाषा है एवं भावों की सरल अभिव्यक्ति

3. रूपक अलंकार, वियोग श्रृंगार रस व उपालम्भ का श्रेष्ट उदाहरण प्रस्तुत करने वाली पंक्ति।

तुलसीदास

जन्म- 1532 ई

जन्म स्थान - राजापुर-गाँव बाँदा-जिला, उत्तर प्रदेश

☞ कुछ विद्वानों के अनुसार सुकर या सोरो क्षेत्र, जिला एटा

गुरू- नरहरिदास/नरहर्यानदं

माता-पिता- हुलसी-आत्माराम दुबे

पालन-पोषण- दासी चुनिया/मुनिया

जन्म समय- अभुक्त मूल नक्षत्र

बचपन का नाम - रामबोला,

पत्नी- रत्नावली

भाषा- अवधी, ब्रज

☞ सगुण मार्गी रामभक्त कवि, दास्य भाव की भक्ति।

प्रमुख रचनाएँ - रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्ण गीता वली, विनयपत्रिका, हनुमान-बाहुक , रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल आदि ।

परलोक गमन - सं.-1623 / वि.सं. 1680

☞ इसके संबंध में एक उक्ति प्रसिद्ध है-

'संवत सौलह सो असी, असी गंग के तीर

श्रावण शुक्ल सप्तमी तुलसी तज्यौ शरीर।'

1. पाठ्यक्रम में संकलित 'राम-लक्षण-परशुराम संवाद' किस रचना का अंश है?

उत्तर रामचरितमानस के बालकांड का।

2. राम-लक्ष्मण - परशुराम संवाद किस समय का है?

उत्तर जनकपुरी में सीता स्वयंवर मंच के समय का

3. शिवधनुष के टूटने पर कौन क्रोधित हुआ?

उत्तर परशुराम।

4. शिवधनुष किसने तोड़ा?

उत्तर प्रभु श्रीराम ने।

5. 'अरिकरनी करि करिअ लराई' - कथन किसने किससे कहा?

उत्तर परशुराम ने प्रभु श्रीराम से कहा।

6. धनुष को तोड़ने वाला किसके समान परशुराम का शत्रु होगा ?

उत्तर सहस्रबाहु के समान ।

7. भृगुकुलकेतु की उपमा किसे दी गयी है?

उत्तर परशु राम को।

8. रे नृपबालक ..... पंक्ति पूर्ण करें

उत्तर रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न संभार,

धनुहीं सम त्रिपुरारिधनु विदित सकल संसार।

9. लक्ष्मण के अनुसार धनुष कैसे टूटा?

उत्तर श्रीराम के छूने मात्र से।

10. परशुराम जी ने स्वयं का परिचय किन शब्दों में दिया?

उत्तर क्रोधित बाल-ब्रह्मचारी, क्षत्रिय कुल द्रोही, पृथ्वी को क्षत्रियों से विहिन करने वाला, सहस्त्रबाहु को परास्त करने वाले शाक्तिशाली व्यक्ति जैसे शब्दों द्वारा स्वयं का परिचय दिया।

11. कुम्हड़बतिया शब्द से क्या अभिप्राय है?

उत्तर बेहद कोमल फूल जो जरा सा छूते ही मुरझा जाता है। यहाँ कुम्हड़बतिया से अभिप्राय कमजोर, निर्बल व्यक्ति से है।

12. लक्ष्मण के अनुसार रघुवंशी किन पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करता ?

उत्तर देवता, ब्राह्मण, भक्तजन और गाय पर।

13. 'कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा' पंक्ति में निहित अलंकार है?

उत्तर उपमा अलंकार (सा, सी, सम, सरिस, सदृश)

14. विश्वामित्र जी के लिए किन पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख हुआ है?

उत्तर कौसिक और गाधिसूनु शब्दों का।

15. 'अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी'- कथन किसने, किससे कहा?

उत्तर लक्ष्मण ने परशुराम जी से कहा।

16. लक्ष्मण के कटुवचनों की परशुरामजी पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर परशुराम जी ने गुस्से में अपने फरसे को उठाया और लड़ने को उद्धत हुये।

17. 'कटुवादी बालकु बधजोगू' वध के योग्य किसे बताया गया है?

उत्तर लक्ष्मण को।

18. युद्ध हेतु तैयार परशुराम किससे क्षमा माँगते है?

उत्तर कौसिक (विश्वामित्र जी) से।

19. अपने कठोर फरसे का लक्ष्मण पर वार करने से परशुराम जी ने स्वयं को किस कारण रोक रखा था?

उत्तर विश्वामित्र जी के सील (आचरण-व्यवहार) के कारण ।

20. गुरूऋण से कौन मुक्त होना चाहता था?

उत्तर- परशुरामजी।

21. सभा में 'हाहाकार' क्यों मच गया?

उत्तर- लक्ष्मण के कटुवचनों से परशुराम के बढ़ते क्रोध के कारण कुछ अनहोनी घटने की आशंका के कारण

22. परशुराम की क्रोधाग्नि को शांत करने के लिए कौन बोले?

उत्तर- क्रोधाग्नि को शांत करने के लिए शीतल जल समान वाणी में श्रीराम बोलते है और ब्राहण का क्रोध शांत करते है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

23. 'गर्भन्ह के अर्भक दलन-पंक्ति के माध्यम से परशुराम जी किसकी क्या विशेषता बताना चाहते है?

उत्तर परशुराम जी कहते है कि- मेरा यह भयंकर फरसा गर्भ में स्थित बच्चों को भी नष्ट कर देता है। मेरे फरसे से भयभीत क्षत्राणियों के गर्भ गिर जाते है।

24. परशुराम जी ने किन शब्दों में लक्ष्मण को फटकार लगाई ?

उत्तर परशुराम जी ने कहा क्रि तुम अपने काल के वश होकर ये सब बोल रहे हो, तुम रघुवंश को कलंकित करने वाले चंद्र हो। तुम बिना किसी अंकुश के ये सब बातें कह रहे हो, पर मैं सत्य कहता हूँ तुम क्षण भर में ही कालक व पलित हो जाओगे। यदि तुमने खुद पर नियंत्रण नहीं रखा तो शीघ्र ही प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।

25. कुशल वीर पुरुष की लक्ष्मण ने क्या पहचान बताई है?

उत्तर लक्ष्मण ने कहा कि शूरवीर शत्रु को रणभूमि में सामने देखकर अपने पराक्रम का परिचय दिया करते हैं, वे धैर्य नहीं खोते और मुँह से अपशब्द नहीं निकालते, अपने पराक्रम का वर्णन वे स्वयं कभी नहीं करते।

26. 'गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।

अयमय खाँड ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ।।

परशुराम की अहंकार युक्त बातें सुनकर विश्वामित्र मन ही मन हँसे और सोचने लगे कि मुनिजी को हरा ही हरा दिखाई दे रहा है। राम और लक्ष्मण को भी साधारण क्षत्रिय कुमार समझकर इन्हें परास्त करने का सपना देख रहे हैं। इन्हें पता नहीं कि ये दोनों कोई गन्ने से बनी खाँड़ नहीं हैं, जिन्हें वे सहज ही निगल जाएँगे। ये तो लोहे के चने है जिन्हें चबाना कोई खेल नहीं

27. लक्ष्मण ने परशुरामजी के अब तक बचे रहने का क्या कारण बताया?

उत्तर एक ब्राह्मण समझ कर अब तक नृपद्रोही भृगुवर को छोड़ रखा था और अब तक परशुराम जी किसी कुशल, योग्य यौद्धा से नहीं भिड़े हो, अपने घर में ही देवता बने बैठे हो, इस कारण कारण से अब तक बचे हुए है।

28. 'लखन उत्तर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु' - पंक्ति का अर्थ बताकर निहित अलंकार की पहचान कीजिए।

उत्तर **अर्थ**- लक्ष्मण को परशुराम की बातों में दिये गये प्रत्युत्तर भृगुबर (परशुराम) के क्रोध रूपी अग्नि को भड़काने में आने का काम कर रहे थे ।

निबंधात्मक

29. राम-लक्ष्मण - परशुराम संवाद को संक्षिप्त मे समझाइए ?

उत्तर यह अंश 'रामचरित मानस' के 'बालकांड' से लिया गया है। सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव-धनुष भंग के बाद मुनि परशुराम को जब यह समाचार मिला तो वे क्रोधित होकर वहाँ आते है। शिव-धनुष को खंडित देखकर वे आपे से बाहर हो जाते है। राम के विनय और विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंतत: उनका गुस्सा शांत होता है। इस बीच राम लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ उस प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। परशुराम के क्रोध भरे वाक्यों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य वचनों से देते हैं। इस प्रसंग की विशेषता है लक्ष्मण की वीर रस से सजी व्यंग्योक्तियाँ और व्यंजना शैली की सरस अभिव्यक्ति।

सप्रसंग व्याख्या

30 बिहसि लखन बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महाभट मानी ।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू ।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं।। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।
देखि कुठारु सरासन बना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेऊ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी ॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ॥
बधें पापु अपकीरति हारे। मारतहू पा परिअ तुम्हारे।।
कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा। व्यर्थ धरटु धनु बान कुठारा।।
जो विलोकि अनुचित कहेऊँ, छमहु महामुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुवंश मनि, बोले गिरा गंभीर ।।

सन्दर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' भाग-2 में संकलित, कविवर तुलसीदास की प्रसिद्ध रचना 'रामचरितमानस' के 'बालकाण्ड' से अवतरित है। इस अंश में शिव धनुष टूटने से नाराज हुए परशुरामजी के कटु वचनों का लक्ष्मण व्यंग्य वचनों द्वारा प्रत्युत्तर दे रहे हैं।

व्याख्या - लक्ष्मण जी मुस्कुराते हुए मधुर वाणी में परशुराम पर व्यंग्य कसते हुए कहते हैं कि हे मुनि! आपको तो निश्चय ही महान योद्धा माना जायेगा। आप तो निश्चय ही महान योद्धा है। आप मुझे बार-बार अपना फरसा दिखाकर जो डराने का प्रयास कर रहे है उससे तो लगता है कि मानो आप फूँक से ही पहाड़ उड़ा देना चाहते हैं। लेकिन यहाँ कोई छुईमुई का पौधा नहीं है जो आपकी तर्जनी उँगली को देखकर सिकुड़ जाएँगे। अत: यहाँ कोई भी आपकी गर्जना, आपकी फूफकार से नहीं डरेगा। मैनें आपके हाथ में कुठार और कंधे पर धनुष-बाण देखकर ही कुछ अभिमानपूर्वक कहा है। सोचा कि सामने कोई सचमुच योद्धा है। आपको भृगुपुत्र समझकर और यज्ञोपवीत देखकर अर्थात ब्राह्मण जानकर आपके द्वारा कही गई उचित - अनुचित बातो को 'अपना क्रोध रोक कर सुन रहा हूँ। क्योंकि देवता, ब्राह्मण, भक्तजन और गाय पर हमारे कुल में शार्य प्रदर्शित नहीं किया जाता। आप ब्राह्मण हैं, यदि मुझसे आपका वध हो जाए तो मुझे ही पाप लगेगा और यदि आप से हार जाऊँ तो अपयश मिलेगा। इसलिए यदि आप मुझे मार भी दें तो भी मुझे आपके पैरों में ही पड़ना होगा।

हे परशुरामजी। आपके वचन ही करोड़ो वज्र के समान कठोर है फिर तो आपने ये धनुष-बाण व्यर्थ में ही धारण किया हुआ है। इसलिए इनको देखकर मैंने कुछ अनुचित किया या कह दिया है तो धैर्यवान! महामुनि मुझे क्षमा करना। लक्ष्मण के ये व्यंग्य वचन सुनकर भृगुवंशमणि परशुराम क्रोध सहित गंभीर बोली में बोले।

विशेष - परशुराम के क्रोध के प्रति लक्ष्मण द्वारा रघुकुल की प्रशंसा एवं लक्ष्मण के स्वभाव की उग्रता दिखाई गई है।

1. भाषा ओजमयी, प्रवाहपूर्ण एवं अंलकारों से सज्जित है।

2. अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।

3. उत्प्रेक्षा एवं रूपक अलंकार है।

31. कहेउ लखन मुनिसील तुम्हारा। को नहिं जानत विदित संसारा ।

माता पितहिं उरिन भये नीकें। गुर रिनु रहा सोचु बड़ जी कें।।

सो जनु हमरेहिं माथे काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़े बाढ़ा ।

अब आनिअ व्यवहरिआ बोली। तुरंत देउँ मैं थैली खोली ।।

सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय-हाय सब सभा पुकारा ।।

भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र विचारि बचौं नृपद्रोही।

मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता धरहि के बाढे ।।

अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे ॥

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु ।

बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ।।

संदर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' नामक महाकाव्य के बालकाण्ड से लिया गया है। इस प्रसंग में लक्ष्मण परशुराम के बड़बोलेपन पर व्यग्य करके उनके क्रोध को और बढ़ा देते है। लक्ष्मण की वाचालता और कठोर वचनों को लोग अनुचित बता रहे है। राम लक्ष्मण को संकेत से चुप होने को कह रहे हैं।

व्याख्या - लक्ष्मण परशुराम पर व्यंग्य करते हुए कहते है कि आप कितने शील स्वभाव वाले है यह बात सारा संसार जानता है। माता पिता के ऋण से तो आप अच्छी तरह मुक्त हो ही गए हैं। अब गुरु का ऋण रह - जाने की आपके मन में बड़ी चिंता है। आपने इस ऋण को हमारे माथे मढ़ दिया है। दिन भी बहुत हो गए है तो अब उस ऋण का ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। अब आप किसी हिसाब लगाने वाले को बुला लिजिए। आपका जितना ऋण होगा, मैं तुरंत थैली निकालकर चुका दूँगा। लक्ष्मण के इन कटु व्यंग्य वचनों को सुनकर परशुराम ने अपना फरसा संभाल लिया, यह देखकर सारी सभा हाहाकार करने लगी। इस पर भी लक्ष्मण चुप नहीं हुए और बोले- हे भृगुश्रेष्ठ ! मैंने यह फरसा बहुत देखा है। मैं इससे नहीं डरता हूँ। हे क्षत्रियों के शत्रु ! आप ब्राह्मण हो। आपका युद्ध में अच्छे योद्धाओं से पाला नहीं पड़ा। हे ब्राह्मण देवता! आप घर के ही वीर बने हुए हो। लक्ष्मण को इस प्रकार अनुचित वचन बोलते देख सभी लोग उनके व्यवहार की निंदा करने लगे, तब राम ने संकेत से लक्ष्मण को बोलने से मना किया।

परशुराम की क्रोधरूपी अग्नि को लक्ष्मण के व्यग्य वचन आहुति के समान भड़का रहे थे। तब क्रोधाग्नि को बढ़ते देख राम जल के समान शीतल वचन बोलकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास करते हैं।

विशेष-

1. परशुराम की आत्मप्रशंसा और बड़बोलेपन का उत्तर लक्ष्मण अपने पैने व्यंग्य वचनों से दे रहे हैं।
2. साहित्यिक अवधी भाषा का पात्रानुकूल प्रयोग हुआ है।
3. दोहा तथा चौपाई छंद है
4. वीर और रौद्र रस का सुंदर प्रयोग हुआ है।
5. माता पितहिं उरिन नीके! पंक्ति में वक्रोक्ति अलंकार है।इसके अलावा उक्त पद्यांश में अनुप्रास, रूपक उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का भी समावेश हुआ।

देव

जन्म - 1673 ई में

जन्म स्थान- इटावा, उत्तर प्रदेश

पूरा नाम- देवदत्त द्विवेदी

- ☞ अनेक आश्रयदाताओं के दरबारी कवि
- ☞ आश्रयदाता भोगीलाल से सर्वाधिक संतोष और सम्मान प्राप्त हुआ।

काव्य ग्रंथ- 52 से 72 तक संख्या में।

रसविलास, भावविलास, काव्य रसायन, भवानी विलास।

- ☞ ऋतिकाल के रीतिबद्ध कवि
- ☞ अभिधा शब्द शक्ति को सभी शब्द -शक्तियों में उत्तम माना।
- ☞ आलंकारिकता और श्रृंगारिकता काव्य की प्रमुख विशेषता।

मृत्यु सन् - 1767 में।

अतिलघूतरात्मक प्रश्न

1. पाठ्यक्रम में संकलित देव के पद किस छंद में है?

उत्तर कवित - सवैया में।

2. 'जै जग- मंदिर - दीपक सुंदर' पंक्ति में आये अलंकारों का परिचय दीजिए।

उत्तर 'जे जग' में 'ज' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास और पूरी पंक्ति मे (जग-मंदिर- (दीपक में) रूपक अलंकार है।

3. ब्रजदूलह किसे कहा है?

उत्तर श्रीकृष्ण को।

4.. कवि देव ने पाठ्यक्रम में संकलित पद मे श्रीकृष्ण के कौनसे रूप का वर्णन किया है?

उत्तर राजसी रूप सौंदर्य का।

5. 'डार द्रुम पलना बिछौना नय पल्लव के सुमन झिंगला सोहै तप छवि भारी दे।'
पंक्ति में किसका वर्णन किया गया है?

उत्तर पंक्ति में बसंत ऋतु का वर्णन है।

6. बसंत को किस रूप मे दिखाया गया है?

उत्तर बालक के रूप में ।

7. 'केकी-कीर'- शब्दों के अर्थ है?

उत्तर मोर-तोता।

8. बसंत का पलना कौन है?

उत्तर- वृक्षों की डालियाँ।

बसंत का बिछौना - नये पत्ते

कौनसा वस्त्र धारण किया - पुष्प रूपी झिंगोला

बसंत को झुलाने वाला कौन - पवन झुला झुलाता है।

9. 'केकी-कीर और कोयल' क्या कहते है?

उत्तर मधुर-प्यारी बाते व लोरी सुनाकर हिलाते हुए ताली बजाकर हँसाते है।

10. 'डार द्रुम.....' पद में किस मुहावरे का प्रयोग हुआ है?

उत्तर राई नोन करना- मुहावरे का। जिसका अर्थ-नजर उत्तारना होता है।

11. कवि ने किसकी राई नोन करने की ओर संकेत किया है?

उत्तर बसंत रूपी बालक की।

12. किसके बालक के रूप में बसंत की कल्पना की गई?

उत्तर राजा कामदेव के बालक के रूप में ।

13. चटकारियाँ देकर कौन जगाता है?

उत्तर गुलाब ।

14. कवि देव ने पूर्णिमा के चंद्रमा की आभा के लिए किस बिंब का प्रयोग किया है?

उत्तर कवि ने चंद्रमा के लिए दूध में निकलते फेन जैसे बिंब का प्रयोग किया है।

15. 'तारा सी तरुनि तामें - अलंकार बताइए ।

उत्तर 'त' वर्ण-अनुप्रास।

'सी' वाचक शब्द के कारण उपमा।

लघूतरात्मक प्रश्न

16. कवि देव द्वारा श्रीकृष्ण का रूप वर्णन किस प्रकार किया गया है?

उत्तर पैरों में सुंदर नूपुर, कमर पर करधानि, श्याम सलौने शरीर पर पीले वस्त्र, हृदय पर वनमाला, मस्तष्क पर मुकुट, बड़े-बड़े चंचल नेत्र, मंद-मंद मुस्कान, मुख पर चंद्रमा सी चमक, जगतरूपी मंदिर में प्रकाशित दीपक के समान श्रीकृष्ण पूरे संसार भर में देवता के समान या देवमूर्ति के रूप मे विराजमान है।

17. 'फटिक सिलानि सौं सुधारयौ सुधा मंदिर,
उदधि दधि को सो अधिकार उमगे अमंद' पंक्तियों में किसका वर्णन हुआ है? एवं इन पंक्तियों में कौन से अलंकार है?

उत्तर उक्त पंक्तियों में पूर्णिमा की रात में चाँद - तारों से भरे आकाश की आभा का वर्णन है।

इसमें अलंकार है - उपमा (सौं)

सिलानि सौ सुधारयौं सुधा - में (अनुप्रास), सुधा मंदिर -(रूपक) उदधि दधि (सभंग यमक)

18. शीतल पूर्णिमा के चंद्र की आभा को किन-किन रूपों में बताया गया है?

उत्तर स्फटिक सिला, अमृतरूपी समुद्र में दहि दूध का फेन, तारों रूपी किशोरियों से युक्त मोतियों की ज्योति से प्रकाशित मकरंद से मिलता हुआ, अंबर पर दर्पण के समान प्रकाश बिखेरता, प्यारी सी राधिका के प्रतिबिम्ब के रूप में चन्द्रमा का वर्णन हुआ है।

निबंधात्मक प्रश्न

19. कवि देव के कवित - सवैयों की विशेषता व सारांश लिखिए।

उत्तर रीतिकालीन आचार्य के रूप में कवि देव प्रसिद्ध है। इस काल की सभी प्रमुख विशेषताएँ इनके काव्य में दिखाई पड़ती है। इनके निम्न मुख्य बिंदु है- श्रृंगारिकता, भक्ति एवं प्रकृति -चित्रण। कवि देव ने कृष्ण के माध्यम से अपनी भक्ति -भावना एवं श्रृंगारिक भावनाएँ प्रकट की है। कृष्ण का राजसी सौन्दर्य उनके प्रति अनन्य प्रेम-भक्ति को प्रकट करता है। प्रकृति चित्रण की दृष्टि से देव ने वसंत ऋतु का भाव पूर्ण चित्रण किया है। इन्होंने वसंत का वर्णन कामदेव के बालक के रूप में किया है। रीतिकालीन अन्य कवियों की भाँति उनकी प्रवृति भी संयोग श्रृंगार में अधिक रमी है। राधा की रूप माधुरी ने चाँदनी रात मे ऐसा रूप निखारा है जिसके सामने राधा के मुख का प्रतिबिम्ब चन्द्रमा लगता है। देव ने काव्य में सफल अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए अभिधा शब्द शक्ति का सरल प्रयोग किया है। माधुर्य, प्रसाद गुणों का प्रयोग तथा अलंकारों की अनुपम छटा बिखेरी हैं। भाषा की कोमलकांत पदावली का सुन्दर, सार्थक प्रयोग तथा काव्य में तत्सम शब्दावली का अधिक प्रयोग हुआ है।

सप्रसंग व्याख्या-

'डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छवि भारी दै।
पवन झूलावे, केकी-कीर बतरावै देव'
कोकिल हलावे - हुलसावै कर तारी दै।
पूरित पराग सो उतारो करै राई नोन,

कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।

मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,

प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दैं।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत कवित्त छंद हमारी पाठयपुस्तक क्षितिज में संकलित कवि देव के छन्दों से लिया गया है। इस छंद में कवि ने वसंत ऋतु को राजा कामदेव के शिशु के रूप में प्रस्तुत किया है।

व्याख्या - कवि कहता है कि यह वसंत राजा कामदेव का सुंदर बालक है। वृक्षों की हिलती डालियाँ उसे झुलाने का पालना है। वृक्षों के नवीन कोमल पत्ते ही इसका बिछौना है। इसके शरीर पर अनेक प्रकार के पुष्पों का झबला अत्यंत शोभा दे रहा है। पवन इसे पालने में झुला रही है। मोर और तोते इससे मधुर स्वर में बाते कर रहे हैं। कोयल ताली बजाकर इसे हिलाती और प्रसन्न करती है। कमल की कलियाँ लताओं रूपी साड़ियाँ सिर पर ओढ़े हुए अपने पराग रूपी राई - नमक से इसकी नजर उतार रही हैं। इस शिशु को प्रातः काल गुलाब चुटकी बजा-बजाकर जगाता है

विशेष -1. संपूर्ण पद में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है।

2. बसंत को कामदेव का पुत्र बताकर व्यंजना का प्रयोग हुआ है।

3. शृंगार रस, ब्रजभाषा का प्रयोग, कवित छंद एवं रूपक, अनुप्रास तथा मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ हैं

4. 'राई-नोन करना' प्रसिद्ध मुहावरे का रोचक प्रयोग किया गया। पद में माधुर्य गुण का प्रयोग लक्षित है।

जयशंकर प्रसाद

जन्म - सन् 1889

स्थान- वाराणसी में

अध्ययन- क्वींस कॉलेज काशी में आठवी तक।

भाषा ज्ञान - संस्कृत, हिन्दी, फारसी।

☞ छायावाद के प्रवर्तक कवि, छायावाद के ब्रह्मा,

काव्य रचनाएँ- चित्राधार, कानन-कुसुम, झरना, आँसू, लहर और कामायनी।

नाटक - अजातशत्रु, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त और ध्रुवस्वामिनी।

उपन्यास- कंकाल, तितली और इरावती।

कहानी संग्रह - आकाशदीप, आँधी और इंद्रजाल ।

पुरस्कार- मंगला प्रसाद पारितोषिक (कामायनी)।

काव्यगत विशेषताएं - कोमलता, माधुर्य, शक्ति, ओज, अतिशय काल्पनिकता, सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति - प्रेम देश प्रेम और शैली की लाक्षणिकता - इतिहास और दर्शन में रुचि।

मृत्यु - सन् 1937

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

1. 'आत्मकथ्य के रचनाकार कौन है?

उत्तर जयशंकर प्रसाद

2. आत्मकथ्य रचना का प्रकाशन कब और किस रूप में हुआ?

उत्तर 1932 ई.स. में 'हंस' पत्रिका के 'आत्मकथा' विशेषांक में।

3. 'आत्मकथ्य' रचना किस भाषा में है?

उत्तर खड़ी बोली हिंदी में।

4. प्रसादजी के अनुसार अपना व्यंग्य - मलिन उपहास कौन करवाता है?

उत्तर जो अपनी आत्मकथा लिखते है वे अपन उपहास करवाते है।

5. आत्मकथा को कवि ने क्या कहकर संबोधित किया है?

उत्तर अपनी दुर्बलता कहकर संबोधित किया है।

6. कवि के जीवन रूपी गागर को किसने खाली किया है?

उतर कवि के प्रति ईष्यालू लोगों ने, कवि भी अपने जीवन को महत्वहीन मानते हैं।

7. कवि के मन में क्या विडंबना है?

उत्तर अपने जीवन की कहानी की हँसी उड़ाना, अपनी गलतियों या लोगों के छल-प्रपंच को दिखलाने की विडंबना।

8. 'उज्वल गाथा कैसे गाऊँ' कवि ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर अपने संघर्षमय अभावग्रस्त जीवन को बढ़ा-चढ़ाकर सरल हदय कवि कैसे व्यक्त करें और कवि की उज्वल गाथा प्रिया के साथ मधुर मिलन के क्षण थे। जिन पर उनका व्यक्तिगत अधिकार है।

9. कवि के आलिंगन में आते-आते कौन दूर भाग गया ?

उत्तर कवी के जीवन का सुख हर बार उनसे दूर जाता रहता है।

10. कवि के अनुसार किसकी स्मृति पथिक की पाथेय बनी है?

उत्तर सुख की स्मृतियाँ ही पथिक के पथ की पाथेय बनी है।

11. अपनी आत्मकथा के बारे मे कवि ने अंत में क्या निर्णय लिया?

उत्तर कवि ने निर्णय लिया कि छोटे से जीवन की कोई भी बड़ी उपलब्धि न होने के कारण अपने दु:ख, संघर्षो की व्यथा को न गाकर मैं मौन रहकर औरों की आत्मकथा सुनूँ।

12. अपनी व्यथा के बारे में कवि ने क्या कहा ?

उत्तर कवि जब तक अपने अतीत में झांक कर नहीं देखता है तब तक अपने दु:खों को भुलाए हुए है। अत- उनकी व्यथा थोड़ी देर सुषुप्तावस्था में मौन ही रहे, यही कवि चाहते है।

13. 'छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ ? -पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते है?

उत्तर कवि अपने जीवन को विशिष्ट न मानकर एकदम साधारण जन की भाँति संघर्षों से भरा मानते है। अत: इस साधारण जीवन में वे खुद के बारे में असाधारणता या बड़ा होने की बात कैसे कहे। उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त ही नहीं की तो किसी को इस कहानी से क्या प्रेरणा मिलेगी।

14. 'आत्मकथ्य' कविता में थका पथिक कौन है?

उत्तर थका पथिक स्वयं कवि जयशंकर प्रसाद जी ही है।

15. भोली और सरलते संबोधन 'आत्मकथ्य' कविता में किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर भोली - आत्मकथ्य के लिए प्रयुक्त हुआ है।

सरलते - कवि की हृदयगत सरलता के लिए

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

16. आत्मकथ्य रचना में किस भाव बोध का परिचय मिलता है ?

उत्तर छायावादी शैली में लिखी गई इस कविता में जयशंकर प्रसाद जी ने जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। जिसमें एक तरफ कवि द्वारा यथार्थ की स्वीकृति है तो दूसरी तरफ एक महान कवि की विनम्रता का परिचय मिलता है।

17. 'तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे - यह गागर रीती' पंक्ति में कौनसा भाव व्यक्त हुआ है ?

उत्तर व्यंग्य का भाव ।'गागर रीती' से अभिप्राय = जीवन में खालीपन रहना, कुछ बड़ी उपलब्धि का हासिल न होना।

18. 'सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की ?' कवि ने क्यों कहा?

उत्तर 'कंथा' का अर्थ गुदड़ी है जो निर्धनता का प्रतीक है। अपने जीवन की कहानी को परत दर परत खोलने पर भी सुख के नहीं बल्कि संघर्ष के दिन ही देखने को मिलेंगे। तो ऐसी कहानी का क्या गाऊँ ? अपने अतीत को पूरी तरह उधेड़ कर रखने से भी क्या फायदा?

निबंधात्मक प्रश्न

19. आत्मकथ्य कविता का मूलभाव व्यक्त कीजिए।

उत्तर 'आत्मकथ्य' रचना छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है। इसमें कवि अपने भावों को अभिव्यक्त करते हैं। अपने इस नश्वर जीवन संसार में कठिनाइयों और परेशानियों के अलावा ऐसी कोई उपलब्धि नहीं जो बताई जा सके। जिससे किसी को कोई प्रेरणा मिल सकें। फिर इस जीवन रूपी खाली गागर की क्या चर्चा कि जाए ? इससे कोई लाभ नही। अपनी प्रिया के साथ कुछ क्षण सुखद एहसास के जरूर आये पर वे भी लम्बे समय तक स्थायी नहीं रह सके। हर बार सुख उनके करीब आकर उन्हें चिढ़ा कर फिर से दूर हो जाता है। अपनी प्रिया के सौंदर्य से उसके गालों की लाली से उषा को भी ईष्या होती हुई दिखाते हैं। परन्तु अब इन सब से किसी का कोई भला नही हो सकता अत: कवि अंत मे अपनी व्यथा कथा के लिए मौन रहकर सिर्फ दूसरों की कहानियाँ सुनने का निर्णय लेते हैं।

सप्रसंग व्याख्या -

20. यह विडंबना ! अरी सरलते तेरी हंसी उड़ाऊँ मैं ।

भूलें अपनी या प्रबंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।

उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चांदनी रातों की।

अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश पाठ्यपुस्तक क्षितिज में एवं संकलित कवि जयशंकर प्रसाद की रचना 'आत्मकथ्य' से अवतरित है। इस अंश में कवि की हृदयगत सरलता प्रकट हुई है। कवि पूर्व स्मृतियों का स्मरण कर स्वयं को कष्ट नहीं देना चाहते हैं।

व्याख्या - कवि जीवन को संबोधित करते हुए कहते है कि मैं अपनी भूलों और ठगे जाने के विषय में बताकर अपनी सरलता की हँसी उड़ाना नहीं चाहता। मैं अपने प्रिय के साथ बिताए जीवन के मधुर क्षणों की कहानी किस बल पर सुनाऊँ वे खिल-खिलाकर हँसते हुए की गई बातें अब एक असफल प्रेमकथा बन चुकी हैं। उन भूली हुई मधुर - स्मृतियों को जगाकर मैं अपने मन को व्यथित करना नहीं चाहता ।

विशेष- 1. कवि जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों को व्यक्तिगत ही बनाये रखना चाहते है।

2. कवि की हृदयगत सरलता प्रकट हुई है।

3. खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग एवं प्रतीकात्मक छायावादी शैली दृष्टिगोचर है

4. अनुप्रास अलंकार एवं तत्सम शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

जन्म - सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में।

मूलतः- गढ़कोला (जिला-उन्नाव), उत्तर प्रदेश।

औपचारिक शिक्षा -कक्षा नवीं तक महिषादल में ।

भाषा ज्ञान - **संस्**कृत, बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी आदि।

- संगीत और दर्शनशास्त्र के भी अध्येता।

प्रभाव - रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की विचारधारा का ।

- परिजनों के लगातार काल कवलित होने से जीवन दुख और संघर्षो से भरा था।
- साहित्यिक क्षेत्र में भी निरंतर संघर्ष ।

काव्य रचनाएं - अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नए पत्ते ।

अन्य विधाएँ- उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध।

- 'वह तोड़ती पत्थर' एवं 'भिक्षुक' प्रसिद्ध कविता संग्रह।

प्रसिद्ध प्रासांगिक रचना- राम की शक्ति पूजा और तुलसीदास नये युग में प्रासांगिक रचना।

- पत्नी की स्मृति में 'जूही की कली' एवं पुत्री सरोज के असामयिक निधन पर उसकी स्मृति में 'सरोज स्मृति' रचना जो हिंदी का सर्वश्रेष्ठ शोकगीत माना गया।
- **संपूर्ण साहित्य** = निराला रचनावली के आठ खंडों में
- छायावाद के रूद्र या महेश।
- मुक्त छंद के प्रवर्तक जिसे आलोचकों ने 'खर छंद या 'केंचुआ छंद' कहकर पुकारा।
- शोषित (सर्वहारा) वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं शोषक (पूँजीपति) वर्ग के प्रति तीव्र आक्रोश का भाव।
- मतवाला के संपादन मण्डल में शामिल।
- काव्य की विशेषताएँ- दार्शनिकता, विद्रोह, क्रांति, प्रेम और प्रकृति का विराट और उदात चित्र।

मृत्यु - सन् 1961

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

1. 'उत्साह' रचना क्या है?

उत्तर एक आह्वान (आह्वान) गीत।

2. 'उत्साह' किस कवि की रचना है

उत्तर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की।

3. 'उत्साह' गीत में किसे संबोधित किया गया है?

उत्तर बादल को संबोधित किया गया है।

4. घेर-घेर घोर गगन, धाराधर ओ।

ललित ललित, काले घुंघराले,

बाल कल्पना के -से पाले में अलंकार बताइये ।

उत्तर 'घ' वर्ण की आवृति के कारण- अनुप्रास

'घेर -घेर', 'ललित-ललित' - पुनरुक्ति प्रकाश

कल्पना के से उपमा अलंकार निहित है।

5. बादलों को किसकी उपमा दी गई है?

उततर बच्चों की कल्पना की उपमा दी गई है ।

6. कवि ने बादल के माध्यम से जीवन को किस रूप में देखा है?

उत्तर कवि जीवन को व्यापक और समग्र दृष्टि से देखते है।

7. 'अट नहीं रही है' कविता का विषय क्या है?

उत्तर फागुन की मादकता को प्रकट करना ।

8. कवि के आँख हटाने पर भी क्या नहीं हटता ?

उत्तर फागुन की आभा नहीं हटती।

9. 'अट नहीं रहीं है' में निहित अलंकार बताइए ।

उत्तर 'घर-घर' 'पर-पर' 'पाट - पाट'- पुनरुक्ति प्रकाश शोभा - श्री रूपक अंकार एवं मानवीकरण अनुप्रसास भी दुष्टव्य है।

10. मंद गंध कहाँ से आ रही है?

उत्तर मंद-गंध पुष्प माला से आ रही है ।

11. बादल किसका प्रतीक है?

उत्तर बादल पौरुष और क्रांति का प्रतीक है

लघुत्तरात्मक प्रश्न

12. 'उत्साह' कविता में बादल की भूमिका के माध्यम से उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर कविता में बादल एक तरफ पीड़ित प्यासे जन की आकांक्षा को पूर्ण करने वाला है, तो दूसरी तरफ वही नई कल्पना व नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति चेतना को संभव बनाने वाला।

13. फागुन का क्या महत्व है?

उत्तर इसमें फागुन को रंग उड़ाता हुआ, सभी के तन-मन को, घर के कोने-कोने को आकाश छूने के लिए अपने पंखों को खोल देने वाले फागुन का चित्रण किया गया है ।

निबंधात्मक प्रश्न -

14. 'उत्साह' कविता में दिखाये गये बादल के क्रिया-कलाप का उल्लेख कीजिए । या 'उत्साह' का मूल प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर गर्जना करता हुआ, घनघोर घटाओं के साथ उड़ता हुआ, काले घुँघराले बालों के समान, बच्चों की कल्पना सा, हृदय में बिजली की चमक सी आशा व उम्मीद जगाता, निराश मन को नवजीवन देता, बज्र रूपी दुखों को छिपाता हुआ व्याकुल बैचेन मन एवं विश्व के भीषण तप्त गर्मी से संतप्त मनुष्य की आशा की किरण बन अज्ञात दिशा से शीतल जल वर्षा के माध्यम से धरती को एवं संपूर्ण सृष्टि को शीतलता प्रदान करता है। संसार को नवीन प्रेरणा और नवीन जीवन प्रदान करने में सामाजिक क्रान्ति का प्रतीक है। इसके माध्यम से जोश, पौरूष और क्रान्ति का संदेश मिलता है।

सप्रसंग व्याख्या -

बादल, गरजो। -

घेर धेर थोर गंगल धाराधर ओ।

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत - छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो-

बादल, गरजो।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित कवि निराला की कविता 'उत्साह' से लिया गया है। यहाँ कवि बादलों की गर्जना में उत्साह, क्रांति तथा नवचेतना के स्वर सुन रहा है।

व्याख्या - कवि बादल के गर्जन में नवचेतना और सृजनात्मक उत्साह के स्वर सुन रहा है। इस आह्वान गीत में वह बादल से गरजने का आग्रह करते हुए कहता है कि-हे बादल तुम गरज-गरज कर इस आकाश को घेरते हुए इसमें छा जाओ। सुंदर काले घुँघराले बालों वाले बालक जैसे बादल। तुम गरजो! तुम्हारे हृदय में बिजली की चमक जैसा उत्साह है तुम कवि के समान सृजनात्मक और संपूर्ण संसार में नए जीवन का संचार करने वाले हो। अपनी वज्र जैसी विध्वंसक शक्ति को छिपाते हुए तुम मुझे नब काव्य रचना की प्रेरणा प्रदान कर रहे हो। मेरे हृदय में नई कविता को भरते हुए हे बादल। तुम गरजो।

विशेष - 1. कवि बदलों के गर्जन में नव चेतना के स्वर सुनकर उत्साह से परिपूर्ण है

2. काव्यांश में सुंदर कल्पना तथा क्रांति चेतना दोनों की व्यंजना हुई है।

3. अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश व उपमा अलंकारों का सौंदर्य देखते ही बनता है।

4. खड़ी बोली हिंदी का नाद सौंदर्य कवि के काव्य कौशल को प्रदर्शित करता है

नागार्जुन

जन्म - सन् 1911

जन्म स्थान- सतलखाँ - गाँव, दरभंगा-जिला, बिहार

मूलनाम - वैद्यनाथ मिश्र, स्नेहपूर्वक लोग 'बाबा' कहकर भी पुकारते थे।

- एक अंधविश्वास के कारण इन्हें 'ढक्कन' कहकर भी पुकारा गया।
- 'मैथिली' में वे 'यात्री' के नाम से रचना कार्य करते थे।
- इन्हें घुमक्कड़ी और अक्खड़ स्वभाव व व्यंग्य के धनी होने के कारण 'आधुनिक युग का कबीर' कहकर भी पुकारा गया।
- श्रीलंका में 1936 में बौद्ध धर्म अंगीकार करने के पश्चात् वे नागार्जुन कहलाये।
- अध्ययन - आरंभिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला में फिर बनारस और कोलकाता में
- अनेक बार संपूर्ण भारत की यात्रा की।

रचना कार्य- युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, हजार-हजार बाहों वाली,

तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा

क्या कह दिया मैंने, मैं मिलटरी का बूढ़ा घोड़ा।

- उपन्यास व अन्य गद्य विधाओं में भी लेखन कार्य किया।
- संपूर्ण कृतित्व नागार्जुन रचनावली के सात खंडों में

पुरस्कार - हिंदी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, उत्तरप्रदेश का भारत-भारती एवं बिहार का राजेंद्र पुरस्कार प्राप्त।

- मैथिली भाषा में 'पत्रहीन नग्न गाछ' रचना के लिए साहित्य अकादमी।
- अनेक बार जेल यात्रा।
- हिंदी, मैथिली, बांग्ला और संस्कृत में लेखन कार्य।
- गाँव की चौपालों और साहित्यिक दुनिया में समान रूप से लोकप्रिय कविता के छायावादोत्तर युग के एकमात्र कवि ।

मृत्यु- सन् 1998

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'यह दंतुरित मुसकान' और 'फसल' कविता के रचनाकार का नाम बताइये।

उत्तर नागार्जुन।

2. 'यह दंतुरित मुस्कान' रचना में कवि ने किसकी मुसकान का वर्णन किया है?

उत्तर एक छोटे बालक कि मुसकान का वर्णन।

3. बालक की मुसकान का क्या असर होता है? कवि के मतानुसार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मरे हुए को भी जीवित कर देने की क्षमता के रूप में मृतक में भी जान डाल देने का असर बालक की मुसकान से होता है।

4. नन्हें बालक के स्पर्श से कौन से फूलों के झड़ने की कल्पना कवि ने की है?

उत्तर शेफालिक के फूलों की।

5. बालक किसे नही पहचान पाया?

उत्तर अपने पिता के रूप में कवि नागार्जुन को

6. कवि बच्चे की मधुर दंतुरित मुसकान को देखने का सौभाग्य किसके माध्यम से प्राप्त कर पाते हैं?

उत्तर बच्चे की माँ के माध्यम से।

7. 'दंतुरित मुसकान' कविता में माँ के मधुपर्क से क्या अभिप्राय है?

उत्तर बच्चे के जीवन के लिए आत्मीयता की मिठास से युक्त माँ का मधुर वात्सल्य प्रेम, जिससे माँ बच्चे का लालन-पालन करती है।

8. माँ के आँचल में छिपा बच्चा कवि को कैसे निहारता है?

उत्तर बीच-बीच में तिरछी निगाह से कवि को देखता हुआ बच्चा आँखें मिलने पर मुस्कुरा देता है।

9. फसल को तैयार करने में किस जादू की बात कवि करते है?

उत्तर ढेर सारी नदियों के पानी के जादू उल्लेख कवि करता है।

10. किसका स्पर्श पाकर फसल खिलती है?

उत्तर भारत के लाख-लाख किसानों के करोड़ों हाथों के स्पर्श की गरिमा से फसल खिलती है।

11. किस गुण के कारण फसल हरी-भरी नजर आती है?

उत्तर हजार हजार खेतों की मिट्टी के गुणधर्म के कारण।

12. 'फसल' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर हमें उपभोक्ता संस्कृति के दौर में कृषि, संस्कृति के निकट लाकर उनके अनुभवों से परिचित करवाना इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

13. नन्हें बालक का चित्रण कवि नागार्जुन जी ने किन शब्दों में किया है?

उत्तर एक नन्हा बालक अपने दूधिया दाँतों की मुसकान बिखेर कर एकदम सुस्त व्यक्ति को भी स्फूर्तिमय बना देता है और उसके धूल-मिट्टी से सने हुए गाल एकदम ऐसा प्रतीत कराते है कि किसी तालाब को छोड़कर झोंपड़ी में कमल खिल रहे हैं। उसके स्पर्श मात्र से एकदम कठोर हृदय व्यक्ति भी पिघलकर जल की भाँति शीतल हो जाता है। 'बाँस और बबूल' जैसे रूखे मन में भी बालक का स्पर्श कोमल शेफालिक के फूलों की भाँति एहसास करवाता है।

14. कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर नदियों के पानी का जादू, हाथों के स्पर्श की महिमा, भूरी, काली- संदली मिट्टी का गुणधर्म, सूरज की किरणों का रूपांतर, हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच ही फसल है।

निबंधात्मक प्रश्न -

15. कवि ने बच्चे की मुस्कान के सौन्दर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर बच्चे की मुसकान के सौन्दर्य को कवि कुछ बिम्बों के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त करते है-

1. बच्चे की मुसकान निर्जीव में प्राणों का संचार कर सकती है।
2. मुसकान युक्त शिशु के गाल खिले हुए कमलों जैसे प्रतीत होते है।
3. मुस्कराते शिशु का स्पर्श पत्थर हृदय को भी द्रवित कर देने वाला होता है।
4. मुस्कराते शिशु के रोमांचकारी स्पर्श से कवि के बाँस और बबूल जैसे नीरस और उदास हृदय से शेफालिका के पुष्पों जैसी कोमलता झर रही है।

16. 'फसल' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते है?

उत्तर इस कविता के माध्यम से कवि ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं उन तत्वों की ओर जिनके संयोग से फसल तैयार होती है - जल, वायु, मिट्टी, प्रकाश और मानव श्रम ही ये तत्व है। कवि फसलों का उपयोग करने वाले सामान्य व्यक्तियों को फसल के तैयार होने में सम्पूर्ण देश के प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से परिचित कराना चाहते हैं। किसान के कठिन परिश्रम व योगदान से फसल तैयार होती है। अत: कवि उपभोक्तावादी जीवन में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और किसानों के प्रति सम्मान भाव तथा जीवन की आवश्यकता पूर्ति के लिए प्रकृति और मानव के बीच उचित साझेदारी का भाव रखने का संदेश देना चाहते है।

सप्रसंग व्याख्या -

'धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य !
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उँगलियां माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होतीं जबकि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान!

संदर्भ एवं प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश कवि नागार्जुन द्वारा लिखित 'यह दंतुरित मुसकान' कविता से लिया गया है। इसमें कवि माँ की महिमा को व्यक्त कर रहे है।

व्याख्या - कवि नन्हें शिशु को सम्बोधित करके कहता है कि तुम अपनी बाल-चेष्टाओं और मोहक छवि के कारण धन्य हो। तुम्हारी माँ भी तुम्हें जन्म देकर और तुम्हारी सुन्दर रूप- छवि निहारने के कारण धन्य है। दूसरी ओर एक मैं हूँ जो लगातार लम्बी यात्राओं पर रहने से तुम दोनों से पराया हो गया हूँ। इसीलिए मुझ जैसे अतिथि से तुम्हारा संपर्क नहीं रहा। अर्थात मैं तुम्हारे लिए अनजान ही रहा हूँ। यह तो तुम्हारी माँ है जो तुम्हें अपनी उँगलियों से मधुपर्क कराती रही अर्थात तुम्हें मधुर वात्सल्य भरा प्यार देती रही। अब तुम इतने बड़े हो गये हो कि तिरछी नजर से मुझे देखकर अपना मुँह फेर लेते हो, इस समय भी तुम वही कर रहे हो। इसके बाद जब हमारी आपस में नजरें मिलती है, अर्थात तुम्हारा-मेरा स्नेह प्रकट होता है, तब तुम मुस्करा पड़ते हो इस स्थिति में तुम्हारे निकलते हुए दाँतों वाली तुम्हारी मधुर मुस्कान मुझे बहुत सुन्दर लगती है और मैं तुम्हारी उस मधुर मुस्कान पर मुग्ध हो जाता हूँ।

विशेष - 1. बच्चे की मुसकान के मध्य छिपी परिचय की भावना व्यक्त हुई है।

2. खड़ी बोली हिन्दी व मुक्त छंद का प्रयोग हुआ है ।

3. वात्सल्य रस व प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया गया है।

4. तुकबन्दी का सुन्दर समायोजन हुआ है।

5. 'कनखी मारना', 'आँखे चार होना' मुहावरों से भाषा रोचक प्रतीत होती है।

6. अनुप्रास अलंकार व तत्सम शब्दावली का प्रयोग लक्षित है।

गिरिजा कुमार माथुर

जन्म सन् - 1918

जन्म स्थान - गुना, मध्यप्रदेश

शिक्षा- प्रारंभिक शिक्षा - झाँसी (उत्तर प्रदेश) से एम.ए. (अंग्रेजी) व एल.एल.बी. - लखनऊ से ।

कार्य - वकालत के रूप में तथा आकाशवाणी और दूरदर्शन में।

रचनाएँ - नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीलें, भीतरी नदी की यात्रा - (काव्य संग्रह)

नाटक- जन्म कैद

आलोचना - नयी कविता: सीमाएँ और संभावनाएँ।

- मुक्त छंद में ध्वनि साम्य के प्रयोग के कारण तुक के बिना भी कविता में संगीतात्मकता संभव कर सकने वाले कवि।
- नयी कविता के कवि।
- दो तरह की शब्दावली का प्रयोग करने वाले कवि ।
- रोमानी कविताओं में छोटी ध्वनि वाले शब्द व क्लासिक कविताओं में लंबी और गंभीर ध्वनि वाले शब्दों का प्रयोग।

मृत्यु- सन 1994 में।

अतिलघूतरात्मक प्रश्न

1. 'छाया मत छूना ' कविता में छाया किसका प्रतीक है?

उत्तर भूतकाल (अतीत) का।

2. अपने अतीत में झाँकने के लिए कवि क्यों इंकार करें रहे है?

उत्तर क्योंकि सुखद अतीत को याद कर उस कल्पना से वर्तमान का दुख और भारी लगने लगता है। वह जितना अभी है उससे और ज्यादा कई गुना बढ़ जाता है या प्रतीत होता है।

3. अतीत में झाँकने पर हमें मात्र क्या याद रह जाता है?

उत्तर अतीत के वो पल जिनमें अच्छी यादें, बातें, सुख के दिन ही मात्र याद रह पाते है। दुख रूपी रात्री को भूला देते हैं।

4. 'कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी में चाँदनी किसका प्रतीक है?

उत्तर आने वाले काल्पनिक सुख की आशा की किरण का प्रतीक।

5. कवि के अनुसार व्यक्ति क्यों भ्रमित हो जाता है ?

उत्तर जब उसके पास यश, वैभव, मान, पूँजी सब कुछ नष्ट हो जाता है और वो फिर से उसे पाने के लिए इनके पीछे अधिक दौड़ता जाता है, उतना ही भ्रमित हो जाता है।

6. 'मृगतृष्णा' की संज्ञा कवि ने किसे दी है?

उत्तर कवि ने मृगतृष्णा का प्रयोग भ्रम या छलावे के लिए किया है। प्रभुता के पीछे भागना अपने आपको धोखा देना है।

7. 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है'- से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर कवि का अभिप्राय है कि सुख-दुख नियति के क्रम चक्रानुसार चलते रहते है। आज दृश्यमान सुख में भी भविष्य का दुख छिपा हुआ है।

8. कवि अपनी कविता में निराश व्यक्ति को क्या सलाह देते है?

उत्तर व्यक्ति को अतीत का पीछा छोड़ वर्तमान में जो यथार्थ है, वास्तविकता है उसका वरण करने की, स्वीकार करने की सलाह दी है

9. 'यामिनी, सरगाथा और 'मरीचिका' का पर्यायवाची लिखिए ।

उत्तर यामिनी-रात, सरमाया- पूँजी, मरीचिका-मृगतृष्णा।

लघुतरात्मक प्रश्न-

10. 'छाया मत छूना' कविता में दुख के कौन-कौन से कारणों का उल्लेख हुआ ?

उत्तर इस कविता मे दुख के कुछ कारण बताए गये है, जो इस प्रकार है-

1. पुराने सुख के क्षणों को याद कर वर्तमान के दुख को बढ़ाना
2. वर्तमान की कठोर सच्चई से मुँह मोड़ना तथा साहस से उसका सामना न करना।
3. वर्तमान में यर्थाथ की उपेक्षा कर कल्पित जीवन जीना तभा भावी समस्याओं पर विचार न करना।
4. प्रभुता, ऐश्वर्य, धन-सम्पत्ति को सुखदायक मानने के भ्रम में पड़कर जीवनभर इनके पीछे भागना।

11. गिरिजाकुमार माथुर जे अपनी कविता 'छाया मत छूना' के माध्यम से क्या संदेश दिया है?

उत्तर कविता अतीत की स्मृतियों को भूल वर्तमान का सामना कर भविष्य का वर्ण करने का संदेश देती है। जीवन के सत्य को छोड़कर उसकी छाय से भ्रमित रहना जीवन की कठोर वास्तविकता से दूर रहना है। कविता यश-वैभव और संपत्ति के पीछे भागने की बजाय, आत्मविश्वास के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देकर जीवन - मूल्यों में विश्वास जगाती है।

निबंधात्मक प्रश्न -

12. कवि के मतानुसार वर्तमान दु:ख का कैसे सामना करना चाहिए?

उत्तर कवि ने कहा है कि चाहे साहस दु:ख से घायल हो चुका हो या टूट चूका हो, चाहे कोई मार्ग बाहर जाने का दिखाइ न दें, चाहे काया से हम सुखी नजर आकर भी मन में अपार दु:खों का बोझ लिये फिरते रहे, फिर भी हमें भविष्य के बाद सुख आये, उस सुख का वरण कर खुशी मनानी चाहिए। चाहे समय जाने चाहिए। क्योंकि इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता कि चंद्रमा शरद रातों में नहीं नजर आया, फूल बसंत के जाने पर आया। कुछ भी हो हमें ये सब सुखद दृश्य देखने को तो मिले। क्योंकि उपलब्धि चाहे कैसी भी, कभी भी आये समय जाने के बाद भी प्राप्त उपलब्धि मनुष्य को आनंद देती ही है।

संप्रसंग व्याख्या -

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;

जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।

प्रभुता का शरण- बिंब केवल मृगतृष्णा है,

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन

छाया मत छूना

मन, होगा दुख दूना।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश कवि गिरिजाकुमार माथुर द्वारा लिखित कविता 'छाया मत छूना' से अवतरित है। कवि ने दु:ख के पीछे सुख और सुख के पीछे दु:ख की भावना को व्यक्त किया है।

व्याख्या - कवि यथार्थ का बोध कराता हुआ कहता है कि इस संसार में न तो यश का कोई मूल्य है, न धन-वैभव का। न मान-सम्मान से कोई सन्तुष्टि मिलती है और न धन-दौलत से सन्तोष मिलता है। मनुष्य इस संसार में रहते हुए इनके पीछे जितना दौड़ता है, उतना ही वह भटकता चला जाता है, क्योंकि भौतिक वस्तुएँ व्यक्ति को भरमाती हैं। प्रभुता या बड़प्पन पाने की कामना भी एक विडम्बना है। यह केवल मृगतृष्णा या छलावा भर ही है। सत्य तो यह है कि हर चाँदनी रात के पीछे एक काली रात छिपी हुई है। अर्थात् हर सुख के पीछे एक दुख छिपा रहता है। इसलिए छायाओं या कल्पनाओं में सुख खोजने की बजाय जीवन के यथार्थ सत्य को समझना चाहिए और उसी का पूजन करना चाहिए। अर्थात् कठिन यथार्थ को झेलने को तैयार रहना चाहिए। इसलिए भूल से भी छायाओं को नहीं छूना चाहिए, उससे तो दुगुना दु:ख होगा। भूतकाल में सुख खोजने से वर्तमान की शांति भंग हो जाती है।

विशेष -. 1. कवि ने जीवन यथार्थ को समझने पर जोर दिया है क्योंकि भौतिकता सिर्फ दिखावा मात्र है।

2. खड़ी बोली हिन्दी के प्रयोग से सहजता व प्रवाहमयीता युक्त पंक्तियाँ है।

3. अनुप्रास अलंकार की छटा एवं तत्सम शब्दों की बहुलता है।

ऋतुराज

जन्म- सन् 1940 भरतपुर, राजस्थान

शिक्षा - एम. ए. अंग्रेजी में राज. वि. वि., जयपुर

☞ चालीस वर्षो तक अंग्रेजी साहित्य में अध्यापन कार्य ।

रचनाएँ- एक मरणधर्मा और अन्य, पुल पर पानी, सुरत-निरत और लीला मुखारविंद ।

पुरस्कार- सोमदत, परिमल, मीरा, पहल तथा बिहारी पुरस्कार।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

1. कन्यादान कविता के रचनाकार का नाम बताइए

उत्तर ऋतुराज

2. बेटी को विदा करते वक्त माँ के दुःख को प्रामाणिक क्यों कहा गया ?

उत्तर इसलिए की बेटी ही उसकी अंतिम पूँजी है जिसे भी आज वो दान देने जा रही है। अब उसके पास और कोई पूँजी नहीं। माँ और बेटी के बीच भावनात्मक संबंध है जो अत्यधिक गहरा है।

3. 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की' - यहाँ पाठिका कौन थी ?

उत्तर सरल हदया, भोली और भावुक विदा होती लड़की को पाठिका कहा गया है।

4. 'पानी में झाँककर अपने चेहरे पर मत रीझना' - माँ ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर माँ ने अपने अनुभव बाँटते हुए ही बेटी को इस प्रकार समझाया क्योंकि रूप-सौन्दर्य की मुग्धता ही बंधन का कारण है।

5. कविता में वर्णित 'शाब्दिक भ्रम की तरह बंधन' किसके लिए कहा गया है?

उत्तर वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रम के बंधन के रूप में होते हैं जो मोह में लिपटी भाषा में जकड़ लेते है ।

6. कवि ने क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना?

उत्तर स्वाभिमान से रहने के लिए।

लघुतरात्मक प्रश्न-

7. 'लड़की अभी सयानी नहीं थी' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर उक्त पंक्ति से कवि का अभिप्राय है कि लड़की अभी दुनिया के छल-प्रपंच को समझने लायक चतुर, होशियार, समझदार नही थी। उसे सब अपने जैसे सच्चे इंसान ही लगते। दुनियादारी की समझ अभी उसमें विकसित नहीं हुई थी। आयु में छोटी होना और सांसारिक समस्याओं की समझ अभी उसे नहीं है।

8. माँ को अपनी बेटी को लेकर क्या चिंताएँ थी कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर माँ को चिंता थी कि अभी इसे सुख का आभास तो होता है परंतु दुख को पढ़ना, समझना, महसूस करना इसने अभी सीखा ही नही अर्थात् मायके मे वो अपनी माँ के पास अब तक दु:खों से अनभिज्ञ ही रही, अपनी माँ के पास वो इस तरह सुरक्षित थी कि उसे कभी कोई दु:ख नहीं हुआ।

9. 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर लड़की को कमजोर और अत्यधिक भावुक समझा जाता है। यहाँ माँ लड़की को भावुक तो रहने को कहती है परंतु साथ में कमजोरी को भी भगा कर मुसीबत के वक्त लड़कों के समान साहस दिखाने की सलाह देती है ।

निबंधात्मक प्रश्न

10. माँ 'कन्यादान' कविता में अपनी बेटी को क्या सीख देती है?

उत्तर माँ ने कहा पानी में झाँककर चेहरे पर मत रीझना। क्योंकि ये बाहरी सुंदरता कोई महत्त्व नहीं रखती। ये एक स्त्री के बंधन मात्र है, जीवन संसार को चलाने के लिए समझदार होना, अपना भला-बुरा समझना जरूरी है। मुसीबत के वक्त खुद को चोट पहुँचाने के बजाय कुछ साहस बटोरकर परिवर्तन की दिशा में नव-निर्माण का प्रयास करना है। क्योंकि आत्महत्या किसी समस्या समाधान नहीं है। आग का काम रोटियाँ सेकना है न कि जलकर स्वयं को हानि पहुँचाना।

बाहरी लुभावने प्रलोभनों से भी स्वयं को बचाकर रखना है क्योंकि ये स्त्रीधन कहे जाने वाले वस्त्र और आभूषण तो उसका बंधन ही बनकर रह जाता है। क्योंकि इनके दबाव में वो अपने हित के लिए आवाज भी नहीं उठा सकती। ये भौतिक चीजें और सुख सुविधा एक सीमा तक ही हमें संतुष्टि प्रदान कर सकती है।

11. 'कन्यादान' कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए

उत्तर कवि का मानना है कि समाज - व्यवस्था द्वारा स्त्रियों के लिए आचरण संबंधी जो नियम बनाये जाते है वे अक्सर लुभावने प्रलोभनों सहित एक प्रकार के बंधन होते हैं। 'कोमलता' के गौरव में 'कमजोरी' का उपहास छिपा रहता है। लड़की जैसा न दिखना इसीलिए कहा है बेटी माँ की अंतिम पूँजी है। कविता में भावुकता के साथ अनुभवों की पीड़ा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति हुई है। कन्या एक जीती-जागती सजीव प्राणी है। उसके साथ दान की बात उसे एक प्रकार की वस्तु बना देता है। समाज की चाला की उसे एक बन्धनग्रस्त नारी का रूप दे देती है। कविता का मूल भाव इस कुटिल मनोदशा पर प्रकाश डालने के साथ-साथ लड़कियों को सचेत और सावधान करना भी है, जिससे वह सजग होकर समाज निर्माण में योगदान करें।

सप्रसंग व्याख्या

'माँ ने कहा पानी में' झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेकने के लिए है जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना ।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि ऋतुराज की कविता 'कन्यादान' से लिया गया है। इस अंश में माँ अपनी नवविवाहित बेटी को आगामी जीवन के लिए उपयोगी सीख दे रही है।

व्याख्या- विवाह के बाद विदा होती पुत्री को माँ अपने अनुभवों के आधार पर शिक्षा दे रही है-बेटी ! ससुराल में अपनी सुंदरता पर मुग्ध होकर न रहना। यह सुंदरता किसी को प्रसन्न करेगी तो किसी के लिए ईर्ष्या का कारण भी हो सकती है। सुन्दरता पर इतराना अनेक समस्याओं को जन्म देता है। आग केवल रोटी सेंकने के लिए है। कभी भी आवेश या हताशा में जल मरने की मत सोचना। चुनौतियों का समझ-बूझ और साहस के साथ सामना करना। सुन्दर वस्त्र और कीमती गहने पाकर भ्रम में मत पड़ जाना। ये नारी को बंधन में डालने वाली हथकड़ी और बेड़ियाँ हैं। ये उसके व्यक्तित्व को समाप्त करने के मधुर षड़यंत्र होते हैं। इनके मोह-जाल में मत फँसना। तू लड़की है इस सत्य को मत भूलना, लेकिन तू लड़की होने के कारण दुर्बल है, परावलम्बी है, अन्याय सहना तेरी नियति है यह कभी मत सोचना। सहनशीलता के साथ स्वाभिमान को भी मत भुलाना।

विशेष - 1. मुक्त छन्द की गेयता, तत्सम शब्दावली प्रयुक्त हुई है।

2. खुड़ी बोली का प्रयोग हुआ।

3. भावों की सहज अभिव्यक्ति प्रकट हुई है।

4. प्रतीकात्मक एवं लाक्षणिक शैली को अपनाया गया है।

मंगलेश डबराल

जन्म - सन् 1948 में टिहरी गढ़वाल (उत्तरांचल) के काफलपानी गाँव में

शिक्षा- देहरादून में

पत्र- पत्रिकाओं में सलग्न रहे - हिंदी पेट्रियट, प्रतिपक्ष, आसपास, पूर्वग्रह, अमृत प्रभात, जनसत्ता, सहारा समय आदि।

वर्तमान मे 'नेशनल बुक ट्रस्ट' से जुड़े है।

कविता संग्रह - पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं और आवाज भी एक जगह है।

पुरस्कार- साहित्य अकादमी, पहल सम्मान ।

☞ अनुवादक के रूप में भी कार्य ।

☞ मंगलेश जी की कविताओं के भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, स्पानी, पोलस्की और बल्गारी भाषाओं में भी अनुवाद प्रकाशित। कविताओं में सामंती बोध व पूँजीवादी छल-छदम का प्रतिकार है।

अतिलघूतरात्मक प्रश्न -

1. 'संगतकार' किसे कहते है?

उत्तर मुख्य गायक के साथ गायन करने वाला या कोई वाद्य बजाने वाला कलाकार सहयोगी 'संगतकार' कहलाता है।

2. मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ किसकी आवाज देती है?

उत्तर संगतकार की आवाज साथ देती है।

3. संगतकार के रूप में मुख्य गायक के साथ कवि के अनुसार कौन-कौन हो सकता है?

उत्तर मुख्य गायक का छोटा भाई, शिष्य या कोई दूर का रिश्तेदार।

4. अंतरे की जटिल तानों के जंगल में कौन खो जाता है?

उत्तर मुख्य गायक ।

5. गायक के स्वयं के सरगम को पार कर सीमा पार भटकने पर संगतकार क्या करता है?

उत्तर संगतकार स्थायी सरगम को संभाले रखता है और छुटे हुए सुर को फिर से समेटता है।

6. जैसे समेटता हो, 'जैसे उसे याद' पंक्तियों में निहित अलंकार बताए।

उत्तर उदाहरण अलंकार

7. नौसिखिया किसे कहते है?

उत्तर 'नौसिखिया' शब्द का अर्थ- जिसने अभी सीखना आरंभ किया है।

8. 'राख जैसा कुछ गिरता हुआ' का तात्पर्य ओर इसमें निहित अलंकार बताए।

उत्तर तात्पर्य - बुझता हुआ स्वर

अलंकार - उपमा

9. गला बैठना, प्रेरणा साथ छोड़ना, उत्साह अस्त होना, स्वर बुझता हुआ ये सब अधिकत्तर किसके साथ होता है

उत्तर **मुख्य गायक के साथ**

10. संगतकार प्राचीन समय से क्या करते आ रहे हैं?

उत्तर संगतकार प्राचीन समय से ही मुख्य गायक के गर्जन जैसे गंभीर स्वर में अपनी मंद-मंद गूंज जैसी आवाज मिलाकर उसकी संगत करते आ रहे हैं।

लघूतरात्मक प्रश्न

11. 'तारसप्तक' सप्तक किसे कहत है?

उत्तर सप्तक का अर्थ है- 'सात का समूह' ये सात स्वर है- सा, रे, ग, म, प, घ और नि- षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, और निषाद। इनकी ध्वनि की ऊँचाई और धीमेपन (आरोह-अवरोह) के आधार पर यदि ध्वनि मध्य सप्तक से ऊपर है तो उसे 'तार-सप्तक' कहते है।

12. बिना किसी कारण के भी संगतकार मुख्य गायक का साथ क्यों देता है?

उत्तर मुख्य गायक का उत्साह बढ़ाने के लिए कि वह अकेला नहीं है और उसे विश्वास दिलाने के लिए कि गाया हुआ राग पुनः भी गाया जा सकता है।

13. संगतकार के अपनी आवाज को ऊँचा न उठने देने के प्रयास की क्या वजह हो सकती है?

उत्तर उसकी आवाज में हिचक या स्वर दबी और धीमी आवाज वाला रखने में उसके अंदर की मनुष्यता है जिसमें वो मुख्य गायक का सम्मान करता है।

निबंधात्मक प्रश्न

14. संगतकार कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर कविता हममें यह संवेदनशीलता विकसित करती है कि उनमें से प्रत्येक का अपना-अपना महत्त्व है और उनका सामने न आना उनकी कमजोरी नहीं बल्कि मानवीयता है। इस कविता के माध्यम से कवि ने संदेश दिया है कि मुख्य गायक या कलाकारों का मौनभाव से परोक्ष में सहयोग करने वाले सहायकों या संगतकारों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। इनको नींव की ईंट कहा जा सकता है। इनको समाज जानता नहीं और इन्हें यश और सम्मान भी नहीं मिलता। कवि चाहता है कि लोग इनके महत्व को समझकर इन्हें उचित सम्मान दें। क्योंकि ये संगतकार उचित समय पर सहयोग करके मुख्य कलाकार को निराशा और असफलता से बचाते हैं तथा उसे आत्मविश्वास से भर देते है, इसलिए कवि उपेक्षित रहने वाले इन लोगों के प्रति पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हुए इन्हें सहानुभूति और उचित सम्मान दिए जाने की अपेक्षा करता है।

सप्रसंग व्याख्या-

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी - कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊंचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश पाठ्यपुस्तक क्षितिज में 'संकलित, कवि मंगलेश डबराल रचित कविता 'संगतकार' से अवतरित है। इस अंश मे कवि संगतकार की उपयोगिता बताकर उसके स्वर की हिचक को उसकी मनुष्यता बता रहा है।

व्याख्या - जब गायक उच्च स्वर में गायन करता है तो कभी-कभी गाते-गाते उसका गला बैठने लगता है। इससे उसकी गाने की प्रेरणा और उत्साह समाप्त से होने लगते है। स्वर तेज मंद पड़ने लगता है तब संगतकार का स्वर उसे अपार सांत्वना प्रदान करता है। उसके डूबे आत्मविश्वास को नवजीवन प्रदान करता है। कभी-कभी अकारण भी वह गायक की संगत करता है मानो उसे आश्वत कर रहा हो कि वह अपने को अकेला न समझे वह उसके साथ है। वह गायक को विश्वास दिलाता है कि वह चाहे तो गाए जा चुके राग को फिर गा सकता है। वह जान-

बूझकर अपना स्वर गायक के स्वर से ऊँचा नहीं उठने देता। वह एक सहायक की भूमिका में ही बने रहने का प्रयास करता है। यह संगतकार की असफलता या अयोग्यता का नहीं बल्कि उसकी मानवीयता का प्रमाण है। योग्य और समर्थ होते हुए भी वह स्वयं को पृष्ठभूमि में ही रखता है और अपने गुरु की मान-प्रतिष्ठा बढ़ाने में पूर्ण योगदान करता है।

विशेष -1. कवि ने संगतकार की मानवीय भावना युक्त अपनी हिम्मत हौसलों से निराश गायक को जोश में भर देने का वर्णन किया है ।

2. खड़ी बोली, मुक्त छंद, अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

3. भावों की सरल - सहज अभिव्यक्ति हुई है।

4. मानवीय भावों को प्रस्तुत करने में कवि पूर्णत: सफल रहे हैं।

गद्य-खण्ड (क्षितिज)

नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कहानी 'नेताजी का चश्मा' के लेखक कौन है?

उत्तर कहानी 'नेताजी का चश्मा' सुप्रसिद्ध कहानीकार स्वयं प्रकाश द्वारा लिखित है

2. लेखक स्वयंप्रकाश द्वारा लिखित किन्ही दो कहानी संग्रह के नाम लिखों।

उत्तर 1. सूरज कब निकलेगा 2. आदमी जात का आदमी

3. लेखक संगप्रकाश के उपन्यासों के नाम लिखिए।

उत्तर 1. बीच में विनय 2. जलते जहाज पर 3. ईंधन इनके महत्वपूर्ण उपन्यास है।

प्रश्न-4 'चश्मा' लेखक की नजर में किसका प्रतीक है?

उतर लेखक की नजर में चश्मा देशप्रेम एवं देशभक्तों को सम्मान देनें का प्रतीक है।

प्रश्न 5. नेताजी की मूर्ति पर चश्मा कौन लगाता था? और क्यों?

उत्तर नेताजी की मूर्ति पर चश्मा बूढ़ा कैप्टन चश्मे वाला लगाता था वह नेताजी के प्रति सम्मान व आदर प्रकट करने की भावना से चश्मा लगाता था।

प्रश्न 6. चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे ?

उत्तर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के प्रति चश्मे वाले का अत्यन्त सम्मान भाव देखकर लोग उसे कैप्टन कह कर पुकारते थे।

प्रश्न 7. हालदार साहब उस कस्बे से क्यों गुजरते थे?

उत्तर हालदार साहब किसी कम्पनी में काम करते थे अत: कम्पनी के काम से उनको कस्बे से आना-जाना होता व हर पन्द्रवें दिन कस्बे से गुजरते।

प्रश्न 8. नेताजी की मूर्ति की बनावट में क्या कमी थी?

उत्तर नेताजी की मूर्ति में चश्मा पत्थर का नहीं था। शायद मूर्ति बनाने वाला पत्थर का चश्मा बनाना भूल गया था।

प्रश्न 9. पान वाला कैसा था ?

उत्तर पान वाल काला, मोटा व खुशमिजाज आदमी था। वह सदा मुँह में पान ठूँसे रखता था।

प्रश्न 10. मूर्ति किस स्वतंत्रता सेनानी की थी और कैसी थी?

उत्तर मूर्ति नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की थी। मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फिट ऊँची । जिसे बस्ट ठहते है। यह बहुत सुन्दर थी।

प्रश्न 11. चश्मे वाले का व्यक्तित्व कैसा था ?

उत्तर चश्ने वाला, एक बेहद बूढ़ा, मरियल सा लंगड़ा था। आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर वह काला चश्मा लगाता था। फेरी लगाकर चश्मे बेचता था।

प्रश्न-12. नेताजी की मूर्ति बनाने का कार्य किसे सौंपा गया व क्यों?

उत्तर देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी न होने, धन संसाधनो का अभाव व स्थानीय कलाकारों को ही अवसर देने के कारण कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के मास्टर मोतीलाल, को मूर्ति बनाने का कार्य सौपा गया।

प्रश्न 13. हालदार साहब ने कैप्टन को कैसा समझा?

उत्तर- हालवार साहब ने सोचा कि कैप्टन सेना का कोई भूतपूर्व कैप्टन होगा अथवा नेताजी की आजाद हिन्द फौज में में कैप्टन रहा होगा।

प्रश्न 14. हालदार साहब की स्वभावगत विशेषताएँ बताइये।

उत्तर- हालदार साहब एक देशभक्त व्यक्ति थे। वह कल्पनाशील व भावुक हृदय व्यक्ति थे। नेताजी के प्रति व देशभक्तो के प्रति गहरा आदर व सम्मान भाव रखते थे।

प्रश्न 15. चश्मे वाला क्या करता था?

उत्तर- नेताजी की बगैर चश्मे वाली मूर्ति बुरी लगती थी इसलिए चश्मे वाला अपनी छोटी सी दुकान में उपलब्ध गिने चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता था।

प्रश्न 16. हालदार साहब दुःखी क्यो थे ?

उत्तर हालदार साहब यह देखकर दुखी थे कि लोग देशभक्तों व देश पर मर-मिटने वालों का सम्मान नहीं करते बल्कि उनका मजाक बनाते है।

प्रश्न 17. मूर्ति के नीचे क्या लिखा था ?

उत्तर मूर्ति के नीचे लिखा था मूर्ति मास्टर मोतीलाल। वह कस्बे के एकमात्र हाई स्कूल के मास्टर थे।

प्रश्न 18. 'तभी उन्होनें इसे लक्षित किया' किसने, क्या तथा कब देखा?

उत्तर- हालदार साहब जब पहली बार कस्बे से गुजरे और पान खाने के लिए चौराहे पर रूके तो उन्होंने देखा कि वहाँ लगी नेताजी की मूर्ति की आँखों पर सचमुच के चश्मे का चौड़ा वाला फ्रेम पहनाया हुआ था।

प्रश्न 19. बनाकर 'पटक देने' के माध्यम से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहते है।

उत्तर बनाकर पटक देने से लेखक का आशय संस्थाओं की गैर जिम्मेदार कार्यप्रणाली से है। निर्माण कार्य स्तरीय है या नहीं गुणवत्ता उत्तम है या नहीं इससे कोई लेना देना नहीं होता। बस कार्य को निर्धारित अवधि में पूरा कर देने पर लेखक ने व्यंग्य किया है।

प्रश्न 20. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

उत्तर मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देश में अभी भी देशभक्तों, स्वतंत्रता-सेनानीयों के प्रति सम्मानभाव व देशभक्ति की भावना जीवित है।

प्रश्न 21. कस्बे की नगरपालिका क्या-क्या कार्य करवाती थी?

उत्तर कस्बे की नगरपालिका सड़क पक्की करवाना, पेशाबघर बनवाना, कबूतरों की छतरी बनवाना, तथा कभी-कभी कवि सम्मेलन आयोजित करवाने का कार्य करती थी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. बस्ट किसे कहते है? मूर्ति की क्या विशेषताएँ थी?

उत्तर सिर से लेकर कमर तक के भाग की मूर्ति को बस्ट कहते है नेताजी की मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नौक से कोट के दूसरे बहन तक दो फुट ऊंची मूर्ति थी। वह फौजी वर्दी पहने हुए थे और नेताजी की मूर्ति बहुत सुन्दर थी ।

प्रश्न 2. हालदार साहब को चश्मे वाले का यह कार्य कैसा लगता है और क्यो?

उत्तर हालदार साहब को चश्मे वाले का मूर्ति को चश्मा लगाना सराहनीय कार्य लगता है 'वाह ! भई खूब। क्या आइडिया है।' ऐसा कहकर वह चश्मे वाले के कार्य की प्रशंसा भी करते है। वह चश्मे वाले को एक देशभक्त व्यक्ति मानते है उसके मन मे नेताजी के प्रति आदर व सम्मान का भाव होने के कारण चश्मे वाले का यह कार्य सराहनीय है।

प्रश्न 3. सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यो कहते थे?

उत्तर सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि उसके मन मे देशभक्ति की प्रबल भावना थी। नेताजी सुभाषचन्द्र की मूर्ति पर चश्मा लगाने व मूर्ति के प्रति आदर व सम्मान भाव प्रकट करने के कारण लोगों ने उसे आदर या व्यंग्य से कैप्टन पुकारना शुरू कर दिया होगा। आजाद हिन्द फौज के सेनानी भी कैप्टन कहलाते थे जैसे कैप्टन लक्ष्मी, कैप्टन शाहनवाज आदि, तो इसी ढर्रे पर लोगों ने चश्मेवाले ने भी विनोदवश कैप्टन उपनाम दे दिया होगा।

प्रश्न 4. 'वो लंगड़ा क्या जाएगा फौज में।' पागल है पागल कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर कैप्टन के लिए यह टिप्पणी कराना कि वो लंगडा क्या जाएगा फौज में! पागल है पागल। से पान वाले की देशभक्तों के प्रति अनादर, उपेक्षा, संवेदनशून्यता और उदासीनता की भावना उजागर होती है। कैप्टन की मनोभावना, देशप्रेम, मान सम्मान की भावना को समझना उसकी बुद्धि से बाहर की बात थी। यदि उसे देशभक्त और देश प्रेम की भावना का तनिक भी ज्ञान होता तो वह ऐसी अशोभनीय और निंदनीय टिप्पणी कदापि नही करता।

प्रश्न 5. मूर्ति के पास से गुजरते हुए अंत में हालदार साहब भावुक क्यों हो उठे थे ?

उत्तर हालदार साहब जब फिर कस्बे के चौराहे से गुजरे तो उन्होंने नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगा देखा। उसे देखकर हालदार साहब आर्श्यचकित और अत्यंत भाव विभोर हो गए। उन्होंने महसूस किया कि कैप्टन की मृत्यु हो जाने पर भी कस्बे में देशभक्ति की भावना बाकी थी। विशेष रूप से बच्चों को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत देखकर उन्हें संतोष महसूस हुआ। अत: नेताजी के प्रति सम्मान भाव देखकर व नई पीढ़ी की सकारात्मक सोच व देशभक्ति की भावना देखकर वह भावुक हो उठे थे।

प्रश्न 6. कैप्टन चश्मे वाले को सामने देखकर हालदार साहब अवाक रह गए। आपके अनुसार इसका क्या कारण रहा होगा ?

उत्तर चश्मे वाले की नेताजी के प्रति समान की भावना और उसके कैप्टन नाम से हालदार साहब को लगा होगा कि चश्मेवाला नेताजी का साथी या आजाद हिंद फौज का सिपाही होगा। लेकिन जब उन्होंने देखा कि ख्यमेवाला एक बेहद बूढ़ा मरियल सा लंगड़ा आदमी है जिसने सिर पर गांधी टोपी और आँखो पर काला चश्मा लगाए हुए व एक हाथ में संदूकची लिए हुए फेरी लगाता है तो उनकी कल्पना मूर्ति खण्ड-खण्ड हो गई और अवाक रह गए।

प्रश्न 7. हालदार साहब द्वारा कैप्टन के बारे में पूछने पर पान वाला उदास क्यों हो गया ?

उत्तर हालदार साहब द्वारा नेताजी की मूर्ति पर चश्मा नहीं होने की वजह पूछे जाने पर पानवाला उदास होकर जवाब देता है कि कैप्टन मर गया। वह उदास इसलिए था क्योंकि उसे कैप्टन की मृत्यु का दु:ख हो रहा था। उसे कैप्टन का मूर्ति को चश्मा पहनाना अजीब और सनकपूर्ण लगता था और वह कैप्टन का मजाक भी बनाता था लेकिन उसकी मृत्यु से पानवाले के जीवन में सूनापन सा उत्पन्न हो गया और उसे कैप्टन की देशभक्ति की भावना का अनुभव भी हुआ।

प्रश्न 8. नेताजी का चश्मा कहानी में निहित देश भक्ति के संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर नेताजी का चश्मा कहानी में लेखक ने यह संदेश दिया है कि देशभक्ति प्रकट करने के लिए सेना में जाना, सैनिक होना और शक्तिशाली होना जरूरी नहीं है। हर देशवासी अपनी सोच और सामर्थ्य के आधार पर देश के लिए योगदान कर सकता है। देश से प्रेम करना व देशभक्तों का सम्मान करना ही सच्ची देशभक्ति है।

प्रश्न 9. हालदार साहब को मूर्ति के सामने से गुजरने पर उन्हें क्या अन्तर दिखाई देता था और क्यों ?

उत्तर हालदार साहब को मूर्ति के सामने से गुजरने पर हर-बार मूर्ति पर लगे चश्मे के फ्रेम के बदले जाने का अंतर दिखाई पड़ता था। देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर चश्मा लगाता था लेकिन यदि किसी ग्राहक को मूर्तिवाला चश्मा पसंद आ जाता था तो मूर्ति पर लगे चश्मे को हटकर अन्य फ्रेम वाला चश्मा लगा देता था।

प्रश्न 10. नेताजी की मूर्ति लगाने के कार्य को सफल और सराहनीय प्रयास क्यों बताया गया ? प्रमुख दो कारण बताइये।

उत्तर मूर्ति लगाने के कार्य को सराहनीय और सफल बताने के निम्नलिखित कारण है-

1. नेताजी के त्याग और बलिदान के प्रति लोगों में सम्मान की भावना उत्पन्न हुई।
2. नेताजी की मूर्ति लोगों में देशभक्ति की भावना भरती थी।

लेखक परिचय

प्रश्न-1 लेखक स्वयं प्रकाश का जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर भारतीय समाज के सजग प्रहरी और वरिष्ठ कथाकार स्वयं प्रकाश अपनी कहानियों और उपन्यासों के लिये विख्यात है। आपका जन्म 20 जनवरी 1947 को इंदौर (मध्यप्रदेश) में हुआ। आपने हिंदी से एम-ए- किया और पीएचडी की उपाधि हासिल की थी। इसके अलावा मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के पश्चात आपने अपनी रचनाओं में मध्यमवर्गीय जीवन के वर्ग- शोषण के विरुद्ध चेतना को प्रकट किया। आपको प्रेमचंद की परम्परा का महत्वपूर्ण कथाकार माना जाता है। आपके तेरह कहानी संग्रह व पाँच उपन्यास प्रकाशित हो चुके है।

आपके द्वारा रचित प्रमुख उपन्यास है- 'बीच में विनय 'ईंधन' जलते जहाज पर' 'ज्योति रथ के सारथी' और उत्तर जीवन कथा और प्रमुख कहानी संग्रह-सूरज कब निकलेगा, संधान आदमी जात का आदमी, आएँगे अच्छे दिन भी आदि है। आपका देहावसान 7 दिसम्बर 2019 को हुआ।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

प्रश्न 1. अब हालदार साहब को बात कुछ-कुछ ..... वाह्। भाई खूब।

क्या आइडिया है। (क्षितिज पेज न. 61-62)

उत्तर **संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश पाठयपुस्तक - क्षितिज, भाग-2 में संकलित 'नेताजी का चश्मा' पाठ से उद्धृत है। यह प्रसिद्ध कहानी लेखक स्वयं प्रकाश द्वारा लिखित है।

प्रसंग - इस गद्यांश में कहानी के प्रधान पात्र हालदार साहब द्वारा चश्मे वाले कैप्टन के बारे मे जानकारी प्राप्त करने व चश्मों के बदलने के पीछे छिपी जिज्ञासा का वर्णन है।

व्याख्या - एक कंपनी के कर्मचारी हालदार साहब हर पन्द्रहवें दिन कम्पनी के काम से एक कस्बे से गुजरते थे। जब भी वह कस्बे के मुख्य चौराहे से गुजरते थे। उन्हें नेताजी की मूर्ति का चश्मा बदला हुआ मिलता। उन्होंने अपनी इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए पानवाले से पूछा तो पानवाले के जवाब से हालदार साहब को कुछ-कुछ समझ में आया कि एक चरश्मे बेचने वाला है जिसका नाम कैप्टन है। नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति को देखकर वह आहत होता है इसलिए अपनी छोटी सी चश्मे की दुकान से गिने-चुने चश्मों के फ्रेमो से कोई एक चश्मा नेताजी की मूर्ति को पहना देता है। ग्राहक के द्वारा जब मूर्ति पर पहना हुआ चश्मा मांगा जाता है तो वह उतार कर ग्राहक को दे देता है तथा मूर्ति को अन्य चश्मा पहना देता है। ऐसा करते हुए वह नेताजी की मूर्ति से क्षमा मांगता है किन्तु साथ-ही-साथ श्रद्धा व सम्मानवश उन्हें दूसरा चश्मा भी पहना देता है, हालदार साहब को कैप्टन का यह कार्य बहुत ही प्रशंसनिय व सराहनीय प्रतीत होता है।

विशेष : (1) हिन्दी भाषा के शब्दो के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दों जेसे फ्रेंम, आइडिया तथा उर्दू शब्दों जैसे-दरकार का प्रयोग किया है।

(2) कैप्टन द्वारा देशभाक्ति की भावना व देशभक्तों के प्रति सम्मान की भावना को अभिव्यक्त किया है।

प्रश्न 2. 'मूर्ति संगमरमर की थी. ..... मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल।'

उत्तर **संदर्भ** - प्रस्तुत गंद्याश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' भाग-2 में संकलित 'नेताजी का चश्मा' नामक पाठ से उद्धृत है इसके लेखक 'स्वयं प्रकाश' है।

प्रसंग - इस गद्यांश में कहानीकार कस्बे के मुख्य बाजार मे मुख्य चौराहे पर स्थापित नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की संगमरमर से निर्मित मूर्ति शब्दचित्र प्रस्तुत कर रहा है।

व्याख्या - हालदार साहब जब कस्बे से गुजरे तो उन्होंने देखा कि मुख्य चौराहे पर नेताजी की संगमरमर की मूर्ति बनी हुई थी। टोपी की नोक से लेकर नेताजी के कोट पर लगे दूसरे बटर तक लगभग दो फीट ऊँची मूर्ति थी। अंग्रेजी में जिसे बस्ट कहते है। मूर्ति फौजी वर्दी में कुछ कुछ मासूम, कमसिन और बहुत सुन्दर थी। मूर्ति को देखते ही देश भक्ति से ओत-प्रोत प्रसिद्ध घोष जिनका नेताजी ने आव्हान किया था - 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूँगा'। याद आने लगते थे। लेखक के अनुसार यक कार्य एक अति सराहनीय और सफल कार्य था जो लोगों में देशभक्तों के प्रति सम्मान भाव जगाता था।

लेकिन इतनी सुंदर व प्रशंसनिय होते हुए भी मूर्ति में एक कमी थी कि नेताजी की आँखों पर चश्मा नही लगा था । इसलिए उस मूर्ति पर सचमुच का एक चौड़े और काले फ्रेम का चश्मा पहना दिया गया था। हालदार साहब जब कस्बे से पहली बार गुजरते हैं और चौराहे पर पानवाली दुकान पर पान खाने रुकते है तभी उनका इस मूर्ति पर ध्यान जाता है और चश्मे को देखकर उनके मुख पर मुस्कान आ जाती है। उन्होंनें वास्तविक चश्मा पहनाने के 'आइडिया' की बहुत सराहना की।

विशेष - 1. नेताजी की मूर्ति का शब्द चित्र प्रस्तुत किया गया है।

2. हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी मिश्रित शब्दों का प्रयोग किया है।

3. भाषा सरल व सहज है।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'नेताजी का चश्मा' कहानी के अनुसार देश के निर्माण में बड़े ही नहीं बच्चे भी शामिल हैं। आप देश के नव निर्माण में किस प्रकार योगदान देगें?

उत्तर 'नेताजी का चश्मा' कहानी में कस्बे के निवासियों द्वारा एक देशभक्त की मूर्ति स्थापित की गई थी। लेखक के अनुसार मूर्ति का रंग-रूप, गुण-दोष इतने महत्वपूर्ण नही थे। जितनी लोगो की देश प्रेम की भावना महत्वपूर्ण थी। हर व्यक्ति देश के निर्माण में योगदान दे सकता है चाहे छोटा हो या बड़ा। देशभक्ती जाहिर करने के लिए यह आवश्यक नहीं है की स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया जाए, अपने जीवन का बालिदान किया जाए। देश-प्रेम की अभिव्यक्ति तो हम छोटे-छोटे कार्य करके भी कर सकते है। जैसे -भ्रष्टाचार और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करके, बाल-विवाह, बालश्रम का विरोध करके, अपनी भाषा, संस्कृति, परम्पराओं को सहेज करके देशभक्तो का सम्मान करके, देश का सम्मान करके , पर्यावरण की रक्षा करके देश के सुनहरे भविष्य का निर्माण करने में योगदान दे सकते है। एक ईमानदार, परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ, इंसान बनकर देश के निर्माण में योगदान दे सकते है।

प्रश्न 2. 'बार-बार सोचते है' क्या होगा कौम का जो देश के खातिर घर-गृहस्थी, जवानी-जिन्दगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढती है। इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए-

उत्तर इस कथन के माध्यम से लेखक कहना चाहते है कि जो कौम अपने देश के बलिदानियों का सम्मान करना नहीं जानती, उनका भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता है। ऐसे व्यक्ति सम्मान के पात्र होते है जो देश के लिए त्याग और बलिदान करते है लेकिन यदि उन पर लोग हँसते है तो यह उचित नहीं है। पाठ में कैप्टन द्वारा जो कि वृद्ध है, मरियल है लेकिन देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाता है तो लोग उसे सनकी व पागल कहते है। इस लिए लेखक कहते है कि जहाँ ऐसे स्वार्थी लोग है उस देश का भविष्य कैसे उज्ज्वल होगा?

बालगोबिन भगत - रामवृक्ष बेनीपुरी

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

1. **पाठ 'बालगोबिन भगत' हिन्दी गद्य की किस विधा में लिखा गया है।**

उत्तर रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित बालगोबिन भगत हिन्दी गद्य की 'रेखाचित्र' विधा में लिखा गया है।

2. **बालगोबिन गृहस्थ थे, फिर उन्हें भगत क्यों कहा जाता था?**

उत्तर बालगोबिन गृहस्थ होतें हुए भी अपने आचरण, व्यवहार, सोच और प्रवृत्ति से साधु-संत जैसे थे इसलिए उन्हें भगत कहते थे।

3 **बालगोबिन के संगीत को लेखक ने जादू कहा है, क्यों?**

उत्तर जो भी व्यक्ति बालगोबिन के संगीत को सुनता था मंत्रमुग्ध हो जाता था। बच्चे, औरतें और प्रत्येक व्यक्ति उनके गीतों को तल्लीनता पूर्वक सुनते और गुनगुनाते थे इसलिए लेखक ने उनके संगीत को जादू कहा है।

4 **लेखक बालगोबिन की किस बात पर सर्वाधिक मुग्ध थे?**

उत्तर लेखक बालगोबिन के मधुर गान पर जो सदा-सर्वदा ही सुनने को मिलता उस पर मुग्ध थे।

5 **कबीर पंथी किसको कहते है? बालगोबिन को कबीर पंथी क्यों कहा है?**

उत्तर कबीर की विचारधारा को मानने वाले को कबीर पंथी कहते हैं। बालगोबिन कबीर को 'साहब' मानते, उन्ही के आदर्शो पर चलते थे।

6 **बालगोबिन अपने खेत की पैदावार कहाँ और क्यों ले जाते थे ?**

उत्तर बालगोबिन जो कुछ खेत में पैदा होता सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते अर्थात् कबीर मठ ले जाते। उनके अनुसार उनकी सब चीज 'साहब' की थी।

7 **बालगोबिन की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष क्या था ?**

उत्तर जब बालगोविन के पुत्र की मृत्यु हुई तब भी वह तल्लीनता के साथ गीत गा रहे थे उनका चह व्यवहार संगीत साधना का चरम उत्कर्ष था।

8 **बालगोबिन अपनी पतोहू को उत्सव मनाने के लिए क्यों कहते है?**

उत्तर बालगोबिन के अनुसार, उनके पुत्र की आत्मा परमात्मा के पास चली गई है अत: ऐसी आनन्द की बात पर रोने के लिए अपनी पतोहू को मना करते है और उत्सव मनाने के लिए कहते है।

9 **बालगोबिन ने सामाजिक मान्यताओ के विरुद्ध जाकर पतोहू से कौनसा कार्य करवाया ?**

उत्तर बालगोबिन ने अपने पुत्र के क्रिया कर्म अपनी पतोह से करवायें। पतोहू से दाह संस्कार का कार्य पूर्ण करवाया।

10 **पतोहू के भाई को बालगोविन ने क्या आदेश दिया?**

उत्तर पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया और आदेश दिया कि पतोहू का दूसरा विवाह करवा दें।

11 **पतोहू को बालगोबिन की किस दलील के आगे झुकना पड़ा?**

उत्तर बालगोबिन की यह दलील की ''मैं घर छोड़कर चला जाऊगाँ'' के आगे पतोहू को झुकना पडा।

12 **'साधु की सारी परिभाषाओं पर खरा उतरने वाला' से क्या आशय है?**

उत्तर एक सच्चे साधु के जो लक्षण होते है वह सब बालगोबिन भगत के आचरण में विद्यमान थे।

13 इकलौते पुत्र की मृत्यु के बाद बालगोबिन भगत गा क्यो रहे थे?

उत्तर बालगोबिन के अनुसार आत्मा अपनी प्रियतम परमात्मा के पास गई है। बिरहनी अपनी प्रेमी से जाकर मिल गई है। इसलिए वे गा कर उत्सव मना रहे थे।

14 'मैं कभी-कभी सोचता, यह पागल तो नही हो गए' यह कथन किसके बारे में कहा है, और क्यों ?

उत्तर यह कथन बालगोबिन के बारे में कहा गया है क्योंकि वह अपनी रोती हुई पुत्रवधु को उत्सव मनाने के लिए कह रहे थे।

15. बालगोबिन भगत की पुत्रवधु कैसी थी।

उत्तर बालगोबिन भगत की पुत्रवधु सुंदर, सुशील और प्रबन्धिका के गुणों से युक्त थी।

16. 'पतोहू' से क्या आशय है?

उत्तर पतोहू का अर्थ होता है पुत्र की वधू

17. 'पूरब में लोही लगने' से क्या आशय है?

उत्तर पूरब में लोही लगने का आशय है सुबह के समय सूरज की लालिमा ।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. गर्मियों की उमस भरी शाम को बालगोबिन भगत शीतल और मनमोहक बना देते थे? कैसे?

उत्तर गर्मियों की उमसभरी शाम को वह अपने घर के आँगन में आसन लगा लेते थे। कुछ उनके प्रेमी लोग भी वहाँ आ जाते थे एक निश्चित ताल व गति के साथ प्रेमी मंडली बालगोबिन भगत के साथ गीतों को दुहराती। बालगोबिन खँजड़ी लिए आँगन में नाचते। सारा आँगन नृत्य और संगीत से ओतप्रोत हो जाता।

2. 'बालगोबिन की मृत्यु उन्हीं के अनुरूप हुई।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर बालगोविन भगत संत प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने जीवन भर स्नान, स्थान, व्रत आदि नियमों का पालन किया और मृत्युपर्यन्त उनको निभाया। उनकी इच्छा के अनुसार कि प्रभुभक्ति करते हुए मृत्यु मिले वैसे ही भक्ति गीत गाते-गाते ही उनकी आत्मा प्रियतम परमात्मा से जा मिली।

3. 'घर परिवार होते हुए भी वह साधु की सभी परिभाषाओं में खरे उतरने वाल थे।' कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लेखक के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि बालगोबिन भगत गृहस्थ होते हुए भी अपने आचरण और वेशभूषा, व्यक्तित्व से साधु थे। साधुत्व का आधार जीवन के मानवीय सरोकार होते हैं और बालगोबिन गृहस्थ होते हुए भी उस मनुष्यता, लोक संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है।

4. 'भगत की हर चीज साहब की थी।' भगत की यह मान्यता उनके किस आचरण से प्रभावित होती है?

उत्तर - बालगोबिन भगत गृहस्थ थे लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। उनके खेत में जो कुछ पैदा होता, सिर पर लादकर कबीर मठ ले जाते और भेंट रूप मे रख देते और प्रसाद रूप मे जो मिलता उसी से अपना गुजारा करते थे। इससे यह सिद्ध होता है कि उनकी हर चीजें 'साहब' की थी।

5. धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थी? उस माहौल का शब्दचित्र लिखो।

उत्तर आषाढ का महीना और रिमझिम वर्षा के साथ ही गाँव के सभी किसान खेतों में रोपनी कर रहे है। बालगोबिन भगत भी कीचड़ से लथपथ रोपनी करते हुए संगीत से आकश और पृथ्वी पर अपना जादू बिखेरते है। खेलते

हुए बच्चे, भेंड़ो पर बैठी औरतें, हल चला रहे किसान उनके संगीत के जादू से चमत्कृत और आनन्दित हो रहे हैं।

6. लेखक 'बालगोबिन भगत' के आधार पर क्या संदेश देते हैं?

उत्तर इस पाठ से हमें यह संदेश मिलता है कि साधुत्व का पालन गृहस्थ जीवन में भी निभाया जा सकता है ।'नियमों पर दृढ रहकर, संतोषी प्रवृत्ति, ऊँच-नीच के भेद को त्यागकर, मोह-माया के जाल से दूर रहकर, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए प्रियत्नशील होकर भी साधुत्व जीवन जी सकता है।

7. भगत नहीं रहे सिर्फ उनका पंजर पड़ा है। - पंक्ति का आशय स्पष्ट ?

उत्तर इस पंक्ति के माध्यम से लेखक कहना चाहते है कि भगत की मृत्यु हो चुकी है। वह अब इस संसार से विदा ले चुके है। उनकी आत्मा शरीर रूपी पिंजरे को छोडकर जा चुकी है। केवल उनका निर्जीव शरीर ही धरती पर पड़ा है।

8. बालगोबिन भगत अपने बेटे का विशेष ध्यान क्यों रखते थे?

उत्तर बालगोबिन भगत का अपने बेटे से विशेष प्रेम और ध्यान पुत्र मोह के कारण नहीं था बल्कि उनका पुत्र काम काज मे सुस्त और शरीर से दुर्बल था और वह यह मानते थे कि जो कमजोर और निगरानी के हकदार होते है उनसे अधिक स्नेह रखना चाहिए।

लेखक परिचय-

1. रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।

उत्तर हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् 1899 में बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर ग्राम में हुआ। मैट्रिक की परीक्षा पास करने से पहले ही 1920 ई. में महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। 1930 से 1942ई तक का समय जेल में ही व्यतीत किया।

आपके द्वारा रचित प्रमुख रचनाएँ निम्न प्रकार से है -

(1) निबंध - संग्रह - 'गेहूँ और गुलाब', 'मशाल'

(2) रेखाचित्र - 'माटी की मूरतें'। बालगोबिन भगत

(3) संस्मरण - 'मील के पत्थर' 'जंजीरे और दीवारे'

(4) आपका देहावसान सन् 1968 में हुआ।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

1. 'बालगोबिन भगत की संगीत-साधना..... सबका ध्यान खींचकर ही रहती है

उत्तर **संदर्भ**- प्रस्तुत अवतरण पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2 'में संकलित रेखाचित्र 'बालगोबिन भगत' से लिया गया है। इसके लेखक 'रामवृक्ष बेनीपुरी' है।

प्रसंग - लेखक ने इस अंश में भगत जी के पुत्र की मृत्यु, पतोहु के चरित्र और भगत जी के व्यक्तित्व के उच्चतम रूप का परिचय करवाया हैं।

व्याख्या - लेखक कहते है कि जिस दिन बालगोबिन के पुत्र की मृत्यु हुई उस दिन उनकी संगीत साधना का सबसे उच्चतम दिन था। वह उनका इकलौता पुत्र था। उसकी मृत्यु के दु:खद अवसर पर भी उनका गायन बंद नही हुआ। वे पुत्र के शव के पास बैठकर गाते रहे। उनके लिए पुत्र की मृत्यु भी एक सामान्य घटना थी। उनका

पुत्र कामकाज में सुस्त और शरीर से दुर्बल था। इस कारण भगत उस पर विशेष ध्यान देते थे। उनके अनुसार ऐसे लोगो पर जो कमजोर या निगरानी के हकदार होते है उन से अधिक स्नेह रखना चाहिए। क्योंकि स्वस्थ और बुद्धिमान तो अपना ध्यान रख सकते है। बडी इच्छा से भगत ने अपने पुत्र की शादी करवाई और प्रभुकृपा से पतोहू भी सौभाग्यशाली और सुशील थी। उसने घर का सारा प्रबंध संभाल लिया और भगत को घर-गृहस्थी के कार्यो से निवृत्त भी कर दिया था। जब भगत जी का बेटा बीमार हुआ तो उसकी सुध लेने कोई नहीं आया, परन्तु उसकी मृत्यु हो जाने पर अधिकतर लोग भगत के घर आ गए थे।

विशेष-

(1) लेखक ने भगत के व्यक्तित्व का सजीव व मार्मिक चित्रण किया है।

(2) देशज शब्दों के साथ, खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया है।

(3) भाषा शैली सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

2. इस बार लौटे तो तबीयत ..... उनका पंजर पड़ा है ।

उत्तर **संदर्भ**- प्रस्तुत अवतरण पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2 में संकलित रेखाचित्र' बालगोबिन भगत' से लिया गया है। इसके लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी है।

प्रसंग - इस अंश में लेखक ने बालगोबिन भगत की मृत्यु उनके अंतिम समय का वर्णन किया है।

व्याख्या - बालगोबिन गंगा स्नान करके लौटे तो बीमार पड़ गए। खाने-पीने के बावजूद स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। बुखार भी रहने लगा। परन्तु अपने नियमों का दृढता से पालन करते थे दिन मे दो बार स्नान, ध्यान और गान करने, खेतीबाड़ी करते। लोग उनको आराम करने को कहते किन्तु बालगोबिन भगत उनकी बात को हँसकर टाल देते थे। एक दिन शाम को भगत जी ने गीत गाये किन्तु उनके स्वर को सुनकर यह प्रतीत हुआ कि जैसे स्वर का धागा बीच-बीच में टूट रहा हो, जैसे किसी मोती की माला का एक-एक दाना बिखर रहा हो अर्थात् उनकी जीवन रूपी माला का धागा टूट गया था।

सवेरे में जब उनकी खँजड़ी और गीतों का स्वर सुनाई नही दिया तो लोगो ने उनको जाकर संभाला तो पाया कि बालगोबिन भगत के प्राण जा चुके थे। उनका निर्जीव शरीर ही वहाँ पड़ा था।

विशेष - (1) लेखक ने बालगोबित भगत का सजीव रेखाचित्र प्रस्तुत किया है।

(2) भाषा शैली सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(3) मुहावरेंदार शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

निबन्धात्मक प्रश्न

3. 'बालगोबिन भगत' पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर 'बालगोबिन भगत' पाठ का मुख्य पात्र है वह मंझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। उनका चेहरा हमेशा सफेद बालों से जगमग किए रहता। कमर में एक लंगोटी पहनते थे और सिर पर कबीर पंथियों की सी कनफटी टोपी। सर्दियों में काली कंबली ओढते थे। मस्तक पर रामानन्दी चंदन का टीका और गले में तुलसी के जड़ो की बैडोल माला' बाँधे रहते।

कबीर को 'साहब' मानते हुए उनके आदर्शों पर चलते। खेत में कार्य करते हुए तल्लीन होकर गीत गाते थे। स्वभाव से संतोषी प्रवृति के बालगोबिन भगत अपने खेत की पैदावार को कबीर मठ में भेंट कर आते थे। मोहमाया से दूर रहते हुए, अपने नियमो पर दृढ़- बालगोबिन सामाजिक कुप्रथाओं के विरोधी भी थे। संत की तरह सज्जन सरल, वाकपटु थे। कभी झूठ नही बोलते, खरा व्यवहार रखते, ना किसी से झगड़ा करते, ना किसी से बिना पूछे उसकी चीज को हाथ लगाते। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी संत आचरण के व्यक्ति थे बालगोबिन भगत ।

4. बालगोबिन भगत रेखाचित्र में सामाजिक परम्पराओं के विरुद्ध कार्य करते पाया है? उनका यह आचरण क्या संदेश देता है?

उ- बालगोबिन भगत को इस पाठ में दो बार सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध जाकर कार्य करते हुए पाया है-

(1) पुत्र की मृत्यु पर शोक न मना कर उत्सव के रूप में मानना और अपने पुत्र की चिता को अग्नि पतोहू से दिलवाना

(2) पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया और पतोहू का को दूसरा विवाह कर देने का आदेश दिया। उनके यह कार्य ऊपरी तौर पर अटपटे लगते है लेकिन, एक नई विचारधारा, नई सोच के प्रतीक है जो नारी और पुरुष को समान मानती है। उनका यह आचरण प्राचीन काल से चली आ रही रूढियों को तोड़कर विवेकशील होने का संदेश देता है।

लखनवी अंदाज- यशपाल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों खरीदा?

उत्तर लेखक ने अपनी नयी कहानी के कथ्य के बारे में एकान्त में सोचने

के इरादे से सेकण्ड क्लास के डिब्बे को चुना। सेकण्ड क्लास के डिब्बे में भीड़ भी नही होती व प्राकृतिक दृश्य का आनन्द लेने के लिए वह डिब्बा चुना।

2. 'लखनवी अंदाज' व्यंग्य रचना में लेखक ने किस पर कटाक्ष किया है?

उत्तर लेखक ने यथार्थ की उपेक्षा कर बनावटी जीवन शैली अपनाने वाले, पतनशील सामंती वर्ग पर कटाक्ष किया है।

3. नवाब साहब ने खीरे का क्या किया?

उ - नवाब साहब ने खीरे के एक-एक टुकड़े को उठाया, अपने मुहँ तक ले गए नाक से सूँघा और खिड़की से बाहर फेंक दिया।

4. लेखक को नवाब का कौनसा भाव परिवर्तन अच्छा नही लगा?

उत्तर लेखक को देखकर पहले तो अनमने भाव से नवाब का खिड़की से बाहर देखना और फिर शराफत का भाव प्रकट करने के उद्देश्य से खीरा खाने के लिए पूछना अच्छा नही लगा।

5. लेखक के अनुसार नयी कहानी के लेखक किस प्रकार के हे?

उत्तर लेखक के अनुसार नयी कहानी के लेखक बिना विचार, भाव तथा घटना और पात्रों के कहानी लिखते है सिर्फ लेखक बनने के लिए

6. 'नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थक कर लेट गयें' कथन में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए !

उ - लेखक ने नवाब खानदानी तहजीब और नजाकत पर व्यंग्य किया है कि मात्र खीरा छीलने, नमक मिर्च बुरकाने और सूंघ कर फेंक देने में ही उनको थक कर लेट जाना पड़ा।

7. नवाब साहब के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ लिखिए।

1. सनकी स्वभाव वाले व्यक्ति थे नवाब साहब

2. खानदानी रईसी व झूठी शान-शौकत दिखाने वाले नवाबी नजाकत व नफासत से पूरित व्यक्ति थे।

8. 'एब्स्ट्रैक्ट' शब्द के माध्यम से लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है?

उत्तर एब्स्ट्रैक्ट अर्थात् अमूर्त। इसके माध्यम से लेखक ने व्यंग्य किया है

(1) नवाबों की काल्पनिक जीवन शैली।

(2) नयी कहानी के लेखकों की अति सुक्ष्म धारणाओं पर।

9. 'लखनवी अंदाज' पाठ में लेखक ने खीरा खाने से क्यों मना किया।

उत्तर लेखक ने महसूस किया कि नवाब साहब सिर्फ औपचारिकता निभाने और कोरा शिष्टाचार दिखाने हेतु खाने को पूछ रहे थे इसलिए मना किया।

10. लखनवी अंदाज पाठ में नवाब साहब ने आम आदमियों की तरह खीरा क्यों नहीं खाया ?

उत्तर लेखक को अपनी नवाबी शान, खानदानी तहजीब, लखनवी नफासत और नजाकत दिखाने के लिए खीरा आम आदमियों की तरह नही खाया ।

11. लेखक ने नयी कहानी का लेखक किसे कहा है? 'तेजनवी अंदाज' पाठके आधार पर लिखिए ।

उत्तर लेखक ने लखनवी नवाबों जैसे नजाकत और नफासत वालो को नयी कहानी का लेखक कहा है।

12. 'नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया। हमने भी उनके सामने की बर्थ पर बैठकर आत्मसम्मान में आँखे चुरा ली इस कथन से नवाब साहब और लेखक के स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर इस कथन से पता चलता है कि नवाब साहब अपनी रईसी के कारण

और लेखक अपनी विद्वता के कांरण अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझते थे और एक - दूसरे के साथ के इच्छुक नहीं थे।

13. लेखकों के स्वभाव की क्या विशेषताएँ प्रकट होती है लखनवी अदांज पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर 1. लेखक कल्पनाशील, स्वाभिमानी तथा लोगो के हावभाव व मनोभाव को पढ लेने की विशेष क्षमता से युक्त होते है।

2. अपनी रचनाओं के लिए नई सामग्री की तलाश आस-पास के वातावरण से ही करते है।

14. 'ज्ञान-चक्षु' खुलने से क्या आशय है।

उत्तर लेखक नवाब साहब के खीरे खाने के तरीके को देखकर समझ गए कि यदि खानदानी रईस खाद्य-पदार्थ को बिना मुँह से खाए पेट भर सकते थे तो नयी कहानी के लेखक भी बिना विचार, पात्र, घटना के कहानी की रचना कर सकते थे।

15. पाठ 'लखनवी अंदाज' के लेखन की शैली कौनसी है

उत्तर लखनवी अंदाज व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया है।

16. 'हमने भी उनके सामने की बर्थ पर बैठकर आत्मसम्मान में आँखे चुरा ली। यह कथन किसका है।

उत्तर उक्त कथन 'लखनवी अंदाज' पाठ के लेखक यशपाल द्वारा कहा गया है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. लेखक को नवाब साहब के किन हावभावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं है?

उत्तर लेखक को देखकर नवाब साहब के चिंतन में व्यवधान पड़ा, एकांत भंग हुआ, ऐसे भाव उनके चेहरे पर आए। लेखक प्रति उपेक्षा दिखाने के लिए खिड़की से बाहर देखते है। ऐसे हाव-भाव से महसूस-हुआ कि नवाब साहब बातचीत के लिए तनिक भी उत्सुक नही है।

18. लखनवी अंदाज पाठ के आधार पर नवाब साहब के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।

उ- नवाब साहब के स्वभाव में खानदानी रईसी का मिथ्या अभिमान था। वह लेखक पर अपनी खानदानी रईसी का प्रभाव जमाना चाहते थे। बड़े मनोयोग से खीरे की फाँको को तैयार करके, केवल सूँघकर ही उसका स्वाद लेने का अभिनय किया वह रईसों की नजाकत नफासत और तहजीब का प्रदर्शक करके लेखक को हीन व खुद को विशिष्ट दिखाना चाहता था।

19. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी कहानी लिखी जा सकती है? यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत है?

उत्तर किसी भी कहानी को लिखने के लिए विचार, घटना और पात्रों का होना आवश्यक है क्योंकि बिना विचार के कहानी बन नही सकती बिना घटना के कथानक आगे बढ नही सकता और बिना पात्रों के कहानी कही नही जा सकती। अत: यशपाल का यह कथन नयी कहानी पर व्यंग्य मात्र हैं। हम यशपाल के विचार से सहमत नही है।

20. नवाब साहब ने खीरे को खाने योग्य किस प्रकार बनाया?

उत्तर नवाब साहब ने खीरों को पानी से धोकर तौलिये से पौंछा, फिर चाकू से खीरों के सिरो को काटकर उन्हें गोद कर झाग निकाला, फिर सावधानीपूर्वक छीलकर फाँको को करीने से तौलिये पर सजाकर उन पर जीरा, नमक मिला मिर्च छिड़क कर खाने योग्य बनाया।

21. 'लखनवी अंदाज' से हमें क्या संदेश मिलता है?

उत्तर लखनवी अंदाज नामक पाठ से हमें यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति को दिखावटी जीवन-शैली से दूर रहना चाहिए। काल्पनिकता को छोड वास्तविकता में जीना चाहिए और वह हमारे व्यवहार और कार्यो में भी दिखना चाहिए।

22. नवाब साहब ने गर्व से लेखक की ओर देखा। उनको किस बात का गर्व था ?

उत्तर नवाब साहब ने बड़ी नजाकत व नफासत से खीरे को सूँघकर फेंक दिया और स्वाद तथा तृप्ति का प्रदर्शन किया। ऐसा करके उन्होने खानदानी नवाबी रईसी का प्रदर्शन किया और गर्व महसूस किया।

23. नवाब साहब की खीरा सेवन की प्रक्रिया को देखकर लेखक के मन में क्या विचार आया?

उत्तर लेखक के मन में विचार आया कि खीरे के इस्तेमाल का यह ढंग सूक्ष्म या काल्पनिक तरीका तो माना जा सकता है लेकिन इस तरीके से पेट भरना कैसे संभव है? पेट की भूख तो कोई खाद्य पदार्थ जब मुँह से खाया जाए और पेट मे पहुँचे तभी शांत होती है।

24. नवाब साहब ने लेखक से दोबारा खीरा खाने का आग्रह क्यों किया होगा।

उत्तर लेखक के डिब्बे में प्रवेश करते समय नवाब साहब ने दुआ- सलाम करते की साधारण शिष्टता भी नही दिखाई थी। पहली बार जीरा खाने को कहना केवल दिखावा था अपनी अशिष्टता को छिपाने का। दूसरी बार लेखक से जीरे खाने में आग्रह में सज्जनता का पुट था लेकिन इसका कारण शायद यह था कि दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति में जीरा खाना शिष्टता के खिलाफ था।

लेखक परिचय

1. यशपाल का व्यक्तित्व व कृतित्व परिचय दीजिए।

उत्तर हिन्दी के प्रमुख कहानीकारों में से एक 'यशपाल' का जन्म 3 दिसम्बर 1903 को पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ था। सन 1921 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर स्वदेशी आन्दोलन में जमकर भाग लिया। अमर शहीद भगत सिंह के साथ मिलकर इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। इनकी साहित्य सेवा प्रतिभा से प्रभावित होकर भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' की उपाधि प्रदान कर इनको सम्मानित किया। यशपाल के लेखन की प्रमुख विधा उपन्यास है लेकिन इन्होंने लेखन की शुरुआत कहानी से की।

इनके प्रमुख कहानी संग्रह है -ज्ञानदीप, तर्क का तूफान, पिंजरे की उड़ान, फूलों का कुर्ता ।

इनके प्रमुख उपन्यास है -दादा कामरेड, झूठा सच, दिव्या, मेरी तेरी उसकी बात।

देहावसान- 26 दिसम्बर 1976 में हुआ।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

1. हम गौर कर रहे थे..... क्यों नहीं बन सकती ?

उत्तर **संदर्भ**- प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2' में संकलित व्यंग्य रचना 'लखनवी अंदाज' से लिया गया है इसके लेखक 'श्री यशपाल' है।

प्रसंग- इस अंश में लेखक ने नवाब साहब द्वारा खीरे सेवन के नवाबी तौर-तरीके के बारे में बताया है। इसके साथ ही 'नई कहानी' की रचना को समर्थन प्रदान किया है।

व्याख्या - लेखक ने नवाब साहब की खीरा इस्तेमाल करते, उसकी सुगन्ध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होते हुए की प्रतिक्रिया को गौर से देख रहे थे। लेखक कहते है कि इस तरीके को खीरे के इस्तेमाल की सूक्ष्म, नफासत भरा रूपहीन या काल्पनिक तरीका कहा जा सकता है परन्तु इस तरीके से पेट तो तृप्त नही हो सकता था। लेखक ऐसा सोच रहे थे कि नवाब साहब ने ऊँची डकार ली और लेखक को यह जताया कि उनका पेट भी भर गया था। इसके अलावा लेखक पर अपनी नवाबी रईसी का प्रभाव डालने के लिए कहते है कि खीरा खाने में स्वादिष्ट तो होता है लेकिन कठिनाई से पचता है और पाचन तंत्र पर बुरा प्रभाव डालता है। नवाब साहब के ऐसा कहते ही लेखक के ज्ञान की आँखे खुल जाती है और व्यग्य के रूप में कहते है कि ऐसे ही होते है 'नयी कहानी के लेखक'। लेखक नयी कहानी के लेखकों के लिए व्यंग्यात्मक कटाक्ष करते हुए कहते है कि जब खीरे की सुगन्ध और स्वाद की कल्पना से पेट भर सकता है, डकार आ सकती है तो फिर नयी कहानी के लेखक भी बिना विचार, घटना और पात्रों के नयी कहानी बना सकते है।

विशेष- (1) 'नयी कहानी' के लेखक को पर व्यग्य किया है कि वे बिना विचार, घटना, पात्रों के लेखक बनने की इच्छा से कहानी रचना करते है।

(2) भाषा में उर्दू मिश्रित हिंदी शब्दो का प्रयोग किया है।

(3) नवाबी रईसो के बनावटी तौर तरीकों पर प्रकाश डाला है।

2. 'ठाली बैठे, कल्पना करते .....सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ?

उत्तर **संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग - 2 में संकलित व्यंग्य रचना 'लखनवी अंदाज' से लिया गया है।

इसके लेखक 'यशपाल' है।

प्रसंग- इस अंश मे लेखक नवाब साहब के संकोच और असुविधा का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या - लेखक कहते है खाली बैठे रहने के कारण कल्पना करते रहने की उनकी पुरानी आदत थी। अत: नवाब साहब के आचरण पर विचार करने लगे कि उन्हें असुविधा क्यों अनुभव हो रही थी। लेखक सोचते है कि नवाब साहब ने कम खर्च और बिल्कुल अकेले यात्रा करने के उद्देश्य से सेकण्ड क्लास का टिकिट खरीद लिया हो और अब एक सज्जन के आ जाने से उनकी इस योजना में बाधा पड़ रही थी। लखनऊ के नवाब अपनी रईसी व शानौशौकत के लिए मशहूर थे। इसलिए वे नही चाहते थे कि लखनऊ का कोई बड़ा आदमी उन्हें सेकण्ड क्लास में यात्रा करते देखे क्योंकि ऐसा सफर उनके सम्मान के विरुद्ध होता। लेखक सोचता है कि सफर में समय व्यतीत करने के लिए खीरे खरीदे होगें पर एक सफेदपोश के सामने खीरे जैसी तुच्छ वस्तु खाने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे।

विशेष - (1) लेखक ने नवाब साहब की मानसिकता का वर्णन किया है।

(2) भाषा सहज, सरल व बोधगम्य है।

(3) उर्दू मिश्रित हिन्दी शब्दावली का प्रयोग किया है।

(4) शैली व्यंग्यात्मक है।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन' इन शब्दों से लेखक ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर इन शब्दों के द्वारा लेखक ने लखनऊ के उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो खुद को किसी नवाबी खानदान का वंशज मानते हुए आम आदमियों से श्रेष्ठ मानते है। इनकी बोलचाल, वेशभूषा में अभी भी वही नजाकत व नफासत का दिखावा प्रकट होता है। खानदानी रईसी के अभिमान रखने की मानसिकता पर व्यंग्य किया है उनके आचरण में दिखावटीपन प्रकट होता है। वे खुद को आम आदमियों से श्रेष्ठ समझते है और नवाबी स्तर से कम का कोई काम करते देखे जाने पर ये लोग परेशान हो जाते है अत: लेखक ने इन शब्दों का प्रयोग किया।

2. 'लखनवी अंदाज़' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर लेखक यशपाल ने एक लखनवी नवाब साहब के खीरे के इस्तेमाल के लखनवी अंदाज को अपनी कहानी का विषय बनाया है। नवाब साहब खीरे को सूँघकर ही ।उसका स्वाद का आनन्द प्राप्त कर लेते है और डकार लेकर पेट भर जाने का दिखावा भी करते है ।लेखक ने खानदानी रईसी के इन दिखावों पर व्यंग्य किया है। साथ ही साथ इसके माध्यम से 'नयी कहानी' के लेखको पर भी कटाक्ष किया है। बिना विचार घटना व पात्रों के कहानी लिखने को उसने नयी कहानी के लेखकों का लखनवी अंदाज ही माना है।

इस प्रकार 'लखनवी अंदाज' शीर्षक कहानी के कथ्य और उद्देश्य को पूरी तरह सार्थकता प्रदान करता है अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

मानवीय करूणा की दिव्य चमक
सर्वश्वर दयाल सक्सेना

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. फादर बुल्के की क्या चिन्ता थी?

उत्तर- फादर बुल्के की चिन्ता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित देखने की थी। वह हर मंच से इसी चिन्ता और कष्ट को प्रकट करते थे।

2. फादर बुल्के किस रूप में सन्यासी थे? क्यों?

उत्तर- फादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे लेकिन मन से सन्यासी नहीं थे। वे समाज के साथ स्नेह ओर प्रेम के साथ संबंध निभाते थे।

3. फादर बुल्के ने अपनी शोध प्रबंध का विषय क्या रखा?

उत्तर- फादर बुल्के ने अपनी पी.एच.डी (शोध प्रबंध) का विषय रामकथा: उत्पत्ति और विकास रखा।

4. लेखक ने जीवन में फादर का स्थान सर्वोच्च था। कथन को उदाहरण सहित कीजिए।

उत्तर- लेखक अपने जीवन में फादर को सर्वोच्च स्थान देते थे। उदाहरण के लिए लेखक ने अपने पुत्र का अन्नप्राशन संस्कार फादर से ही करवाया था।

5. लेखक ने फादर को सबसे अधिक छायादार, फल-फूल ओर गंध से भरा क्यों कहाँ है?

उत्तर- एक छायादार, फल-फूल और गंध से भरा वृक्ष जिस प्रकार आश्रय लेने वालों को अपनी छाया, गन्ध , फल-फूल से आनन्दित करता है, उसी प्रकार फादर भी ममता, स्नेह और करूणा से उनके आश्रय में आने वाले को प्रदान करके आनन्दित महसूत करवाते थे।

6. पाठ 'मानवीय करूणा की दिव्य चमक' किस विधा में रचित है?

उत्तर- पाठ 'मानवीय करूणा की दिव्य-चमक' संस्मरण विधा में रचित है। लेखक ने फादर कामिल बुल्के के जीवन के बारे में बताया है।

7. फादर की जन्मभूमि का नाम बताइये।

उत्तर फादर कामिल बुल्के का जन्म 'रैम्सचैपल' बेल्जियम, यूरोप मे हुआ था।

8. फादर की मृत्यु किस रोग से हुई थी?

उत्तर फादर कामिल बुल्के की मृत्यु गैंग्रीन (जहरबाद) से हुई थी।

लघुतरात्मक प्रश्न

1. मानवीय करुणा की दिव्य चमक किसे और क्यों कहा गया है?

उत्तर माननीय करुणा की दिव्य चमक फादर कामिल बुल्के को कहा गया है क्योकि उनके हृदय में सभी के लिए असीम प्रेम, ममता और करुणा भरी थी । मानवीय गुणों के दिल्य प्रकाश से उनका व्यक्तित्व चमकता था।

2. फादर को याद करना लेखक को उदास शान्त संगीत को सुनने जैसा क्यों प्रतीत होता है

उत्तर फादर करुणा, स्नेह और अपनत्व की प्रतिमूर्ति थे। वे सभी से खुले दिल से मिलते थे। उनके न रहने पर उनको याद करके उदासी और शान्ति उसी प्रकार छा जाती है। जैसे उदास संगीत को सुनने पर छा जाया करती है।

3. लेखक ने फादर कामिल बुल्के को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग क्यो बताया है?

उत्तर फादर बुल्के बेल्जियम में जन्मे परन्तु उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया। यहाँ की संस्कृति में रचे-बसे ही नहीं बल्कि हिन्दी भाषा का अध्ययन करते हुए राम कथा पर शोध ग्रंथ लिखा। भारतीय परिवारों के उत्सवों में भी भाग लिया। अत: भारत, भारतीय भाषा, भारतीय संस्कारों से प्रेम के कारण ऐसा कहा है।

4. फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी?

उत्तर फादर का जीवन देवदार के वृक्ष के समान विशाल था। 'परिमल' संस्था के सदस्यों को परिवार जैसा मानते थे और उन पर परिवार के मुखिया के समान वात्सल्य लुटाते थे। उत्सवों और संस्कारों पर पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे और उनकी शरण में आने वाले हर व्यक्ति पर प्रेम और कृपा की छाया रखते थे।

लेखक परिचय

1. लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के व्यक्तित्व व कृतिव्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर **व्यतित्व**- बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म सन् 1927 में जिला बस्ती, उत्तरप्रदेश में हुआ था। वे कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार व नाटकार थे। मध्यमवर्गीय जीवन की महत्वकांक्षाओं, सदनो, संघर्ष, शोषण, हताशा और कुंठा का चित्रण उनके साहित्य मे मिलता है। 'चरचे और चरखे' नाम में दिनमान से स्तम्भ लिखते थे।

कृतित्व - उपन्यास - पागल कुत्तों का मसीहा, सोया हुआ जल

कविता संग्रह- काठ की घंटियां, कुआनों नदी, जंगल का दर्द, खूंटियों पर टंगे लोग।

कहानी संग्रह-लड़ाई

नाटक- बकरी, खूँटियो पर टंगे लोग के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1983 में इनका निधन हो गया गया।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

1. फादर को याद करना एक उदास .....देवदारू की छाया में खड़े हों।

उत्तर **संन्दर्भ**- प्रस्तुत गद्यांश पाठयपुस्तक क्षितिज भाग-2 में संकलित मानवीय करुणा की 'दिव्य चमक' संस्मरण से लिया गया हैं। इसके लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना है।

प्रसंग - इस अंश में लेखक स्मृतियों के आधार पर फादर बुल्के के व्यक्तित्व के बारे में बता रहे है।

व्याख्या - लेखक के अनुसार फादर को याद करना एक उदास संगीत को सुनने जैसा है। फादर को देखना दया-प्रेम, करणा के जल में स्नान करने जैसा है। फादर की आँखो से हर मिलने वाले के लिए करुणा भरे स्नेह जल की वर्षा होती है। लेखक जब उनसे बात करते तो उनका हृदय निरन्तर कर्मशील बने रहने के दृढ़ निश्चय से भर जाता था। 'परिमल' संस्था के सभी सदस्य एक परिवार की भांति व्यवहार करते थे। फादर बुल्के मुखिया की भाँति रहते थे। निर्लिप्त भाव से हमारे हंसी मजाक में शामिल होते, गंभीर बहस करते हमारी लिखी रचताओं पर निष्पक्ष, निडर राय रखते थे। उत्सव और संस्कारों में बड़े भाई या पुरोहित जैसे आगे खड़े रहते। अपने आशीर्वाद से मार्गदर्शन किया करते थे। लेखक अपने बच्चे के अन्नप्राशतन्न संस्कार के दिन को याद करते है जब फादर ने उनके बच्चे के मुँह में अन्न का पहला दाना डाला था। उस समय उनकी आँखों में प्रेम और वात्सल्य का भाव

लेखक याद करते है। फादर देवदारू के वृक्ष की भाँति उनके परिवार को आशीर्वाद व स्नेह छाया से आश्वस्त किए रहते थे।

विशेष - 1. भाषा सहज, सरल व बोधगम्य है।

2. संस्मरण विधा में लिखित है।

3. मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति फादर बुल्के के व्यक्तित्व के माध्यम से की गई है।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न- फादर कामिल बुल्के का व्यक्तित्व किस प्रकार का था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- फादर बुल्के का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक था। गोरा रंग, नीली आँखे और चेहरे पर सफेद झलक देती हुई दाढ़ी थी। स्नेह और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थे। बेल्जियम (यूरोप) के रैम्सचैपल में जन्मे एक ईसाई सन्यासी थे। भारतीय संस्कृति से प्रभावित, फादर बुल्के ने अंग्रेजी हिंदी शब्दकोष तैयार किया ।'राम कथा उत्पत्ति और विकास' शोध प्रबंध तैयार किया। फादर का जीवन उस छायादार फलदार सुगंधित वृक्ष के समान था जो उनकी शरण में आने वाले सभी लोगो को शीतलता प्रदान करता था। मानवीय गुणों के दिव्य प्रकाश से आलोकित फादर बुल्के हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे। उनकी मृत्यु जहरबाद से होना ईश्वर का फादर के प्रति बड़ा अन्यायपूर्ण था।

एक कहानी यह भी- मन्नू भण्डारी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तर लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव हुआ था।

2. मन्नू भंडारी के पिता किस कार्य मे लगे हुए थे?

उत्तर मन्नू भंडारी के पिता अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश (विषयवार) तैयार करने का कार्य रहे थे।

3. मन्नू भंडारी के परिवार में विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता क्या थी?

उत्तर मन्नू भंडारी के परिवार में विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी कि उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक की हुई हो।

4. 'एक कहानी यह भी' किस शैली में लिखा गया है?

उतर एक कहानी यह भी आत्मकथा शैली/विधा में लिखा गया है।

5. लेखिका मन्नू भंडारी बचपन में कैसी दिखती थी?

उत्तर लेखिका बचपन में मरियल-सी, दुबली एवं काली दिखती थी।

6. लेखिका मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव कैसा था?

उतर लेखिका के पिता एक तरफ कोमल, संवेदनशील तो दूसरी तरफ क्रोधी, शक्की और अहंकारी थे।

7. 'भग्नावशेषों को ढोते पिता' ऐसा लेखिका ने क्यों कहा है?

उत्तर लेखिका के पिता की आर्थिक स्थिति खराब हो जाने के कारण अपने पुराने गुणों के बचे हुए अंशो के सहारे जी रहे थे।

8. लेखिका मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव शक्की क्यो हो गया था?

उत्तर लेखिका के पिता अपनों के द्वारा ही विश्वासघात करने के कारण शक्की स्वभाव के हो गए थे।

9. लेखिका का साहित्यिक दुनिया से परिचय किसने करवाया?

उत्तर लेखिका का साहित्यिक दुनिया से परिचय हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने करवाया। उन्होने लेखिका को चुन-चुन कर साहित्य पढ़ने की सलाह दी।

10. आत्मकथ्य किसे कहते हैं?

उत्तर आत्मकथ्य में व्यक्ति अपने जीवन में घटित घटनाओं के बारे बहुत कम बातें बताता हैं या जीवन मे घटित कुछ घटनाओं की तरफ इशारा मात्र करता है।

11. लेखिका का व्यक्तित्व किन-किन व्यक्तियों से प्रभावित हुआ?

उत्तर लेखिका का व्यक्तित्व उनके पिता व उनकी हिन्दी की अध्यापिक शीला अग्रवाल से अत्यधिक प्रभावित हुआ।

12. कॉलेज के प्रिंसिपल से मिलने जाते समय लेखिका के पिता की मनः स्थिति कैसी थी?

उत्तर प्रिसिपल द्वारा लेखिका के पिता को पत्र लिखकर शिकायत की गई और उन्हें मिलने बुलाया। उस समय वे अत्यन्त क्रोधित थे।

13. लेखिका मन्नू भण्डारी द्वारा रचित 'एक कहानी यह भी' में किसका व्यक्तित्व उभर कर आया है?

उत्तर इसमें लेखिका के किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके पिता जी ओर कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व उभर सामने आया है।

14. लेखिका के पिता के मित्र डॉ. अम्बालाल प्रसन्न क्यों हुए थे?

उत्तर आजाद हिंद फौज पर मुकदमा चलाने के विरोध में लेखिका द्वारा दिये गये जोशीले भाषण को सुनकर उनके पिता के मित्र डॉ. अम्बालाल प्रसन्न हुए थे।

15. लेखिका और शीला अग्रवाल को कॉलेज से क्यों निकाला गया ?

उत्तर लड़कियों को भड़काने के लिए और अनुशासन व्यवस्था बिगाड़ने के कारण शीला अग्रवाल तथा लेखिका को कॉलेज से निकाला गया।

16. क्या आप भी मानते हैं कि लेखिका मन्नू भण्डारी को उपलब्धियाँ संयोगवश मिली थी ?

उत्तर नहीं, मैं यह नहीं मानता। लेखिका की सफलता प्रतिभा, चिंतन और मौलिक सृजन का परिणाम है। हिन्दी की अनेक संस्थाओं द्वारा उनको सम्मानित किया जाना भी यही प्रमाणित करता है।

17. भटियारखाना शब्द से क्या आशय है?

उत्तर- भटियारखाना शब्द का अर्थ होता है वह स्थान जहाँ भट्टी या चूल्हा जलता है।

18. लेखिका और उसके पिता के बीच टकराहट का क्या कारण था?

उत्तर- लेखिका मन्नू भंडारी और उनके पिता टकराहट का कारण था उन दोनों के विचारों में भिन्नता होना।

लघुतरात्मक प्रश्न

1. लेखिका के मन में हीनता का भाव क्यों पैदा हो गया था?

उत्तर लेखिका मन्नू भंडारी बचपन में काली दुबली व मरियल सी थी। उसकी बड़ी बहन सुशीला गोरी, स्वस्थ और हँसमुख थी। उनके पिता उनकी तुलना बहन से करते थे। जिस कारण लेखिका का आत्मविश्वास समाप्त हो गया और उन्हे लगता कि सफलता योग्यता के कारण नहीं बल्कि संयोगवश मिली है।

2. लेखिका मन्नू भंडारी अपनी माँ को आपना आदर्श क्यो नहीं बना सकी? कारण सहित बताइए।

उत्तर लेखिका अपनी माँ को अपना आदर्श इसलिए नही बना सकी क्योंकि

1. माँ अनपढ़ होने के कारण अधिकारों के प्रति जागरुक नहीं थी।
2. पिता के अन्याय को भाग्य मानकर सहती थी।
3. माँ के त्याग और सहनशीलता को उनकी असहाय और मजबूरी का परिणाम मानती थी।

3. लेखिका किसके सहयोग से जागरूक नागरिक बन पायी थी?

उत्तर- लेखिका के पिता ने उन्हें रसोईघर से हटाकर सामाजिक समस्याओं से अवगत करवाया। राजनैतिक बहसों में भाग लेकर देश में हो रही गतिविधियों से अवगत करवाया। जिससे वह उनके सहयोग से जागरूक नागरिक बन पायी।

4. 'कितनी तरह के अन्तर्विरोधों के बीच जिते थे' - वे लेखिका ने पिता के व्यक्तित्व के किन अन्तर्विरोधों का उल्लेख किया है?

उत्तर लेखिका के पिता परस्पर विरोधी स्थितियों और आकांक्षाओं के साथ जीना चाहते थे। एक तरफ तो वे विशिष्ट बनने और बनाने की प्रबल लालसा रखते थे तो दूसरी तरफ उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा और छवि को बनाये रखने की भी चिन्ता रहती थी। सम्मान और विशिष्टता प्राप्त करने के लिए उसका मूल्य चुकाने का साहस उनमें नहीं था।

5. 'एक कहानी यह भी' लेखिका ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर इस आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' से हमें संदेश मिलता है कि स्वतंत्रता और जन आंदोलनों मे स्त्री-पुरुष की बराबरी की भागीदारी होनी चाहिए। माता पिता को संतान के व्यक्तित्व विकास में बाधक नही बनना चाहिए।

6. मन्नू भंडारी की विशेषताएँ 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्न प्रकार से है-

1. विद्रोही स्वभाव- लेखिका प्रारम्भ से ही हठी व विद्रोही स्वभाव की थी। लेखिका का अपने पिता से वैचारिक मतभेद प्रारम्भ से ही था।

2. नेतृत्व कौशल– विद्यार्थी जीवन से ही लेखिका हड़ताल, जुलुस, भाषण, प्रभात-फेरी में बढ़-चढ़ कर भाग लेती थी।

3. साहित्यिक चेतना- पिता के कहने पर राजनैतिक बहसों में भाग लेती थी और शीला अग्रवाल के प्रभाव से लेखकीय व्यक्तित्व उभरकर सामने आया है।

7. लेखिका के पिता ने रसोई को भटियारखाना कहकर क्यों सम्बोधित किया है?

उत्तर लेखिका के पिता का आग्रह रहता था कि लेखिका रसोई से दूर रहे वे रसोई को भटियारखाना कहते थे। उनका मानना था की इस भटियारखाना में रहने से व्यक्ति की प्रतिभा ओर क्षमता भट्टि में चली जाती है अर्थात् नष्ट हो जाती है। इसे वे समय की बर्बादी मानते थे।

8. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर लेखिका के पिता, लेखिका को देश-समाज के प्रति जागरूक बनाना चाहते थे किन्तु घर तक ही सीमित रखना चाहते थे। लेखिका को उनके पिता के द्वारा निर्धारित सीमा स्वीकार नहीं थी। वह सक्रिय रूप से आंदोलन में भाग लेना चाहती थी।

लेखक परिचय

1. लेखिका मन्नू भण्डारी का जीवन व कृतित्व परिचय लिखिए।

उत्तर हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार मन्नू भंडारी का जन्म मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव मे 3 अप्रैल, 1931 को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अजमेर, राजस्थान में हुई थी। इनकी कहानियों में नारी जीवन की विडम्बना तथा पीड़ा का मार्मिक चित्रण हुआ है। उनकी रचनाओं मे स्त्री मन से जुड़ी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य के क्षेत्र में इनकी उपलाब्धयों के लिए इन्हें हिन्दी अकादमी शिखर सम्मान, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुस्कार प्रदान किये जा चुके है।

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न है-

कहानी संग्रह - मैं हार गई, एक प्लेट सैलाब, त्रिशंकु तथा यही सच है।

उपन्यास - महाभोज तथा आपका बंटी

इनका देहावसान 15 नवम्बर 2021 को 90 वर्ष की अवस्था में हुआ।

व्याख्या

1. लड़कियों को जिस उग्र में स्कूली ..... क्या कुछ हो रही है?

उत्तर **संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज गाग-2' में संकलित आत्मकथ्य 'एक कहानी यह भी ' से लिया गया है। इसकी लेखिका मन्नू भंडारी है।

प्रसंग - इस अंश में लेखिका अपने पिता के व्यक्तित्व के बारे में बता रही है।

व्याख्या - लेखिका कहती है कि जिस समय लड़कियों को स्कूली शिक्षा देने के साथ-साथ कुशल गृहिणी और पाक-कला में निपुण किया जाता है। उनके पिता लेखिका से आग्रह करते है कि वे रसोई से दूर रहे। रसोई को वे भट्टिखाना कहते थे उनके अनुसार रसोई में रहना, अपनी काबिलियत और क्षमता को खत्म करना था। इसलिए लेखिका के पिता भट्टिखाना से लेखिका को दूर रखने के लिए आग्रह करते थे। लेखिका के पिता का प्रिय शौक बहस करना था, अत: आए दिन उनके घर पर राजनैतिक दलो के लोग इकट्ठा होते व बहस करते थे। लेखिका जब चाय नाश्ता देने जाती थी तो पिताजी उनको वहीं बैठा लेते और उन सबकी बातें सुनने और समझने के लिए कहते थे। इस समय स्वतंत्रता आंदोलन चरम पर था अत: लेखिका के पिता चाहते थे कि लेखिका देश-दुनिया में क्या हो रहा है इसको जाने व समझे।

विशेष : 1. शैली आत्मकथात्मक है।

2. भाषा सरल, सहज व बोधगम्य है।

3. शब्दों का वाक्य विन्यास अद्‌भुत है।

2. जब रगो में लहू की जगह ..... कोप से बच गई थी।

उत्तर **संदर्भ**- प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-2 में संकलित आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है। इसकी लेखिका मन्नू भंडारी है।

प्रसंग- इस अंश मे लेखिका अपने पिता के चरित्र की कमजोरियों और व्यवहार के बारे में अवगत करवा रही है।

व्याख्या - लेखिका कहती है जब युवाओं की नसों में रक्त लावा बन जाता है अर्थात रक्त में क्रोध, उत्साह, उन्माद मिलकर लावे का रूप ले लेता है तब उनके सारे डर, भय नष्ट हो जाते है। इसका ज्ञान लेखिका को तब हुआ जब उनकी क्रोध से सबसे डरा दने वाले पिताजी से अपने विचारों को लेकर टकराहट शुरू हुई। यह टकराहट लेखिका ने राजेन्द्र यादव से शादी की तब तक चलती रही।

लेखिका कहती है कि उनके पिता के व्यवहार की एक कमजोरी थी 'यश प्राप्त करने चाह है' उनके जीवन का यह सिद्धांत था कि व्यक्ति को अपना जीवन विशिष्ट बनकर जीना चाहिए। सम्मान, जश प्राप्त हो ऐसे कार्य करने चाहिए। जीवन में प्रभुत्व और प्रतिष्ठा प्राप्त हो। उनकी इसी चाह के कारण लेखिका कई बार उन के कोप से बच गई क्योंकि उनके द्वारा किए गए कार्यो से समाज में यश प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त हो रहा था।

विशेष - 1. शैली आत्मकथात्मक है।

2. भाषा, सरल, सहज, बोधगम्य है।

3. शब्दों का वाक्य विन्यास अद्‌भुत है।

निबंधात्मक प्रश्न

1. मन्नू भंडारी के पिता के व्यक्तिव की विशेषताएँ पाठ 'एक कहानी यह भी' के आधार पर बताइये।

उत्तर मन्नू भंडारी के पिता एक विरोधाभासी व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। उनकी विशेषताएँ जो अनुकरणीय है वह है -

1. वे बेहद संवेदनशील और कोमल हृदय थे अपने बच्चों की भावनाओं को समझते थे।

2. शिक्षा के प्रति जागरुक थे। अपने घर पर ही आठ-दस बच्चों को शिक्षित करने का दायित्व खुशी से पूरा करते थे।

3. देशप्रेम की भावना रखते थे।

4. समाज सुधार और राजनीति में दिलचस्पी रखते थे।

5. बेटी के अच्छे कार्यों पर व भाषण आदि पर गर्व करते और देश प्रेम के प्रति अग्रसर करते थे ।

6. विशिष्ट बनने और सम्मान हासिल करने की प्रबल भावना रखते थे साथ ही सामाजिक छवि भी उत्तम रखना पसंद करते थे।

2. लेखिका के व्यक्तित्व को किस-किस ने प्रभावित किया और कैसे?

उत्तर लेखिका के व्यक्तित्व को उनके पिता और उनकी हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने अत्यधिक प्रभावित किया।

पिता का प्रभाव - उनके पिता का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही रूपों से प्रभाव पड़ा। लेखिका के पिता ने लेखिका को राजनैतिक बहसों में शामिल करके समाज व देश के प्रति जागरूक बनाया। रसोई तथा घर के काम से दूर रखकर उसकी प्रतिभा को निखरने का अवसर प्रदान किया। कॉलेज में प्रभुत्व की प्रशंसा करके नेतृत्व क्षमता को प्रोत्साहित किया लेकिन पिताजी के गोरे रंग के प्रति लगाव ने लेखिका में हीनता का भाव पैदा किया। पिताजी के शक्की और क्रोधी स्वभाव की भी लेखिका के व्यक्तित्व में झलक दिखाई देती है। हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया व इसके अलावा स्वतंत्रता आंदोलन में खुलकर भाग लेने के प्रेरित किया और खोया हुआ आत्मविश्वास लौटाया।

स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन
महावीर प्रसाद द्विवेदी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन' निबंध किस पत्रिका में व किस नाम से छापा गया था?

उत्तर- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने यह निबंध सन् 1914 में सरस्वती पत्रिका में 'पढ़े-लिखों का पांडित्य' शीर्षक से छापा था।

2. बौद्ध ग्रंथ की रचना किस भाषा में हुई थी?

उत्तर- प्राकृत भाषा में।

3. स्त्री शिक्षा के विरोधियों के दो कुर्तकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- स्त्री शिक्षा के विरोधी यह तर्क देते है कि -

1. स्त्री को पढ़ाना उसके तथा गृह-सुख के नाश का कारण है।

2. स्त्री को पढ़ाना अनर्थकारी और उसमें अभिमान उत्पन्न करता है।

4. शकुन्तला ने दुष्यंत को कटु वचन क्यों कहे थे?

उत्तर- दुष्यंत ने शकुन्तला से गंधर्व विवाह किया था। बाद में उसे पहचानने से मना कर दिया था। इसलिए शकुन्तला ने दुष्यंत से कटु वचन कहे।

5. प्राकृत में लिखे दो ग्रंथों का नाम लिखिए।

उत्तर- प्राकृत में लिखे ग्रंथ है- 'गाथा सप्तशती' और 'कुमारपाल चरित'।

6. 'प्राचीन काल में भारत में नारी शिक्षा प्रचलित थी' कोई दो प्रमाण इस तथ्य की पुष्टि में जो लेखक द्वारा बताये गये है। लिखिए

उत्तर- प्राचीन भारत में नारी शिक्षा प्रचलित थी यथा-

1. गार्गी ने शास्त्रार्थ बड़े-बड़े ब्रहवादियों को और मंडन मिश्र की पत्नी ने शंकराचार्य को हराया था।

2. रूक्मणी द्वारा श्रीकृष्ण को लिखा गया पत्र।

7. 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' लेख में किन लोगों पर व्यंग्य किया गया है?

उत्तर- स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन लेख में स्त्री शिक्षा के विरोधी लोगों पर व्यंग्य किया गया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है'। द्विवेदी जी के इस कथन का आशय क्या है?

उत्तर किसी भी स्वस्थ समाज के निर्माण में स्त्री और पुरुष की बराबर भागीदारी होती है। यदि शरीर का आधा भाग अविकसित रहेगा तो पूरा शरीर सबल नही होगा। इसलिए यदि स्त्रियों को निरक्षर रखा जाएगा तो आधा समाज अशिक्षित रह जाएगा जिससे समाज का पूर्ण विकास नही हो पाएग।

2. लेखक ने प्राचीन भारत की कौन-कौन सी विदुषी महिलाओं के नामों का उल्लेख स्त्रियों के शिक्षित होने के प्रमाणस्वरूप किया है?

उत्तर महावीर प्रसाद द्विवेदी ने वैदिक और पौराणिक समय की अनेक सुशिक्षित, विदुषी स्त्रियों जैसे- विश्वम्भरा, विज्जा गार्गी, ऋषि अत्रि की पत्नी, सीता, रुक्मिणी, मंडन मिश्र की पत्नी, त्रिपिटिक की थेरी गाथाओं की कवयित्रियाँ, शकुन्तला के नाम का उल्लेख व उनके विद्वता के प्रमाण प्रमाण प्रस्तुत किये है।

3. पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना क्या उनके अनपढ़ होने का सबूत है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्राचिन समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना उनके अनपढ़ होने का सबूत नहीं है क्योंकि-

1. उस समय संस्कृत कुछ गिने-चुने व्यक्ति ही बोलते थे।
2. सर्वसाधारण जनों और स्त्रियों की भाषा प्राकृत ही थी।
3. बौद्ध और जैन धर्म ग्रंथ भी प्राकृत भाषा में रचे गये।
4. भगवान शाक्यमुनि और उनके शिष्य प्राकृत भाषा में ही धर्मोपदेश देते थे।

4. लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी का जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर युग निर्माता महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 1864 में गाँव दौलतपुर, जिला रायबरेली उत्तर प्रदेश मे हुआ। आप हिंदी के पहले व्यवस्थित संपादक, भाषा वैज्ञानिक, इतिहाकार, अर्थशास्त्री, पुरातत्ववेता, समालोचक और अनुवादक थे। आपने हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया । व्याकरण और वर्तनी के नियम स्थिर किए। खडी बोली को प्रतिष्ठित किया। 1903 में हिन्दी मासिक पत्रिका 'सरस्वती' का सम्पादन किया।

प्रमुख कृतियाँ - रसज्ञ रंजन, साहित्य सीकर, अद्‌भुत आलाप, सम्पतिशास्त्र, महिला मोद, उनका सम्पूर्ण साहित्य महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली के पन्द्रह खण्डों में प्रकाशित है। सन् 1938 में उनका देहांत हो गया।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

1. -शिक्षा' बहुत व्यापक .....दोष है - वह अनर्थकर कर है।

उत्तर **संदर्भ**- प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-2 में संकलित लेख 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी तर्कों का खण्डन' से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी है।

प्रसंग - प्रस्तुत अंश में द्विवेदी जी ने शिक्षा प्रणाली में सुधार व स्त्री शिक्षा के समर्थन में विचार प्रकट किए हैं।

व्याख्या - शिक्षा शब्द की व्यापकता को बताते हुए लेखक कहते है कि शिक्षा ज्ञानप्रदायिनी है। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है यह कहकर कि देश की शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं है स्त्री शिक्षा का विरोध करने वालों को शिक्षा प्रणाली में सुधार करना चाहिए। पढ़ने-लिखने को दोष नही देना चाहिए। ऐसे लोगों से निवेदन करते हुए लेखक कहते है कि स्त्रियों को कितना पढ़ाना है। क्या पढ़ाना है, कैसे पढ़ाना है से संबंधित बातों पर राय प्रकट करे, स्त्रियों को कहाँ शिक्षा दें। घर या विद्यालय में ऐसी बातों पर विचार करें, बहस करे। पर ईश्वर के लिए यह मत कहिए कि शिक्षा अनर्थकारी है क्योंकि शिक्षा सर्वांगीण विकास करती है।

विशेष : 1. भाषा सरल, सहज व बोधगम्य है।

2. शिक्षा, स्त्री-शिक्षा संबंधी विषय पर बल दिया है।

3. व्याख्यात्मक शैली है।

निबंधात्मक प्रश्न

1. कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदी जी ने क्या तर्क देकर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया है?

उत्तर- महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के समर्थन में निम्न तर्क प्रस्तुत किये है-

1. संस्कृत के नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अनपढ़ होने का प्रामाण नहीं है। क्योंकि प्राकृत उस समय जनसाधारण की भाषा थी और अनेक बौद्ध व जैन धर्मग्रंथों की रचना प्राकृत भाषा में की गई थी अत: स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा बोलना अनपढ़ होने का प्रमाण नहीं है।

2. गार्गी, सीता, शकुन्तला आदि विदुषी महिलाओं के उदाहरण स्त्री शिक्षा की पुष्टि करते हैं।

3. प्राचीन भारत में स्त्रियों द्वारा वेद मंत्र की रचना, पद्य रचनाएँ आदि उनकी शिक्षा की पुष्टि करती है।

4. प्राचीन समय में शायद स्त्री शिक्षा की आवश्यता इतनी नहीं थी अब अति आवश्यक है अत: स्त्री शिक्षा का विस्तार होना चाहिए।

नौबतखाने में इबादत - यतीन्द्र मिश्र

1. 'नौबतखाने में इबादत' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- नोबतखाना प्रवेश द्वार पर शहनाई द्वारा मंगल ध्वनि बजाये जाने वाले स्थान को कहते है। शहनाई वादन के साथ ईश्वर की प्रार्थना करना इबादत कहलाती है।

2. डुमराँव गाँव किन कारणों से इतिहास में प्रसिद्ध है?

उत्तर- अमीरूद्दीन (बिस्मिल्ला खाँ) का जन्म डुमराँव गाँव बिहार में हुआ था। शहनाई में प्रयुक्त होने वाली रीड (नरकट) एक प्रकार की घास, सोन नदी के किनारे उत्पन्न होने के कारण डुमराँव गांव प्रसिद्ध है।

3. काशी को एक और किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर- काशी को 'आनंद कानन' के नाम से जाना जाता है। जिसका अर्थ आनन्द या खुशियाँ देने वाला कानन (वन) होता है।

4. 'नौबतखाने में इबादत' पाठ किसके जीवन पर आधारित है?

उत्तर- यतीन्द्र मिश्र द्वारा रचित यह पाठ शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के एक रोचक व्यक्तिचित्र पर आधारित है।

5. शहनाई को शाहेनय क्यों कहते है?

उत्तर- शहनाई को शाह अर्थात् सुषिर वाद्यों के राजा की उपाधि प्राप्त है। इसलिए शहनाई को शाहेनय कहते हैं।

6. शहनाई कैसा बाद्य है तथा इसका प्रयोग कब होता है?

उत्तर- शहनाई 'सुषिर' वाद्य है तथा मंगलकारी अवसरों पर इसका प्रयोग होता है।

7. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा जाता है?

उत्तर- बिस्मिल्ला देश के महानतम शहनाई वादक रहे है। अत: बिस्मिल्ला को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहते है।

8. काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया है?

उत्तर- काशी भारतीय संस्कृति की संगम स्थली है। यहाँ रहकर संस्कृति के इतिहास और विकास का अध्ययन किया जा सकता है।

9. सुषिर वाद्य किसे कहते है? नाम बताइये।

उत्तर- फूँक मारकर बजाए जाने वाले वाद्य सुषिर वाद्य कहलाते है। जैसे - शहनाई, नागस्वरम्, बाँसुरी, बीन आदि।

10. बिस्मिल्ला खां की मत्वपूर्ण जिजीविषा क्या थी?

उत्तर- संगीत को सम्पूर्णता के साथ सीखना, सच्चे सुर की साधना उनकी महत्वपूर्ण जिजीविषा थी।

11. कुलसुम की देसी-घी वाली दुकान में बनी कचौड़ी को बिस्मिल्ला संगीममय कचौड़ी क्यों कहते है?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ को कुलसुम हलवाइन की देशी घी की कचौड़ियाँ बहुत पसंद थी। स्वादिष्ट तो लगती ही थी, साथ ही हलवाइन द्वारा कचौड़ी घी में डालते समय छन्न की ध्वनि में बिस्मिल्ला को संगीत के आरोह-अवरोह सुनाई पड़ते थे।

12. बिस्मिल्ला खाँ के मन में संगीत-प्रेम जगाने में किसका योगदान रहा?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ रियाज के लिए जब बालाजी मंदिर जाते थे तो मार्ग में रसूलनबाई और बतूलनबाई गायिका बहनों के ठुमरी, टप्पे तथा दादरा गाने की मधुर ध्वनि को सुनकर संगीत के प्रति आसक्त हुए।

13. 'भीतर की आस्था रीड़ के माध्यम से बजती है' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति गहरी श्रद्धा थी। उनके मन की यह श्रद्धा शहनाई के स्वरों के रूप में मधुर संगीत जो शहनाई की रीड़ से निकलता था उससे प्रकट होता था।

14. बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से खुदा से क्या माँगते आ रहे है?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से खुदा से सच्चा सुर प्राप्त करने का वरदान माँगते आ रहे थे। जिसे सुनकर श्रोताओं की आँखों से सच्चे मोतियों जैसे आँसू सहज भाव से निकल पड़े।

15. नागस्वरम् क्या है? शहनाई और नागस्वरम् में क्या समानता है?

उत्तर- नागस्वरम् दक्षिण भारत का मंगल अवसरों पर बजाया जाने वाला वाद्य है। दोनों ही वाद्य शुभ एवं मांगलिक उत्सवों पर प्रयुक्त होते है।

16. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की काशी को क्या देन है?

उत्तर- मुसलमान होते हुए गंगा को मैया माना, बालाजी व विश्वनाथ के प्रति आस्था रखते हुए काशी को जन्नत जैसा पवित्र मानकर काशी को हिन्दू-मुस्लिम एकता की मूल्यवान संस्कृति दी है।

17. 'नौबलखाना' किसे कहते है?

उत्तर- प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल ध्वनि बजाने का स्थान नौबलखाना कहलाता है?

18. शहनाई को क्या उपाधि दी गई है?

उत्तर- शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई है।

19. नौबतखाने में इबाबत किस विधा में लिखा गया है?

उत्तर- नौबतखाने में इबादत पाठ प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर लिखा गया रेखाचित्र है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. शहनाई को सुषिर वाद्यों में 'शाह' की उपाधि क्यों दी गई है?

उत्तर- संगीत शास्त्र के अनुसार फूंककर बजाए जाने वाले वाद्यों को सुषिर वाद्य कहा जाता है। शहनाई अरब देशों की देन मानी जाती है। अरब देशों में फूंककर बजाए जाने वाले वाद्यों को जिसमें रीड का प्रयोग होता है, 'नप' कहते है। शहनाई की ध्वनि सबसे मधुर होने के कारण उसे सुषिर वाद्यों में 'शाह' कहा गया है। इसी प्रकार 'शाहेनय' ही कालान्तर में शहनाई हो गया।

2. 'नौबतखाने में इबादत' नामक पाठ में लेखक क्या संदेश देता है?

उत्तर- यह पाठ अनेकता में एकता का संदेश देता है। सभी धर्मो के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए। कला और कलाकार का सम्मान करना चाहिए तथा प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच कर भी सादगी और निराभिमान बने रहने का संदेश देता है।

3. 'खाँ साहब हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर- भारतीय संगीत जगत् को प्रतिष्ठा दिलाने में बिस्मिल्ला खाँ का अपूर्व योगदान है। भारतरत्न से लेकर देश के अनेक विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्म विभूषण जैसे सम्मानों से नहीं बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेगें।

4. बिस्मिल्ला खाँ को काशी की संस्कृति में आ रहे किन परिवर्तनों को देखकर ठेस पहुँचती थी?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ को काशी की अनेक सांस्कृतिक और सामाजिक परम्पराओं जैसे - मलाई बरफ और देशी घी के व्यंजनों का लोप होना, संगतकारों के प्रति संगीतकारों का उपेक्षापूर्ण व्यवहार, संगीत, साहित्य और साहित्य अरब की अनेक परम्पराओं का लुप्त होना आदि को देखकर ठेस पहुँचती है।

5. बिस्मिल्ला खाँ धार्मिक उदारता व सद्भाव के प्रतीक है। कैसे?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ की एक ओर अपने धर्म इस्लाम में पूर्ण आस्था है वह पाँचो वक्त की नमाज पढते है वहीं दूसरी ओर गंगा मैया, बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति भी अपार श्रद्धा-भाव रखते है। इनसे सिद्ध होता है कि वह धार्मिक उदारता और सद्भाव के प्रतीक है।

6. बिस्मिल्ला खाँ के लिए सबसे बड़ी जन्नत क्या थी?

उत्तर जन्नत का अर्थ होता है - स्वर्ग। बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई बजाने में और काशी में निवास करने में स्वर्ग जैसा सुख अनुभव होता था। इसलिए वह शहनाई और काशी को ही अपने लिए सबसे बड़ी जन्नत मानते थे।

7. शिष्या ने खाँ साहब को किस बात पर टोका ?

उत्तर खाँ साहब को देश के सर्वोच्च सम्मान भारतरत्न -प्राप्त होने के बावजूद भी वह अपनी फटी तहमद पहनते थे। विशिष्ट लोगो से, मेहमानों से उसी पुरानी फटी लुंगी (तहमद) में बिना संकोच के मिलते थे। अत: शिष्या ने उनकी प्रतिष्ठा को देखते हुए उनकी वेशभूषा के लिए टोका।

8. बिस्मिल्ला खाँ शहनाईवादन में जादुई असर किसका परिणाम मानते थे?

उत्तर शहनाई के उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के कठिन परिश्रम और पूर्ण समर्पण का परिणाम था कि जहाँ भी खाँ साहब शहनाई बजाते लोग उनको और उनके संगीत को पहचान लेते थे। वह शहनाईवादन के जादुई असर का श्रेय खुद को न देकर गंगा मैया, बाबा विश्वनाथ और अपने उस्ताद को देते थे। खुदा के आशीर्वाद का परिणाम मानते थे।

9. यतीन्द्र मिश्र का जीवन व कृतित्व परिचय लिखिए।

उत्तर- हिन्दी साहित्य, संस्कृति और कला में गहरी रुचि रखने वाले हिन्दी कवि, सम्पादक और संगीत अध्येता यतीन्द्र मिश्र का जन्म विश्वविख्यात अयोध्या नगरी में 12 अप्रैल 1977 ई. को हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की। पढ़ाई के समय से ही साहित्य और संस्कृति के प्रति आकर्षित रहे। 1999 से ही 'विमला देवी फाउंडेशन' नामक सांस्कृतिक न्यास का संचालन कर रहे है। हिन्दी साहित्य जगत मे इनके योगदान के लिए 'भारत भूषण अग्रवाल कविता सम्मान', 'ऋतुराज समान' प्राप्त हुए हैं।

इसकी प्रमुख रचनाएँ है-

तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

1. यदा कदा। 2. अयोध्या तथा अन्य कविताएँ

3. ड्योढ़ी पर आलाप।

इसके अलावा शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी के जीवन और संगीत साधना पर एक पुस्तक 'गिरिजा' लिखी है।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

1. काशी में संगीत आयोजन ..... विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार है।

उत्तर **संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2' में संकलित पाठ 'नौबतखाने में इबादत' से लिया गया है। इसके लेखक यतीन्द्र मिश्र है।

प्रसंग - इस अंश में लेखक काशी में चले आ रहे संगीत संबंधी आयोजन तथा बिस्मिल्ला खाँ के सर्वधर्म सद्भाव का परिचय दे रहे है।

व्याख्या - काशी के विषय में लेखक कहते है कि यह धार्मिक क्रियाकलापों के साथ-साथ संगीत संबंधी आयोजनों के लिए भी प्रसिद्ध है। पिछले कई सालों से यह संगीत कार्यक्रम संकटमोचन मंदिर में होता आया है। यह मंदिर शहर के दक्षिण में लंका पर स्थित है। हनुमान जयंती के पावन अवसर पर यहाँ पाँच दिनों तक संगीत सम्मेलन आयोजित होता है। शास्त्रीय व लौकिक दोनों ही प्रकार के गायन-वादन होते है। इस उच्चस्तरीय आयोजन में बिस्मिल्ला अवश्व भाग लेते है। खाँ साहब अपने धर्म के प्रति तो समर्पित है ही परन्तु काशी विश्वनाथ में भी अपार श्रद्धा रखते है। इसका परिचय तब मिलता है जब वह काशी से बाहर किसी कार्यक्रम में भाग लेने जाते है। तब वह विश्वनाथ तथा बालाजी मंदिर की ओर मुख करके बैठा करते थे। थोड़ी देर के लिए ही सही वह शहनाई का मुख भी उधर ही कर देते थे। उस समय उनके हृदय की श्रद्धा भावना सुरों के रूप में प्रकट हुआ करती थी।

विशेष :- 1. भाषा सरल, सहज व बोधगम्य है।

2. हिन्दी उर्दू मिश्रित शब्दावली है।

3. हिन्दू-मुस्लिम एकता को मूल्यवान संस्कृति बताई है।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

2. 'अपने ऊहापोहो' से बचने..... क्यों नहीं आई' (पेज. न. 117 से 118)

उत्तर **संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2' में संकलित पाठ 'नौबतखाने में इबादत' से लिया गया है। इनके लेखक यतीन्द्र मिश्र है।

प्रसंग - इस अंश में लेखक कहते है कि बिल्मिल्ला खाँ सुर सम्राट होते हुए भी सदा खुदा से स्वर माँगते है।

व्याख्या - ऊहापोह का अर्थ है - असमंजस या अनिश्चितता की स्थिति। लेखक कहता है हम सभी अपनी उलझनों, समस्याओं से बचने के लिए कोई आसरा, कोई गुफा खोजते हैं। जहाँ पहुँच कर हम अपनी चिंताएँ, अपनी कमजोरियाँ भूल सकें और -फिर सब भूलकर सुरो के तिलिस्म में जो जाएँ। हिरण और बिस्मिल्ला खां में एक बात समान है कि जो वस्तु उनके भीतर ही स्थित है उसे वे बाहर खोज रहे हैं। अत: हिरण के माध्यम से खाँ साहब की शहनाई की तुलना करते हुए कहते है कि जिस प्रकार हिरण अपनी नाभि में कस्तूरी छिपे होने से अनजान तथा उसकी खुशबू से परेशान होकर पूरे जंगल में व्याकुल होकर उस कस्तूरी को ढूँढता है जो उसके स्वयं के पास है, उसी प्रकार अस्सी बरसों से बिस्मिल्ला खाँ यही सोचते आए है कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त सातों सुरों का ज्ञान खर्च करने का तरीका और सलीका अभी तक उन्हें क्यों नहीं आया है। खुदा द्वारा शहनाई वादन कौशल प्रदान करने के बावजूद जीवनभर खुदा से सच्चे सुर की याचना करते रहे।

विशेष :- 1. हिरण की व्याकुलता की तुलना विस्मिल्ला खाँ की हृदय की व्याकुलता से की गई है।

2. भाषा शैली सहज, सरल व बोधगम्य है।

3. हिन्दी-उर्दू मिश्रित शब्दावली का प्रयोग किया है।

निबंधात्मक प्रश्न

1. बिस्मिल्ला खाँ ने व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्न है:-

1. धार्मिक सद्भाव से ओत-प्रोत बिस्मिल्ला खाँ हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। वह गंगा को मैया कहते थे। बाबा विश्वनाथ और बालाजी मंदिर में शहनाई वादन करते थे। दिन में पाँच बार नमाज पढ़ते और मुस्लिम पर्वो में श्रद्धापूर्वक भाग लेते थे।

2. सरलता व सादगी की प्रतिभूर्ति - 'भारतरत्न' सहित अनेक विश्व विद्यालयों की मानद उपाधियाँ प्राप्त होने पर भी अभिमान रहित रहकर सरल व सादगीपूर्ण जीवन जीते थे।

3. ईश्वर में दृढ़ आस्था अपने शहनाईवादन में निपुणता और प्राप्त सम्मान को खुदा को समर्पित करते थे। अल्ला से 'सच्चा सुर' माँगते थे।

4. रियाजी और स्वादी-संगीत की साधना करने के साथ-साथ कुलसुम हलवाइन की देशी-घी की कचौड़ी और मलाई बरफ के शौकिन थे।

5. रसिक ओर विनोदी- अभिनेत्री सुलोचना की फिल्म जुनून से देखते थे। रसूलन और बलूलन बाई की गायिकी के रसिक थे। और विनोदी स्वभाव के थे जैसा कि उन्होनें अपनी शिष्या से कहा 'भारतरत्न' हमको शहनाई पे मिला, लुंगिया पे नहीं।

2. 'बिस्मिल्ला खां कला के अनन्य उपासक थे।' तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- बिसिमल्ला खाँ संगीत कला के अनन्य उपासक थे। वह शहनाई बजाने की कला में पारंगत थे। वह अस्सी वर्ष तक लगातार शहनाई बजाते रहे। उनका शहनाई वादन बेजोड़ व अनुपम था। वे अपनी कला को ईश्वर की उपासना मानते थे। एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते थे। पाँचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती थी। वे नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते थे- मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगिनत आँसू निकल आएँ। वे अपने आप पर झल्लाते भी थे कि सातों सुरों को सलीके से बरतने की तमीज अर्थात् शहनाई सही ढंग से बजाना अभी तक क्यों नहीं आया। इससे स्पष्ट होता है। कि वह एक सच्चे कला उपासक थे।

संस्कृति - भदंत आनन्द कौशल्यायन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. संस्कृति पाठ में सबसे बड़ा आविष्कारक किसे कहा गया है?

उत्तर- आग और सुई-धागों का आविष्कार करने वाले को सबसे बड़ा आविष्कारक बताया है।

2. संस्कृति और असंस्कृति में क्या अन्तर है?

उत्तर- मानव के विकास, ज्ञान और कल्याण की भावना संस्कृति तथा मानवता के द्वारा विनाश और अकल्याण की भावना असंस्कृति है।

3. 'मोती का भरा थाल' किसे कहा गया है?

उत्तर- मोती भरा थाल आकाश में खिले तारों को कहा गया है।

4. किस आधार पर आग व सुई-धागें का आविष्कार हुआ?

उत्तर- आग व सुई-धागे का आविष्कार योग्यता, प्रवृत्ति तथा प्रेरणा के बल पर हुआ।

5. 'संस्कृति' पाठ में लेखक ने 'संस्कृत' व्यक्ति किसे कहा है?

उत्तर- 'बुद्धि एवं विवेक' से नए तथ्य का दर्शन करने वाला तथा आविष्कार करने वाला संस्कृत व्यक्ति है। न्यूटन ने गुरूत्वाकषर्ण का सिद्धान्त खोजा अत: वह संस्कृत व्यक्ति कहे जा सकते है।

6. लेखक के अनुसार 'सभ्यता' क्या है?

उत्तर- संस्कृति द्वारा किये गए या आन्तरिक योग्यता के आधार पर किये गये आविष्कार दूसरों के उपयोग में आते है। सभ्यता कहलाते हैं।

7. भदंत आनन्द कौशल्यायन की कोई दो रचनाओं के नाम लिखो।

उत्तर- 1. कहाँ क्या देखा। 2. भिक्षु के पत्र।

8. लेखक ने संस्कृति के विविध रूप किन्हें माना है?

उत्तर- लेखक ने आग और सुई-धागे का आविष्कार करने वाली भावना को, तारों की जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा को, दूसरे के दु:ख को लेकर भावुक बनाने वाली प्रेरणा और महामानवता को संस्कृति के विविध रूप माना है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'संस्कृति' पाठ में सर्वस्व त्याग के कौन-से उदाहरण दिये गये है?

उत्तर- 'संस्कृति' पाठ में सर्वस्व त्याग के निम्न उदाहरण दिये गए है।

1. माता रोगी बच्चे को सारी रात गोद में लिये बैठी रहती है।
2. लेनिन डबल रोटी का टुकड़ा स्वयं न खाकर दूसरों को खिलाता था।
3. कार्ल मार्क्स ने मजदूरों के लिऐ जीवनभर कष्ट झेले।
4. सिद्धार्थ ने मानवता के हितार्ध अपना सारा सुख त्याग दिया था।

2. संस्कृति और सभ्यता में लेखक ने क्या अन्तर बताया है?

उत्तर- संस्कृति किसी खास व्यक्ति के अंदर रहने वाली वह योग्यता या गुण हे जिसके बल पर कोई आविष्कार किया जाता है तथा उस व्यक्ति के द्वारा जो आविष्कार किया गया है वह सभ्यता होती है।

3. लेखक की दृष्टि से 'संस्कृति' और 'सभ्यता' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

उत्तर- लेखक के अनुसार, हम इन दोनों 'सभ्यता' और 'संस्कृति' को एक ही समझ लेते है। इन दोनों के अंतर को समझने का प्रयास भी नहीं हुआ है और संस्कृति को देश, धर्म के आधार पर बाँटकर परिभाषित करने की प्रवृति के कारण इनकी सही समझ नहीं बन पाई है।

4. लेखक के अनुसार संस्कृति कब असंस्कृति हो जाती है?

उत्तर- लेखक कौसल्यायन के अनुसार संस्कृति में मानव कल्याण की भावना निहित होती है, जब यह भावना टूट कर मानव के अकल्याण और विनाश में सहायक बन जाती है तब संस्कृति असंस्कृति में बदल जाती है।

5. भंदत आनन्द कौसल्यायन का जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर- भदंत आनन्द कौसल्यायन का जन्म सन् 1905 में पंजाब के अंबाला जिले के सोहाना गाँव में हुआ। इनके बचपन का नाम हरनाम दास था। बौद्ध भिक्षु के रूप में इन्होनें देश-विदेश का भ्रमण किया। गाँधी जी के साथ लम्बे अर्से तक वर्धा में रहे। सहज, सरल बोलचाल की भाषा में लिखे उनके निबंध, संस्मरण और यात्रा वृतांत काफी चर्चित है। कौसल्यायन की 20 से अधिक पुस्तके प्रकाशित हुई है जिनमें भिक्षु के पत्र, जो भूल न सका, आह ! ऐसी दरिद्रता, बहानेबाजी, रेल का टिकट, कहाँ क्या देखा आदि है।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

1. आग के आविष्कार..... मोती भरा थाल क्या है?

उत्तर- **संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-2' में संकलित पाठ 'संस्कृति' से लिया गया है। इसके लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन है।

प्रसंग - इन अंश में व्यक्ति के संस्कृत होने की जिज्ञासा को व्यक्त किया गया है।

व्याख्या- लेखक कहते है कि मनुष्य की जिज्ञासा की प्रवृत्ति उसे आविष्कार हेतु प्रेरित करती है। संस्कृत व्यक्ति अर्थात् बुद्धि एवं विवेक से नए तथ्य को जानने वाला कोई न कोई कार्य में लगा रहता है। लेखक कहते है कि आग के आविष्कार के पीछे का कारण पेट की आग बुझाना ही रहा होगा। उसी प्रकार मनुष्य ने सर्दी-गर्मी से बचने हेतु तथा अपने तन को ढकने हेतु सुई-धागे का आविष्कार किया होगा। अर्थात् मनुष्य की आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। लेखक कहते है कि कल्पना कीजिए की किसी आदमी का पेट भर गया, उसका तन भी ढक गया है लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है तो उसकी जिज्ञासा उसे सोने नहीं देती है वह जानने को परेशान रहता है कि ऊपर से मोतियों भरा थाल क्या है? क्यों ये चमक रहे है। यहाँ व्यक्ति की जिज्ञासा उसे नए तथ्य या ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रेरित करती है।

विशेष : 1. भाषा- सरल, सहज व बोधगम्य है।

2. व्याख्यात्मक शैली है।

3. व्यक्ति की जिज्ञासा प्रवृत्ति खोज या आविष्कार का प्रेरणा स्त्रोत होती है पर बल दिया है।

निबंधात्मक प्रश्न

1. भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार मानव संस्कृति क्या है?

उत्तर- भदंत आनन्द कौसल्यायन के अनुसार मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है। वह मानवता की भलाई और कल्याण के लिए है। वह मानव के आन्तरिक सूक्ष्म गुण के साथ उसकी योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा की जननी है। इसे देश या धर्म के आधार पर बाँटा नहीं जा सकता है। इसलिए श्रेष्ठ और स्थायी है। मानव संस्कृति किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं होती है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए ही होती है। लेखक के अनुसार, संस्कृति मनुष्य द्वारा प्राप्त वह विशेष योग्यता, प्रवृत्ति या प्रेरणा है जो उससे नए-नए तथ्यों की खोज कराती है। मनुष्यों की इस सामूहिक योग्यता को ही लेखक ने मानव संस्कृति कहा है।

कृतिका

पाठ-1 माता का अँचल

(शिवपूजन सहाय)

1. साँप से डरकर भोलानाथ भागता हुआ किसकी गोद में दुबक जाता है-

(अ) पिता की (ब) मुसन तिवारी (स) माता की (द) दादी की (स)

2. मकई के खेत में किनका झुण्ड चर रहा था?

(अ) बकरियों का (ब) भैंसो का (स) चिड़ियों का (द) भेड़ों का (स)

3. चूहों के बिल में पानी डालने से क्या निकला?

(अ) चूहा (ब) नेवला (स) छछून्दर (द) साँप (द)

4. लेखक को उनके पिता क्या कहकर पुकारते थे?

(अ) भोलानाथ (ब) तारकेश्वरनाथ (स) शिवपूजन (द) हरिनंदन (क)

5. अमोला किसे कहते है?

(अ) आम का उगता हुआ पौधा (ब) आँवला

(स) वटवृक्ष (द) एक प्रकार की सब्जी (क)

6. लेखक के पिताजी किसका पाठ करते थे?

उत्तर- लेखक के पिताजी रामायण का पाठ करते थे।

7. रामनामा बही में लेखक के पिताजी कितनी बार राम-राम लिखते थे?

उत्तर- रामनामा बही में लेखक के पिताजी हजार बार राम-राम लिखते थे।

8. लेखक की माँ उसे पकड़कर कौनसा तेल उसके सिर पर डाल देती थी?

उत्तर- लेखक की माँ उसे पकड़कर सरसों का तेल उसके सिर पर डाल देती थी।

9. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक का वास्तविक नाम क्या था?

उत्तर- 'माता का अँचल' पाठ के लेखक शिवपूजन सहाय का वास्तविक नाम तारकेश्वरनाथ था।

10. बच्चे को खाना खिलाने के संबंध में 'माता का अँचल' नामक कहानी में माँ क्या सलाह देती है?

उत्तर- पिता के साथ भरपेट खा लेने पर भी भोलानाथ की माँ को संतोष नहीं होता था वह उसे और खिलाने का हठ करती थी। वह पति से कहती थी उन्हें बच्चों को खिलाना नहीं आता। वह बहुत छौटे कोर खिलाते है, इससे बच्चे का पेट नहीं भरता। फिर वह स्वयं अपने हाथों से उसे बहला-बहलाकर खिलाती थी।

11. मूसन तिवारी को चिढ़ाने का भोलानाथ को क्या परिणाम भोगना पड़ा?

उत्तर- मूसन तिवारी बूढ़े आदमी थे, उन्हें कम दिखता था। बैजू नाम के ढीठ लड़के ने उनकों बुढवा बेईमान माँगे करैला का चोखा कहकर चिढ़ाया । भोलानाथ और अन्य बच्चे भी उन्हें चिढ़ाने लगे। मूसन तिवारी ने बच्चों को खदेड़ा और फिर वह गाँव की पाठशाला में जा पहुँचे वहाँ से चार लड़के बैजू और भोलानाथ को पकड़ लाने को भेजे गए। बैजू तो भाग गया। लेकिन भोलानाथ पकड़े गये और गुरूजी ने उनकी खूब खबर ली।

12. शहरी जीवन शैली में बच्चों से उनका बचपन छीन लिया है। क्या आप इस कथन से सहमत है? अपने विचार लिखिए।

उत्तर- इस कथन में बहुत कुछ सच्चाई है। सभ्यता, शिष्टाचार और शिक्षा के बोझ से बच्चों से बचपन की मस्ती, आजादी, कल्पनाशीलता और रचनात्मकता छीन ली है। माता-पिता उन पर अपनी इच्छाए लादते है। माता-पिता बच्चों से बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ रखते है।

13. 'माता का अँचल' पाठ में बच्चें बारात का जुलूस किस प्रकार निकालते थे?

उत्तर- टूटी चूहेदानी की पालकी बनायी जाती थी। कनस्तर को तबूँरा और अमोले को शहनाई बनाकर बजाया जाता था। भोलानाथ सम्बंधी बनता और बकरे पर सवार हो जाता। बारात दूसरे छोर पर बने चबूतरे तक जाती। उसे कन्या का घर माना-जाता था। सभी बच्चें इसमें बाराती बनकर सम्मिलित होते थे।

पाठ-2 जॉर्ज पंचम की नाक (कमलेश्वर)

1. 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ की लेखन विधा है?

(अ) व्यंग्यात्मक (ब) रेखाचित्र (स) संस्मरण (द) यात्रावृत्तान्त (अ)

2. नई दिल्ली में सबकुछ था लेकिन नहीं थी?

(अ) शांति (ब) नाक (स) मूर्ति (द) आत्मा (ब)

3. दिल्ली में फौरन हाजिर होने का हुक्म किसे दिया गया?

(अ) चित्रकार को (ब) नाटककार को (स) मिस्त्री को (द) मूर्तिकार को (द)

4. अंत में मूर्तिकार ने कैसी नाक लगाने का सुझाव दिया-

(अ) पत्थर की नाक(ब) जिंदा नाक (स) प्लास्टिक की नाक (द) चाँदी की नाक (ब)

5. 'जॉर्ज पंचम की नाक' व्यंग्य में किस विदेशी के भारत आने की चर्चा हो रही है।

(अ) ट्रंप (ब) बाईडन (स) रानी एलिजाबेथ (द) राजकुमारी डायना (स)

6. जॉर्ज पंचम की नाक को लेकर सरकारी तंत्र की बदहवासी उनकी किस मानसिकता को दर्शाता है?

(अ) स्वाभिमान को (ब) आजादी की मानसिकता(स) गुलामी की मानसिकता(द) जुगाड़ की मानसिकता(स)

7. जॉर्ज पंचम की किस स्थान पर स्थित लाट की नाक गायब हुई थी?

उत्तर- जॉर्ज पंचम की इण्डिया गेट पर स्थित लाट की नाक गायब हुई थी।

8. एलिजाबेथ के आने पर कौनसे शहर का काया-पलट होने लगा?

उत्तर- एलिजाबेथ के आने पर दिल्ली शहर का काया-पलट होने लगा।

9. मूर्तिकार ने बंगाल में किन-किन देश भक्त नेताओं की मूर्तियां देखी?

उत्तर- मूर्तिकार ने बंगाल में गुरूदेव रविन्द्रनाथ, सुभाषचन्द्र बोस तथा राजा राममोहन राय आदि देश भक्त नेताओं की मूर्तियाँ देखी।

10. 'खामोश रहने वालों की ताकत दोनों तरफ थी'- में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर- इस कथन में व्यंग्य निहित है कि राजनैतिक लोग अत्यन्त चालाक होते है और तटस्थ लोगों को भी अपने पक्ष में मानकर अपनी शक्ति बढ़ाते हैं।

11. जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक का न होना सरकारी तंत्र के लिए विकट समस्या क्यों बन गया था?

उत्तर- भारत के तत्कालीन शासकों में स्वाधीनता के संस्कार नहीं आ सके थे। वे मानसिक गुलामी से मुक्त नहीं हो पाए थे। अत: वे चाहते थे कि इंग्लैण्ड की रानी के सामने कोई ऐसा दृश्य न आए जो उसे बुरा लगे। जॉर्ज पंचम की टूटी नाक को लगवाना उनके लिए एक विकट समस्या बन गया था।

12. आपके अनुसार जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक किसने और क्यों तोड़ी होगी?

उत्तर- जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक को तोड़ने वाला कोई भारतीय स्वाभिमानी देशभक्त ही होगा। स्वतंत्र भारत के किसी स्वाभिमानी भारतीय की नजर जब-जब भी इस मूर्ति पर पड़ती होगी उसके आत्म सम्मान पर चोट लगती होगी। इसी कारण भारत की गुलामी के प्रतीक जॉर्ज पंचम को किसी देशभक्त युवा ने कुरूप बना डाला होगा।

13. 'नई दिल्ली में सब था..... सिर्फ नाक नहीं थी' इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर- इंग्लैण्ड की रानी के आगमन पर दिल्ली सज संवरकर तैयार थी परन्तु जॉर्ज की नाक गायब थी। लेखक के इस कथन का परोक्ष अर्थ यह है कि दिल्ली में सरकारी शान-शौकत तो पूरी थी किन्तु शासकों में आत्मसम्मान की भावना का पूरी तरह अभाव था, जॉर्ज की मूर्ति को नाक लगाने के प्रयास में वे भारत की शान को मिट्टी में मिला रहे थे। देश की नाक कटवा रहे थे। अत: लेखक ने 'नाक' को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है।

14. इंग्लैंड की महारानी के हिंदुस्तान आगमन पर अखबार क्या क्या छाप रहे थे और रानी के आने के दिन वे चुप क्यों रह गए?

उत्तर रानी के आने से पहले अखबारों में रानी की पोशाकों के रंग, उन पर होने वाले खर्च, रानी की जन्मपत्री, प्रिंस फिलिप के कारनामे छापने के साथ ही उनके नौकर - नौकरानियों, बावर्चियो, खानसायों की जीवनियाँ यहाँ तक कि शाही महल के कुत्तों की तस्वीरें भी छापी गईं। लेकिन रानी के आगमन पर सब अखबार चुप थे। देश का आत्म सम्मान लूटने वाले की मूर्ति पर जिंदा व्यक्ति की नाक लगाए जाने की घटना अपमान जनक बात थी शायद इसीलिए सभी अखबार चुप रहकर जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर जिंदा नाक लगाए जाने के प्रति अपना आक्रोश प्रकट कर रहे थे।

पाठ-3 साना साना हाथ जोडि (मधु कांकरिया)

1. 'साना-साना हाथ जोड़ि' मधु कांकरिया लिखित है एक-

(अ) यात्रावृत्तांत (ब) रेखाचित्र (स) व्यंग्यरचना (द) संस्मरण (अ)

2. सेवन सिस्टर्स वाटरफॉल नामक झरना किस नदी के किनारे स्थित है-

(अ) विस्ता (ब) पलामू (स) गुलमा (द) तीस्ता (द)

3. सिक्किम के अधिकतर लोग किस धर्म को मानने वाले है?

(अ) ईसाई धर्म (ब) हिन्दू धर्म (स) बौद्ध धर्म (द) मुस्लिम धर्म (स)

4. मन-वृन्दावन होने का अर्थ है?

(अ) वृन्दावन की सैर करना (ब) वृन्दावन में मन बस जाना

(स) ब्रजवासी होना (द) अत्यधिक प्रसन्न होना (द)

5. गैंगटॉक (गंतोक) का अर्थ क्या है?

(अ) जलाशय (ब) चोटी (स) पहाड़ (द) मेटुला (स)

6. युमथांग घाटी की क्या विशेषता है?

(अ) यह घाटी बहुत गहरी है (ब) यह घाटी फुलों से भर जाती है

(स) यह खतरनाक घाटी है (द) इस घाटी में बड़े-बड़े मैदान है (ब)

7. लेखिका ने गैंगटॉक को किसका शहर कहा है?

उत्तर- लेखिका ने गैंगटॉक को मेहनतकश बाद शाहों का शहर कहा है।

8. लेखिका ने साना-साना हाथ जोड़ि प्रार्थना किससे सीखी?

उत्तर- लेखिका ने साना-साना हाथ जोड़ि प्रार्थना नेपाली युवती से सीखी।

9. लेखिका को कंचन-जंघा के दर्शन क्यों नहीं हो सके?

उत्तर- सुबह आँख खुलते ही लेखिका बालकनी की ओर भागी। परन्तु बादल होने के कारण लेखिका को कंचन जंघा दिखाई नहीं दी।

10. यूमथांग में चिप्स बेचती सिक्किम की युवती ने लेखिका से क्या कहा?

उत्तर- यूमथांग में चिप्स बेचती सिक्किम की युवती ने लेखिका से कहा- मैं इंडियन हूँ।

11. पर्वतीय स्थल कटाओ का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताइए कि उसे 'भारत का स्विट्जरलैण्ड क्यों कहा जाता है?

उत्तर कटाओ सिक्किम का अत्यन्त सुन्दर और सहज प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्थल है, वहाँ खूब हिमपात होता है। कम प्रसिद्ध होने के कारण वहां पर्यटको का आना-जाना बहुत कम होता है इस कारण वह मनुष्य द्वारा फैलाए जाने वाले प्रदूषण से मुक्त है। यह समुद्र तल से लगभग 14500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है, इसलिए इसे लोग भारत का स्विट्जरलैण्ड कहते है।

12. 'कवी-लोंग स्टॉक' क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर- 'कवी लोग स्टॉक' वह स्थान है जहाँ 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई थी। तिब्बत की चीस-खे बम्सन ने लेप चाओं के शोमेन से कुजतेक के साथ यहाँ पर सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। भूटिया और लेपचा सिक्किम की इन दोनों स्थानीय जाति के बीच में झगड़ों के बाद यहाँ पर ही शांति वार्ता शुरू हुई थी।

13. 'जाने कितना ऋण है' हम पर इन नदियों का, हिम शिखरों का- मणि के इस कथन में क्या संदेश निहित है?

उत्तर- हिमशिखरों से नदियाँ निकलती है। उनका पानी हमें जीवन देता है। यदि ये हिम शिखर और नदियाँ न होती तो पानी के अभाव में हमारी सभ्यता मर गई होती। हमें प्रकृति का कृतज्ञ होना चाहिए तथा उसके साथ अनुचित छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। सभ्यता के नाम पर पर्वतों और नदियों को प्रदूषित और नष्ट करना उचित नहीं है।

पाठ-4 एही ठैया झुलनी हेरानी हो रामा।

(शिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र')

1. एही ठैया झुलनी हेरानी हो रामा, पाठ के लेखक है-

(अ) शिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र'(ब) अज्ञेय(स) शिवपूजन सहाय (द) यशपाल (अ)

2. दुक्कड़ कहते है-

(अ) शहनाई के साथ बजाए जाने वाले तबले जैसे बाजे को

(ब) रामढोल को (स) मोरबीन को (द) तम्बूरे को (अ)

3. दुलारी ने कहाँ की बुनी हुई साडियाँ विदेशी कपड़ों की होली जलाने के लिए दी?

(अ) बनारस की (ब) लंका की (स) बंगाल की (द) मैन चेस्टर तथा लंका शायर की(द)

4. अली सगीर था-

(अ) दुलारी को चाहने वाला (ब) एक ठेकेदार

(स) खुफिया पुलिस का रिपोर्टर(द) पुलिस का अधिकारी (स)

5. दुलारी और टून्नू की भेंट किस स्थान पर हुई थी?

(अ) खोजवाँ बाजार में (ब) पनघट पर

(स) दंगल में (द) जूलूस के समय (अ)

6. कठोर हृदय समझी जाने वाली दुलारी टून्नू की मृत्यु पर विचलित क्यों हो उठी?

(अ) प्रेम अधूरा रह जाने के कारण(ब) पश्चाताप के कारण

(स) अपनी अज्ञानता के कारण (द) अ और ब दोनों (द)

7. टून्नू दुल्लारी के लिए क्या उपहार लाभ था?

(अ) कानों के झुमके (ब) गले का हार

(स) गाँधी आश्रम में बनी खादी की धोती (द) पांवों की पायल (स)

8. एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! पाठ के रचनाकार कौन है?

उत्तर- 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' पाठ के रचनाकार शिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र' है।

9. 'दुलारी काशी' में किसलिए प्रसिद्ध थी?

उत्तर- दुलारी एक गौनहारिन थी। वह कजली गायन के लिए प्रसिद्ध थी।

10. टून्नू ने दुलारी को क्या भेंद दी?

उत्तर- होली के त्यौहार पर टून्नू एक खादी की साड़ी लेकर दुलारी के घर गया। वह साड़ी दुलारी के प्रति टून्नू के प्रेम की प्रतीक थी।

11. गोरे सिपाही टून्नू को कहाँ ले जाने की कह रहे थे?

उत्तर- गौरे सैनिक टुन्नू को अस्पताल ले जाने की कह रहे थे।

12. खोजवाँ बाजार में आयोजित कजली दंगल का मजा किरकिरा होने का कारण क्या था?

उत्तर- दंगल में टून्नू और दुलारी के बीच बड़े रोचक और व्यंग्य-विनोदमय सवाल जवाब चल रहे थे। इसी बीच फेंकू सरदार लाठी लेकर टून्नू को मारने दौड़ा दुलारी ने टून्नू को बचाया। इस घटना के बाद कजली-दंगल का मजा किरकिरा हो गया।

13. झींगुर द्वारा टुन्नू की मृत्यु का समाचार सुनकर दुलारी की क्या मनोदशा हुई?

उत्तर- दुलारी एक कठोर हृदय महिला थी। करूण से करूण घटना पर भी उसका मन नहीं पसीजता था और कोई दिन होता तो वह टून्नू के मारे जाने का समाचार सुनकर हँस पड़ती लेकिन उस दिन वह टुन्नू के बारे में सुनकर स्तब्ध हो गई। उसकी आँखों में आँसू उमड़ पड़े, उसने पड़ोसियों की निगाह से अपने आँसू नहीं छिपाए।

14. क्या आपको लगता है कि टुन्नु की हत्या के पीछे कहीं न कहीं फेंकू सरदार का भी योगदान था?

उत्तर- फेकू सरदार, टुन्नू को अपना प्रतिद्वन्द्वी मानता था। अत: दुलारी के घर से अपमानित होकर निकलने पर जब उसकी अली सगीर से भेंट हुई तो उसने अली सगीर को टुन्नू के खिलाफ निश्चय ही उकसाया होगा। ऐसा न होता तो पूरे जुलुस में से अली सगीर ने टुन्नू को ही क्यों पकड़ा और उसके साथ क्रूर व्यवहार क्यों किया?

15. दुलारी अमन सभा के समारोह में गाने क्यों गई? उसने टुन्नू की मृत्यु पर अपना शोक कैसे प्रकट किया?

उत्तर- टुन्नू की मृत्यु से दुलारी अत्यंत व्यथित थी। वह अमन सभाइयों की सभा में गाना नहीं चाहती थी लेकिन पुलिस ने उसे गाने को विवश किया। तब उसने 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा।' गीत गाकर अपने शोकाकुल मन की भावना प्रकट की। गीत का सांकेतिक अर्थ यहीं था कि इसी स्थान पर उसके परमप्रिय टुन्नू की हत्या हुई थी।

पाठ-5 मैं क्यों लिखता हूँ?

(अज्ञेय)

1. लेखक के अनुसार सच्चा लेखन पैदा होता है?

(अ) किताबे पढ़कर (ब) बाह्य दृश्यों से (स) आंतरिक विवशता से (द) इनमें से कोई नहीं (स)

2. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ है-

(अ) खोजपरक निबंध (ब) आत्मपरक निबंध

(स) ललित निबंध (द) यात्रावृत्तांत (ब)

3. अनुभव और अनुभूति में क्या अंतर है?

(अ) अनुभव आवश्यक है, अनुभूति नहीं

(ब) दोनों में कोई समानता नहीं है

(स) अनुभव से अनुभूति गहरी चीज है

(द) अनुभव अनुभूति से गहरा होता है (स)

4. लेखक ने हिरोशिमा कविता कहाँ लिखी ?

(अ) अमेरिका में (ब) रेलगाड़ी में बैठे-बैठे

(स) जापान में (द) लंदन में (ब)

5. 'मैं क्यों लिखता हूँ?' इस प्रश्न का लेखक से किस प्रकार का सम्बंध रखता है?

(अ) आंतरिक जीवन के स्तर से

(ब) बाह्य जीवन से

(स) योग्यता से

(द) सामाजिक स्तर से (अ)

6. लेखक को किसका पुस्तकीय ज्ञान था?

उत्तर- लेखक को अणु का, रेडियोधर्मी तत्त्वों का तथा रेडियोधर्मिता के प्रभाव का पुस्तकीय ज्ञान था।

7. किस नदी में बम फेंककर सैनिक हजारों मछलियाँ मार देते थे?

उत्तर- ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंकर सैनिक हजारों मछलियाँ मार देते थे।

8. 'अज्ञेय' जी के अनुसार मोक्ष पाने का एकमात्र साधन क्या है?

उत्तर- 'अज्ञेय' जी के अनुसार मोक्ष पाने का एकमात्र साधन लिखना है।

9. अज्ञेय हिरोशिमा में सब कुछ देखकर तत्काल कुछ भी क्यों नहीं लिख सके।

उत्तर- हिरोशिमा में सब कुछ देखकर अज्ञेय कुछ भी नहीं लिख सके क्योंकि उस समय उनको घटना का अनुभव तो हुआ था लेकिन वह अनुभव अनुभूति में नहीं बदल सका था।

10. 'मैं क्यों लिखता हूँ' यह प्रश्न बड़ा सरल जान पड़ता है पर बड़ा कठिन भी है- ऐसा कहने से अज्ञेय का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- कोई लेखक क्यों लिखता है? इस प्रश्न का सच्चा उत्तर लेखक के आंतरिक जीवन के विभिन्न स्तरों से सम्बंधित है। उन सबको संक्षेप में कुछ वाक्यों में व्यक्त करना आसान काम नहीं है। यह काम संभव है या नहीं -यह भी नहीं पता। जिसके बारे में जानना दूसरों के लिए उपयोगी हो उनमें से ऐसे कुछ स्तरों का स्पर्श ही किया जा सकता है जो आन्तरिक विवशता उसे लिखने के लिए बाध्य करती है, उसे लिखने के बाद ही जाना जा सकता है।

11. बाहरी दबाव लेखक के भीतरी उन्मेष का कारण कैसे बन जाता है?

उत्तर- संपादको तथा प्रकाशकों के आग्रह से तथा आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी लेखक लिखता है। लेकिन यदि वह कृतिकार है तो वह ईमानदारी से यह बात ध्यान में रखता है कि कौनसी रचना बाह्य दबाव में लिखी गई है और कौनसी भीतरी प्रेरणा से? कृतिकार बाह्री दबाव के सामने समर्पण नहीं करता बल्कि उसे एक सहायक यंत्र की तरह काम में लाता है। इस प्रकार एक कृतिकार के लिए बाहरी दबाव, उसकी आंतरिक विवशता को सक्रिय करने का साधन बन जाता है।

12. लेखक ने सैनिकों द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी में बम फेंकने और हिरोशिमा पर परमाणु बम के प्रहार में कौनसी समानता देखी?

उत्तर- सैनिकों को भोजन के लिए थोड़ी-सी मछलियों की आवश्यकता होती थी, लेकिन वे नदी में बम फेंककर हजारों मछलियों को व्यर्थ ही मार डालते थे। हिरोशिमा में भी परमाणु बम के विस्फोट से लाखों निर्दोष लोगों की जान व्यर्थ ही ली गई थी। इस प्रकार दोनों घटनाओं में व्यर्थ जीव-नाश किए जाने की बात समान थी।

13. अज्ञेय के अनुसार भीतरी विवशता क्या है? अपनी बात की पुष्टि लेखक ने किस उदाहरण द्वारा की है?

उत्तर- अज्ञेय ने अपने निबंध 'मैं क्यों लिखना हूँ' में बताया है कि किसी घटना को घटता हुआ देखकर अथवा सुनकर लेखक को उसका अनुभव होता है। यह अनुभव एक समय बौद्धिक स्तर से हटकर मन की संवेदना में बदल जाता है। यह संवेदना उसे अपनी बात कहने के लिए विवश करती है। इस विवशता से मुक्ति उस विषय में कुछ लिखने के बाद ही मिलती है। अपनी बात के प्रमाण स्वरूप लेखक ने अपनी हिरोशिमा नामक कविता का उदाहरण दिया है।

व्याकरण

संज्ञा

परिभाषा - किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम को संज्ञा कहते है।

संज्ञा के भेद :- संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद होते है-

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. जातिवाचक संज्ञा

3. भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा : - जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्राय: इसमें व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओं, समाचार-पत्रों, दिनों, महीनों आदि के नाम आते हैं।

जैसे - रमेश, बाजार, जयपुर, गंगा, हिमालय, दीपावली, रामायण आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा :- जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति या वर्ग के सम्पूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे - बंदर, गाय, पुस्तक, नदी, नगर, शहर, गाँव आदि।

3. भाववाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य स्वभाव आदि का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते है।

जैसे - मित्रता, पशुता, बुढ़ापा, बचपन, गौरव, सरलता आदि।

सर्वनाम

परिभाषा :- संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है।

सर्वनाम का अर्थ है - सब का नाम। ये शब्द सभी नामों (संज्ञा शब्दों) के लिए प्रयुक्त किये जा सकते हैं।

सर्वनाम के भेद - 1. पुरूषवाचक 2. निश्चयवाचक 3. अनिश्चयवाचक 4. संबंधवाचक 5. प्रश्नवाचक 6. निजवाचक

1. पुरूषवाचक सर्वनाम :- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलनेवाले, सुननेवाले व जिसके विषय में चर्चा की जाए, के स्थान पर किया जाता है, उन्हें पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है।

पुरूषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते है -

(अ) उत्तम पुरूष - बोलनेवाला या लिखनेवाला व्यक्ति जिन सर्वनामों का प्रयोग अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरूष वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे - मैं, हम, हम-सब, हम लोग, मुझे, मेरा, हमने, हमें, हमसे, हमको, मुझसे, मुझ पर आदि।

(ब) मध्यम पुरूष - जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग सुननेवाले के लिए किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हे।

जैसे - तू, तूने, तुझे, तेरा, तेरे, तुमको, तुझको, तुझपर, तुम, तुमने, तुम्हारा, तुमसे, तुमपर, तुम्हारे, आप, आपने, आपको, आपका, आपसे, आपपर, आपसब, आप लोग।

(स) अन्य पुरूष- जिसके बारे में बात की जाए या कुछ लिखा जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे- यह, वह, वे लोग, ये, उसे, उन्हें, इसे, उनका, उसका आदि ।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम- जो सर्वनाम किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति या स्थान की ओर संकेत करें, उन्हें निश्च वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- यह, ये, वह, वे आदि। (क) ये मेरी पुस्तक है (ख) वह मेरा घर है।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम- जो सर्वनाम किसी अनिश्चत वस्तु, व्यक्ति या स्थान के लिए प्रयोग किए जाते है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे - कोई, कुछ, कहीं, किसी ने आदि।

(4) संबंधवाचक सर्वनाम - जिन सर्वनाम शब्दों का संबंध किसी वस्तु व्यक्ति या स्थान से ज्ञात हो, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- (क) जो सोएगा सो खोएगा, (ख) जैसा बोओगे, वैसा काटोंगे (ग) जिसकी लाठी, उसकी भैंस

(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग उस प्रश्न पूछने के लिए होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- कौन, क्या, किससे।

(क) आज तुम्हें क्या चाहिए? (ख) वहाँ दरवाजे पर कौन खड़ा है।

(ग) कल तुम किससे बात कर रहे थे?

(6) निजवाचक सर्वनाम- ऐसे सर्वनाम जिनका प्रयोग वक्ता या लेखक (स्वयं) अपने लिए करते हैं, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे- आप, अपना, स्वयं, खुद आदि।

(क) मैं अपनी पुस्तक पढ़ रहा हूँ। (ख) अपना काम खुद ही कर लूँगा।

विशेषण

परिभाषा- संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

विशेषण के भेदः-

1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण

3. परिमाणवाचक विशेषण 4. संकेतवाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण- ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रूप, रंग, आकार, स्वभाव या दशा का बोध कराते हैं। उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

कुछ गुणवाचक विशेषण-

गुण - अच्छा, भला, सभ्य, नम्र, दानी, सुशील।

दोष - बुरा, असभ्य, कंजूस, चोर, झूठा आदि।

रंग - काला, लाल, हरा, पीला, सफेद, नीला आदि।

आकार - गोल, चपटा, सुडौल, अण्डाकार आदि।

स्वाद- कड़वा, मीठा, कटु, रसीला आदि।

गंध - खुश्बूदार, बदबूदार, सुगंधित, आदि।

स्पर्श - सख्त, कठोर, नरम, चिकना आदि।

काल - नया, पुराना, ताजा, प्राचीन, अगला आदि।

अवस्था - बूढ़ा, युवा, किशोर, जवान, गरीब आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण - ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या, क्रम, गणना का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते है। यह दो प्रकार के होते है -

1. निश्चित संख्या वाचक- एक, दूसरा, तीनों, चौगुना

2. अनिश्चित संख्यावाचक- कई कुछ बहुत, सब आदि।

3. परिमाणवाचक विशेषण- ऐसे शब्द जो किसी वस्तु, पदार्थ या जगह (संज्ञा/ सर्वनाम) की मात्रा, तौल या माप का बोध कराते हैं, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं इसके दो भेद होते है -

(अ) निश्चित परिमाणवाचक - दो लीटर, पाँच किलो, तीन मीटर

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक - थोड़ा, बहुत, कम, ज्यादा आदि।

4. संकेतवाचक विशेषण - जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण की तरह किया जाता है, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। इन्हें सार्वनामिक विशेषण भी कहते है।

अर्थात् पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनाम के अलावा अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा के पहले आते है, तब वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते है।

जैसे - वे किसान, हम सब विद्यार्थी, यह लड़का आदि।

सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अन्तर - जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है,। उन्हें सर्वनाम कहते है परंतु जब कोई सर्वनाम संज्ञा से पहले प्रयुक्त होकर संजा की विशेषता बताता है, तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

सर्वनाम	**सार्वनमिक विशेषण**
वह कहाँ गया है !	वह लड़का कहाँ गया है?
यह बाहर से आया है।	यह छात्र बाहर से आया है।

प्रविशेषण - विशेषण शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. वह बहुत प्रसन्न हुआ। 2. कितना सुन्दर संचालन है।

विशेषणों के तुलनात्मक रूप - प्राय: विभिन्न व्यक्तियो वस्तुओं या स्थानों की तुलना की जाती है। तुलना में एक दूसरे के गुण तथा दोषों को न्यून या अधिक बताया जाता है। तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएं होती है।

1. **मूलावस्था :** इसमें विशेषण द्वारा किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना न करके उसकी सामान्य विशेषता बताई जाती है, जैसे- राम सुन्दर है। मीठा आम।

(2) **उत्तरावस्था** -इसमें दो वस्तुओं, व्यक्तियों की तुलना करके एक को दूसरे से अच्छा या बुरा बताया जाता है। जैसे राम मोहन से सुन्दर है।

3. **उत्तमावस्था** - विशेषण की उत्तरावस्था तथा उतमावस्था बनाने के लिए क्रमश: तर तथा तम प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं। इसमें विशेषण द्वारा दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक या न्यून बताया जाता है।

जैसे - राम सबसे सुन्दर है।

विशेषण शब्दों की तुलना

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
योग्य	योग्यतर	योग्यतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
लघु	लघुतर	लघुत्तम
सरल	सरलतर	सरलतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम

क्रिया

परिभाषा- जिस शब्द से किसी काम कार्य का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

जैसे- पढ़, लिख, उठ ,बैठ, सो आदि। क्रिया के मूल रूप को धातु कहते है। धातु में ना जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनता है। जैसे- पढ़ना, लिखना, उठना बैठना, सोना आदि।

क्रिया के भेद-

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद -

1. अकर्मक, क्रिया 2. सकर्मक क्रिया

1. अकर्मक क्रिया- जिस क्रिया का फल केवल कर्ता पर ही पड़ता है, कर्म की वहाँ संभावना नहीं होती। उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - (1) रिया हँस रही है। सदा दौड़ रही है।

(2) निकिता सो रही है।

अकर्मक कियाएँ- दौड़ना, डरना, सोना, रोना हँसना, जागना, उछलना आदि।

2. सकर्मक क्रिया- जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते है।

जैसे- 1. पूनम पुस्तक पढ रही है।

2. प्रियंका चित्र बना रही है।

सकर्मक क्रिया के दो भाग होते हैं-

1. एक कर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे- अजय खाना खा रहा है।

2. द्विकर्मक क्रिया- जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे- अध्यापक छात्रों को हिन्दी पढ़ा रहे हैं।

प्रयोग तथा संरचना की दृष्टि से क्रिया भेद - इसके पाँच भेद है-

1. संयुक्त क्रिया :- दो या दो से अधिक धातुओं से बनी क्रिया संयुक्त क्रिया कहलाती है।

जैसे- अतिथि आने पर स्वागत करो। उसे बच्चा खेलता दिखाई दिया।

2. नामधातु किया - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द जब क्रिया की तरह प्रयुक्त होते है, उन्हें नामधातु क्रिया कहते है। है-

जैसे- संज्ञा-हाथ-हथियाना

सर्वनाम-अपना-अपनाना

विशेषण-गरम-गरमाना

3. प्रेरणार्थक क्रिया - जब कर्ता स्वयं कर्ता न करके दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

जैस - माँ ने बेटे से पानी मंगवाया।

सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।

4. पूर्वकालिक क्रिया - जब किसी क्रिया से पूर्व कोई अन्य क्रिया प्रयुक्त हुई हो, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते है

जैसे - शिवानी पढ़कर सो गई। दीपक खेलकर पढ़ने बैठेगा।

मूल धातु मे 'कर' लगाने से सामान्य क्रिया को पूर्वकाधिक क्रिया का रूप दिया जा सकता है।

5. कृदन्त क्रिया- क्रिया शब्दों के अंत में प्रत्यय के योग से बनी क्रिया कृदन्त क्रिया कहलाती है,

जैसे-

क्रिया	**कृदन्त क्रिया**
चल	चलना, चलता, चलकर
लिख	लिखना, लिखता, लिखकर
पढ़	पढ़ना, पढ़ता, पढ़कर

काल के अनुसार क्रिया तीन प्रकार की होती है - 1. भूत-कालिक 2. वर्तमान कालिक 3. भविष्यकालिक

अव्यय

☞ ऐसे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, काल, पुरुष एवं कारक के अनुसार नहीं बदलता है उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं।

अव्यय के भेंद- अव्यय पाँच प्रकार के होते है -

1. क्रिया-विशेषण 2. संबंधबोधक.

3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादि बोधक

5. निपात

1. क्रिया-विशेषण- ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते है, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे-

(अ) कछुआ **धीरे-धीरे** चल रहा है।

(ब) मन्दिर के **पास** मेरा घर है।

(स) रोहित **सुबह** से पढ़ रहा है।

(द) खुश्बू ने **बहुत** मेहनत की।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रिया सम्पन्न होने की रीति, स्थान, समय तथा मात्रा की जानकारी दे रहे हैं।

ये सभी क्रिया-विशेषण है।

क्रिया- विशेषण के चार भेद होते हैं-

(क) रीतिवाचक- जिन शब्दों से क्रिया के सम्पन्न होने के ढंग, रीति तरीके का ज्ञान होता है, उन्हें रीतिवाचक क्रिया - विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. हरकेश धीरे-धीरे चलती है।

2. अनिता तेज चलती है।

3. श्यामा अचानक चली गई।

4. एकाएक जादूगर लोप हो गया।

कुछ रीतिवाचक क्रिया विशेषण- अचानक, सहसा, अनायास, फटाफट, एकाएक, अकस्मात, शीघ्र, अवश्य , चुपचाप, सचमुच, यथासम्भव, जल्दी-जल्दी, शीघ्रतापूर्वक आदि।

(ख) कालवाचक - जिन शब्दों से क्रिया सम्पन्न होने के समय की जानकारी मिलती है, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैस - 1. विक्रम कल आएगा।

2. निकिता प्रतिदिन व्यायाम करती है।

कालवाचक क्रियाविशेषण के उदाहरण - आज, कल, परसो, कब, अब, जब तब, अभी, कभी, पहले, बाद में, हमेशा, सदेव, नित्य, प्रातः, सुबह शाम प्रतिदिन, आजीवन, आजकल आदि।

(ग) स्थानवाचक क्रियाविशेषणा- जिन शब्दों से क्रिया सम्पन्न होने के स्थान का बोध हो, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. खुशी **बाहर** बैठी है। 2. मंदिर के **सामने** मेरा घर है।

स्थानवाचक क्रियाविशेषण के उदाहरण - यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, आगे पीछे, ऊपर नीचे, दाएँ, बाएँ, अंदर, बाहर, निकट, दूर, पास, समीप, सामने आदि।

(घ) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- जिन शब्दों से क्रिया के माप- तौल का पता चलता है। उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. राजेश बहुत **पढ़ती** है।

2. नीतु कम बोलती है।

3. प्रियंका ने बहुत **मेहनत** की।

4. थोड़ा **दूध** और ले लो।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण के उदाहरण- बहुत, ज्यादा, तनिक, जितना, कम, थोड़ा, जरा, काफी, पर्याप्त, खूब, केवल आदि।

विशेषण तथा क्रिया विशेषण में अन्तर- विशेषण शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं तथा क्रिया विशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं।

जैसे-

विशेषण	**क्रियाविशेषण**
वह तेज **आवाज** में बोलता है।	वह **तेज दौड़ता** है।
उसने कम **खाना** खाया।	थोड़ा कम **खाया** करो।

(2) संबंधबोधक अव्यय - जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे - 1. छत के ऊपर मोर नाच रहा है।

2. अंजना से पहले रविन्द्र आ गया।

इन वाक्यों में के ऊपर, से पहले पद वाक्य प्रयुक्त संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों का संबंध आपस में जोड़ते हैं।

संबंधबोधक के उदाहरण-

1. कालसूचक -के पहले, के बाद, के पश्चात, के पीछे, के आगे।
2. स्थानसूचक - के भीतर, के बाहर, के अंदर, के पीछे, के आगे, के निकट, के पास, के बीच, के मध्य, के बाँए, के दाएँ।
3. दिशासूचक- के सामने, की ओर, की तरफ, के समीप,
4. साधनसूचक- के द्वारा, के सहारे, के जरिए
5. विरोधसूचक- के विपरीत, के विरुद्ध, के प्रतिकूल
6. समानता सूचक- के समान, के अनुसार, के तुल्य,
7. हेतुसूचक- के कारण, के अलावा, के रहित, के सिवाय

(3) समुच्चयबोधक - जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों, 'वाक्यांशों' या वाक्यों को जोड़ने का काम करते है, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे - 1. तुमने परिश्रम किया **इसलिए** पास हो गए।

2. वह केवल पढ़ने में ही तेज नहीं है, **बल्कि** अच्छा खिलाड़ी भी है।

समुच्चयबोधक अव्यय दो प्रकार के होते हैं। -

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक (ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक - ऐसे अव्यय जिनके द्वारा मुख्य वाक्य जोड़े जाते हैं।

जैसे- 1. झिलमिल और निकिता बहनें हैं। 2. आप चाय लोगे या कॉफी।

उदाहरण -और, तथा, एवं, या, अथवा, कि, परंतु, किंतु, लेकिन, मगर, बल्कि, वरन, अत:, अतएव, सो आदि।

(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक- ऐसे अव्यय शब्द जो एक प्रधान उपवाक्य को एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों से जोड़ते हैं।

जैसे- 1. रोज व्यायाम करो **ताकि** स्वस्थ रह सको। 2. पानी बरसने वाला था **इसलिए** मैं जल्दी घर आ गया।

उदाहरण- क्योंकि, इसलिए, के कारण, चूंकि, जोकि ताकि, यदि, तो, यद्यपि, तथापि, जब, तब, कि, जो, अर्थात् आदि।

(4) विस्मयादिबोधक- ऐसे अव्यय शब्द जो हर्ष, शोक, आश्चर्य, क्रोध, घृणा, विस्मय, दु:ख आदि मनोभावों को प्रकट करते है, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते है।

जैसे - 1. **वाह!** कितना सुन्दर दृश्य है। 2. **उफ!** कितनी गरमी है।

विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रयोग विभिन्न मनोभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है-

हर्षसूचक - अहा! वाह! शाबास! बहुत खूब!

शोकसूचक - आह। हाय! ओह! उफ! राम! राम !

भयसूचक - अरे रे! बाप रे!

आश्चर्यसूचक. - क्या? ऐ ! हैं।

अभिवादनसूचक:- नमस्ते ! प्रणाम! सलाम! बधाई !

चेतावनीसूचक - होशियार ! खबरदार! सावधान!

कृतज्ञता सूचक- धन्यवाद! शुक्रिया, जिंदाबाद।

निपात- कुछ अव्यय शब्द वाक्य से किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल ला देते हैं, उन्हें 'निपात' कहा जाता है।

जैसे- 1. वह मुझसे बोली **तक** नहीं।

2. मुझे ही **क्यों** परेशान करते हो?

वाक्य में प्रयुक्त तक ही के प्रयोग से पहले पद को बल मिलता है, ये निपात है। अर्थ नहीं होता है। इनका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है।

प्रमुख निपाल - ही, भी, तो, तक, मात्र, भर, केवल आदि।

संधि

व्युत्पति- 'सम् + धि' के योग से बना शब्द-संधि।

सम् का अर्थ- पूर्णतया

धि का अर्थ - धारण करना/ मिलना

शाब्दिक अर्थ - योग अथवा मेल

परस्पर परिभाषा - दो ध्वनियों या वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि -विकार या परिवर्तन को संधि कहते हैं।

जैसे- देव+इंद्र - देवेंद्र (अ+इ = ए)

संधि- विच्छेद - किसी संधियुक्त शब्द को मूल रूप में लिखना संधि-विच्छेद कहलाता है।

जैसे- जगदीश = जगत् +ईश ।

संधि के भेद- संधि के तीन भेद होते हैं। -

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि - दो स्वरों के मेल से ध्वनि में विकार या परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। इसके पाँच भेद होते है -

(अ) दीर्घ संधि- दो स्वरों के समान परस्पर मेल पर -

नियम - अ / आ + अ / आ = आ

इ/ ई + इ । ई = ई

उ/ ऊ + उ/ऊ = ऊ

जैसे- अन्न + अभाव = अन्नाभाव (अ + अ = आ)

भोजन + आलय = भोजनालय (अ+आ =आ)

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी (आ +अ =आ)

कविता + अवली - कवितावली (आ+अ=आ)

कारा + आगार = कारागार (आ + आ + आ)

मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र (इ + इ = ई)

गिरि + ईश = गिरीश (इ+ई = ई)

यती + इन्द्र = यतीन्द्र (ई + इ = ई)

रजनी + ईश = रजनीश (ई + ई = ई)

भानु + उदय = भानूदय (उ + उ +ऊ)

लघु + ऊर्मि = लघूर्मि (उ + ऊ = ऊ)

वधू + उल्लास = वधूल्लास (उ + ऊ = ऊ)

सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि (ऊ+ ऊ = ऊ)

(ब) गुण संधि- भिन्न स्थानों से उच्चरित स्वरों के बीच संधि से एक नया स्वर उत्पन्न हो वहाँ गुण संधि होती है -

नियम- अ / आ + इ/ई = ए

अ / आ + उ + ऊ = ओ

अ / आ + ऋ = अर

जैसे-स्व + इच्छा = स्वेच्छा (अ + इ = ए)

नर + ईश = नरेश (अ+ई = ए)

महा + इंद्र - महेन्द्र (आ +इ = ए)

महा + ईश्वर = महेश्वर (आ+ ई =ए)

ज्ञान + उदय = ज्ञानोदय (अ+उ =ओ)

महा + उत्सव = महोत्सव (आ+उ =ओ)

सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा (अ + ऊ =ओ)

गंगा + ऊर्मि गंगोर्मि (आ + ऊ =ओ)

सप्त + ऋषि - सप्तर्षि (अ + ऋ= अर्)

महा + ऋषि - महर्षि (आ + ऋ= अर्)

(स) वृद्धि संधि- वृद्धि स्वरों का निर्माण होने के कारण वृद्धि संधि कहते है।

नियम-अ/आ+ए/ ऐ = ऐ

अ/आ+ ओ/ औ = औ

उदाहरण-

शुभ + एषी = शुभैषी (अ+ ए = ऐ)

तथा + एव = तथैव (आ+ ए = ऐ)

परम + ऐश्वर्य= परमैश्वर्य (अ+ ऐ = ऐ)

महान + ऐश्वर्यक = महेश्वर्य (आ + ऐ = ऐ)

परम + ओजस्वी = परमौजस्वी (अ +ओ = औ)

वन + औषध - वनौषध (अ + औ =औ)

महा + औषध = महौषध (आ +ओ = औ)

(द) यण् संधि - यदि इ, ई, उ,ऊ तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो इ, ई का य्, उ, ऊ का व् और ऋ का र् हो जाता है

नियम - इ, ई + अन्य स्वर इ/ई को छोड़कर = य+स्वर

उ/ऊ + अन्य स्वर (उ/ऊ को छोड़कर) = व् + स्वर

ऋ + अन्य स्वर (ऋ को छोड़कर) = र् + स्वर

उदाहरण- वि+अय = व्यय (इ+अ=य)

अति + आचार = अत्याचार (इ+आ=या)

प्रति + उपकार = प्रत्युपकार (इ +उ = यु)

प्रति + ऊष = प्रत्यूष (इ+ ऊ = यू)

प्रति + एक = प्रत्येक (इ+ ए = ये)

देवी + अर्पण = देव्यर्पण (ई+अ=य)

सखी + आगमन = सख्यागमन (ई+ आ = या)

नारी + उचित = नार्युचित (ई + उ = यु)

वाणी + औचित्य = वाण्यौचित्य (ई + औ = यौ)

सु + अच्छ - स्वच्छ (उ +अ= व)

सु + आगत = स्वागत (उ +आ=वा)

अनु + इति अन्विति (उ+इ=वि)

अनु + ईक्षा - अन्वीक्षा (उ+ई=वी)

अनु + एषण = अन्वेषण (उ+ए=वे)

लघु + ओष्ठ = लध्वोष्ठ (उ+ओ=वो)

वधू + अर्थ = वध्वर्थ (ऊ+ अ = व)

वधू + आगमन = वध्वागमन (ऊ+आ = वा)

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति (ऋ + अ = र)

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा (ऋ + आ = रा)

पितृ + इच्छा - पित्रिच्छा (ऋ + इ = रि)

(य) अयादि संधि- ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो वह क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाता है।

नियम- ए + अन्य स्वर (ए, ऐ की छोड़कर) = अय् + अन्य स्वर

ऐ + अन्य स्वर (ए, ऐ को छोड़कर) = आय् + अन्य स्वर

ओ + अन्य स्वर (ओ, औ को छोड़कर) = अव् + अन्य स्वर

औ + अन्य स्वर (ओ, औ को छोड़कर) आव, अन्य स्वर

उदारहरण- चे + अन= चयन (ए+अ = अय)

नौ + अक - नावक (ऐ +अ = आय)

नौ+ इका = गायिका (ऐ +इ = आयि)

भो+ अन = भवन (ओ + अ = अव)

गो + ईश = गवीश (ओ + ई = अवी)

पौ+ अक = पावक (औ+ अ = आव)

नौ + इक = नाविक (औ+ इक= आवि)

औ+ उक = भावुक (औ + उ = आवु)

व्यंजन संधि- एक व्यंजन का किसी दूसरे व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर ध्वनि में विकार होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

नियम- 1. प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण (क्,च्,ट्,त्,प्) के बाद + किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व या कोई स्वर, तो पहला वर्ण अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण (ग्,ज्, ड्, द्, ब्) हो जाता है।

जैसे- दिक् + अंबर = दिगंबर (क् + अ = ग)

वाक् + ईश = वागीश (क् + ई = गी)

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक (क् + ऐ = गै)

दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग्ग)

वाक् + जाल = वाग्जाल (क् + ज = ग्ज)

दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम (क् + भ = ग्भ)

ऋक् + वेद = ऋग्वेद (क् + व = ग्व)

षट् + आनन = षडानन (द्+ आ =डा)

षट् + दर्शन = षड्दर्शन (ट् + द = ड्)

जगत् + अंबा = जगदंबा (त् + अ = द)

सत् + उपयोग = सदुपयोग (त् + उ = दु)

अप् + द = अब्द (य् + द = ब्द)

2. प्रत्येक वर्ग के प्रथम वर्ण (क्,च्,ट्,त्,प्) के बाद + न या म तो प्रथम वर्ण (क्,च्,ट्,त्,प्) अपने ही वर्ग के पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) में बदल जाते हैं,

जैसे-

वाक् + मय = वाङ्मय (क् + म = ङ्म)

षट् + मास = षण्मास (ट्+म = ण्म)

जगत् + नाथ = जगन्नाथ (त् + न = न्न)

अप् + मय = अम्मय (प् + म = म्म)

उत् + नति = उन्नति (त् + न= न्न)

सत् + मार्ग = सन्मार्ग (त् + म = न्म)

3. म् + स्पर्श व्यंजन (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग) = तो म् के स्थान पर उस वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है अथवा म् अनुस्वार में बदल जाता है।

जैसे - अलम् + कृति अलङ्कृति (अलंकृति)

अहम् + कार = अहङ्कार (अहंकार)

सम् + गम = सङ्गम (संगम)

किम् + चित = किञ्चित् (किंचित)

चिरम् + जीवी = चिरञ्जीवी (चिरंजीवी)

मृत्युम् + जय = मृत्युञ्जय (मृत्युंजय)

सम् + तोल = सन्तोष (संतोष)

धुरम् + धर = धुरन्धर (धुरंधर)

4. म् + य, र, ल, व, श, ष, स, = म् के स्थान पर अनुस्वार।

जैसे- सम् + योग = संयोग

सम् + रचना = संरचना

सम् + वाद संवाद

सम् + सार = संसार

5. त्/द् + ल = त्, द् का ल् हो जाता है

जैसे- उत् + लास = उल्लास

उद् + लेख = उल्लेख

6. त्/द् + ज / झ = त्/द् का 'ज्' हो जाता है

जैसे- सत् + जन = सज्जन

उद् + झटिका = उज्झटिका

7. त् / द् +श = त्/द् का च् और श् का छ् होता है -

जैसे- उद्+ श्वास = उच्छ्वास

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

उद् + शृंखल = उच्छृंखल

8. त्/द् + च्/छ् = त्/द् का च् होता है

जैसे - उद् + चारण = उच्चारण

सत् + चरित्रा = सच्चरित्र

9. त् / द् + ह = त्/द का 'द्' और 'ह' का 'ध' होता है

जैसे - तद् +हित = तद्धित

उद् + हार = उद्धार

10. पहले पद के अंत में स्वर + अगले पद का पहला वर्ग छ = छ का च्छ होता है।

जैसे - अनु + छेद = अनुच्छेद

परि + छेद = परिच्छेद

आ + छादन = आच्छादन

11. किसी शब्द के अंत में अ या आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर आए एवं दूसरे शब्द के आरम्भ में 'स' हो तो 'स' के स्थान पर ष् हो जाता है।

जैसे - अभि + सेक = अभिषेक

वि + सम = विषम

सु + सुप्ति = सुषुप्ति

नि + सिद्ध = निषिद्ध

12. ऋ, र, ष के बाद कोई स्वर, क वर्गीय वर्ण, प वर्गीय वर्ण, अनुस्वार अथवा य, व, ह में से से कोई वर्ण आए तो अंत में आने वाला 'न' = ण में बदल जाता है।

जैसे - राम + अयन - रामायण

प्र + मान = प्रमाण

3. विसर्ग संधि - विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से ध्वनि में विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

नियम -

(1) विसर्ग (:) के पूर्व 'अ' हो और बाद में 'अ' हो तो दोनों का विकार 'ओ' हो जाता है।

जैसे- मन: + अविराम =मनोविराम

यश: + अभिलाषा = यशोभिलाषा

2. विसर्ग (:) के पहले अ हो और बाद वाले शब्द का पहला वर्ण अ के अतिरिक्त अन्य कोई भी वर्ण होतो विसर्ग का लोप होता है।

जैसे- अत: + एव = अतएव

यश: + इच्छा = यशइच्छा

3. यदि विसर्गर (:) के पहले अ हो तथा बाद में किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग ओ में बदल जाता है।

जैसे- तप: + वन तपोवन

अध: + गामी = अधोगामी

4. विसर्ग के बाद अ के अतिरिक्त अन्य स्वर, किसी वर्ग का तीसरा चौथा, पाँचवा वर्ण या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के स्थान पर र् हो जाता है।

जैसे - आयु: + र्वेद = आयुर्वेद

ज्योति + मय = ज्योतिर्मय

आशी: + वचन = आशीर्वचन

धनु: + धारी = धनुर्धारी

5. विसर्ग के बाद च या श आये तो विसर्ग श् हो जाता है

जैसे - तप: + चर्या = तपश्चर्या

पुन: च = पुनश्च

यशः + शरीर = यशश्शरीर

6. विसर्ग के पहले अ/आ हो तथा बाद में त या स आए तो विसर्ग का स हो जाता है।

जैसे - मनः + ताप = मनस्ताप

पुरः + सर = पुरस्सर

नमः + ते = नमस्ते

7. विसर्ग के पहले इ या उ स्वर हो और उसके बाद क, ख, प, फ आए तो विसर्ग ष् में बदल जाता है।

जैसे - बहिः + कार = बहिष्कार

आविः + कार = आविष्कार

चतु : + पथ = चतुष्पथ

चतु : + पाद = चतुष्पाद

समास

☞ समास शब्द की व्युत्पत्ति- सम् + आस के योग से हुई है।

☞ सम् का अर्थ - पूर्णतया तथा आस का अर्थ निकट आना

☞ समास शब्द का अर्थ - संक्षिप्त करना या छोटा करना।

परिभाषा - दो या दो से अधिक शब्दों के मेल या संयोग को समास कहते है। इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है।

जैसे - जल में मग्न - जलमग्न

दाल और रोटी - दाल-रोटी

☞ समस्त पद (सामासिक पद) - दो या दो से अधिक पदों के मेल से बना एक ही पद।

☞ समस्त पद में मुख्यत: दो पद होते है- पूर्वपद व उत्तरपद।

☞ पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तर-पद' कहते है।

समास विग्रह - समस्त पद को विभाजित कर पदों को अलग-अलग करने की क्रिया या रीति समास-विग्रह कहलाती है।

समस्त पद	पूर्व पद	उत्तर पद	समास विग्रह
गंगाजल	गंगा	जल	गंगा का जल
सिरदर्द	सिर	दर्द	सिर में दर्द
सीता-राम	सीता	राम	सीता और राम
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह

समास के भेद - समास के 6 भेद होते है-

1. अव्ययीभाव समास - पहला पद प्रधान
2. तत्पुरूष समास - दूसरा पद प्रधान
3. कर्मधारय समास - दूसरा पद प्रधान/ विशेषण-विशेषय , उपमेय-उपमान
4. द्विगु समास- पहला पद संख्यावाची व दूसरा पद प्रधान
5. द्वन्द्व समास - दोनों पद प्रधान
6. बहुब्रीहि समास - अन्य पद प्रधान

1. अव्ययीभाव समास - जिस समास का पहला पद अव्यय हो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। अव्यय पद का रूप लिंग, वचन, कारक के अनुसार बदलता नहीं है। इसमें पहला पद प्रधान होता है।

जैसे -	**समस्त पद**	**समास विग्रह**
	आजीवन	जीवन भर
	आमरण	मरण तक

प्रतिदिन	हर दिन
भरपेट	पेट भरकर
बेखबर	बिना खबर के
यथासंभव	जैसा संभव हो
यथाशक्ति	शक्ति अनुसार
घर-घर	घर के बाद घर
रातों - रात	रात ही रात में
आजन्म	जन्म से लेकर

2. तत्पुरूष समास - जिस समास में पहले पद की विभक्ति का लोप हो और दूसरा पद प्रधान हो, उसे तत्पुरूष समास कहते हैं।

☞ कर्त्ता व सम्बोधन कारक को छोड़कर शेष सभी कारकों की विभक्ति लोप होने के कारण उन्हीं छह कारकों के आधार पर तत्पुरूष समास के छः भेद किए गए है।

(क) कर्म तत्पुरूष समास ('को' विभक्ति का लोप) -

समस्त पद	**समास विग्रह**
मुँहतोड़	मुँह को तोड़नेवाला
विदेशगमन	विदेश को गमन
जेबकतरा	जेब को कतरने वाला
गगनचुंबी	गगन को चूमने वाला
शरणागत	शरण को आया हुआ
यशप्राप्त	यश को प्राप्त

(ख) करण तत्पुरूष समास ('से' के द्वारा का लोप)

समस्त पद	**समास विग्रह**
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़ पीड़ित	बाढ़ से पीडित
धर्माध	धर्म से अंधा
ईश्वर प्रदत	ईश्वर द्वारा प्रदत
आँखों-देखी	आँखों द्वारा देखी हुई

(ग) सम्प्रदान तत्पुरूष समास (के लिए 'चिह्न का लोप')

युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
राहखर्च	राह के लिए खर्च

गुरूदक्षिणा	गुरू के लिए दक्षिणा
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
यज्ञशाला	यज्ञ के लिए शाला

(घ) अपादान तत्पुरूष समास ('से' (अलग होने के अर्थ में) का लोप)

देशनिकाला	देश से निकाला
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
नेत्रहीन	नेत्र से हीन
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त

(ड़) संबंध तत्पुरूष समास - (का, के, की चिह्नों का लेप)

गंगाजल	गंगा का जल
राजमाता	राजा की माता
जलधारा	जल की धारा
मतदाता	मत का दाता
नगरसेठ	नगर का सेठ

(च) अधिकरण तत्पुरूष समास (में, पर-चिह्नों का लोप)

जलमग्न	जल में मग्न
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
आपबीती	आप पर बीती
वनवास	वन में वास
मुनिश्रेष्ठ	मुनियों में श्रेष्ठ

3. कर्मधारय समास - जिस समास में दोनों पदों के बीच विशेषण -विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो उन्हें कर्मधरय समास कहते है।

विशेषण-विशेष्य -

महापुरूष	महान है जो पुरूष
पीताम्बर	पीला है जो अंबर
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को
मंद बुद्धि	मंद है जिसकी बुद्धि

उपमेय-उपमान-

चन्द्रवदन	चंद्रमा के समान वदन
कमलनयन	कमल के समान नयन
विद्याधन	विद्या रूपी धन

भवसागर	भव रूपी सागर

4. द्विगु समास - पहला पद संख्यावाची व दूसरा पद प्रधान होता है। समस्त पद समूह के बोध को दर्शाता है।

जैसे-

त्रिभुज	तीन भुजाओं का समूह
नवरत्न	नव रत्नों का समूह
त्रिमूर्ति	तीन मूर्तियों का समूह
शताब्दी	सौ अब्दों(वर्षो) का समूह
पंचरात्र	पाँच रात्रियों का समाहार
सप्तऋषि	सात ऋषियों का समूह

संख्यावाची समस्त पद में यदि अन्य पद प्रधान हो तो वहाँ बहुव्रीहि समास होता है।

जैसे - दशानन - दश है आनन जिसके अर्थात् रावण

चतुर्भुज - चार भुजाएँ है जिसके अर्थात् विष्णुजी

5. द्वन्द्व समास - इस समास में दोनों पद समान रूप से प्रधान होते हैं। दोनों पदों के बीच और, या, अथवा , एवं आदि पदों का लोप होता है, जैसे-

रात-दिन	रात और दिन
सीता-राम	सीता और राम
दाल-रोटी	दाल और रोटी
माता-पिता	माता और पिता
हानि-लाभ	हानि या लाभ
जीवन-मरण	जीवन या मरण

6. बहुव्रीहि समास - जिस समास में दोनों पदों का अर्थ न लेकर अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते है। इसमें अन्य पद की प्रधानता होती है। जैसे

घनश्याम	घन जैसा श्याम अर्थात् कृष्ण
गजानन	गज के समान आनन वाला/ गणेश
हंसवाहिनी	हंस है वाहन जिसका/सरस्वती
महावीर	महान है जो वीर अर्थात् हनुमान जी
तिरंगा	तीन रंगों वाला भारतीय राष्ट्रध्वज
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव
शाखामृग	शाखा पर चलने वाला मृग अर्थात् बंदर
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अन्तर :-

☞ कर्मधारय समास में दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य तथा उपमेय-उपमान का संबंध होता है, जबकि बहुव्रीहि समास में दोनों पदों का अर्थ प्रधान न होकर 'अन्य अर्थ' प्रधान होता है। जैसे - मृगनयनी-मृग के समान नयन वाली (कर्मधारय), नीलकंठ = जिसका कंठ नीला है/शिव- बहुव्रीहि

बहुव्रीहि व द्विगु समास में अन्तर -द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक होता है और समस्त पद समूह का बोध कराता है जबकि बहुव्रीही में पहला पद संख्यावाचक होने पर भी समस्त पद से समूह का न बोध न होकर अन्य अर्थ का बोध होता है

जैसे- चौराहा - चार राहों का समूह (द्विगु समास)

चतुर्भुज - चार है भुजाएँ जिसके/विष्णु (बहुव्रीहि समास)

संधि और समास में अन्तर - संधि में दो वर्णो के मेल से ध्वनि में विकार आ जाता है जबकि समास में शब्दों का योग होता है जिसका उद्देश्य पद को संक्षिप्त करना है।

जैसे - लम्बा + उदर = लम्बोदर (संधि)

लम्बा है उदर जिसका = लंबोदर (समास)

उपसर्ग

परिभाषा:- वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसका अर्थ बदल देते है, उन्हें उपसर्ग कहते है। जैसे:- सु + योग = सुयोग।

उपसर्ग के भेद : - हिन्दी भाषा में मुख्यत: तीन प्रकार के उपसर्ग प्रचलित है-

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिन्दी के उपसर्ग
3. विदेशी उपसर्ग

1. संस्कृत के उपसर्ग :- संस्कृत के सभी उपसर्ग तत्सम शब्दों के साथ हिंदी में प्रयुक्त होते है।

उपसर्ग	:	**शब्द**
अति	:	अतिप्रिय, अतिरिक्त, अत्यधिक, अत्याचार, अतीव, अतिसार, अतीद्रिय
अधि	:	अधिकार, अधिशेष, अधिकरण, अध्यक्ष, अध्यादेश, अध्यापक, अधिपति
अनु	:	अनुकरण, अनुसंधान, अनुयायी, अनुग्रह, अनुज, अन्वेषण, अनूदित, अनुवाद, अनुकूल, अनुभव
अप	:	अपमान, अपयश, अपमान, अपकीर्ति, अपवाद, अपराध, अपहरण, अपकर्ष
अपि	:	अपितु, अपिधान, अपिहित
अभि	:	अभिमान, अभिवादन, अभिषेक, अभिमुख, अभिलाषा, अभिनय, अभियोग, अभ्यास, अभियुक्त
अव	:	अवगुण, अवहेलना, अवनति, अवसाद, अवतार, अवलोकन, अवसान, अवसर, अवशेष
आ	:	आदेश, आहार, आगमन, आभार आवेश, आजन्म, आजीवन, आरोहण, आकार
उद्/उत्	:	उत्कर्ष, उत्थान, उत्पति, उत्साह, उत्तम, उज्ज्वल, उल्लास, उन्नति, उद्घाटन, उच्चारण
उप	:	उपहार, उपवास, उपदेश, उपवन, उपकार, उपग्रह, उपसर्ग, उपेक्षा, उपयोग, उपचार
दुर्	:	दुर्गुण, दुराचार, दुर्जन, दुरूपयोग, दुर्दशा, दुर्योधन, दुस्साहस, दुश्चरित्र, दुष्कर्म, दुष्परिणाम
दुस्	:	दुस्साहस, दुश्चरित्र, दुष्कर्म, दुष्परिणाम
नि	:	निवारण, न्यून, निषेध
निर्	:	निर्बल, निरपराध, निर्भय, निर्जन, निर्यात, निरक्षर, निरीक्षक, निरादर, निराशा
निस्	:	निस्तेज, निस्संदेह, निश्चल, निष्काम, निश्चय, निष्पाप, निष्फल, निष्कर्ष, निशुल्क
प्र	:	प्रहार, प्रबल, प्रयोग, प्रगति, प्रसंग, प्रदेश, प्रजाति, प्रचुर, प्रदोष, प्रकाश, प्रशासन, प्रचार
प्रति	:	प्रतिवर्ष, प्रतिवाद, प्रतिध्वनि, प्रतिदिन, प्रतिहार, प्रतिशत, प्रतिक्रिया, प्रत्युत्तर, प्रतीक्षा, प्रत्यक्ष
परा	:	पराजय, पराधीन, पराकाष्ठा, पराभव, पराक्रम,
परि	:	परिवर्तन, परिक्रमा, पर्यावरण, परिवेश, परीक्षा, पर्यवेक्षक, परिजन, परीक्षण, परिवार, परिवाद
सम्	:	संयोग , सम्मान, संसार, संकल्प, संजय, संतोष, संविधान, संस्कृत, संचार, संहार, संगम
सु	:	सुयोग, सुलभ, सुगम, सुगंध, सुविचार, सुकन्या, स्वागत, स्वच्छ, सुयोग, सुरंग
वि	:	विदेश, विहीन, विभाग, विज्ञान, विजय, विपक्ष, वियोग, विमुख, व्याकरण, व्याप्त, व्याधि, व्याख्या

2. **हिन्दी के उपसर्ग :-** हिंदी भाषा में संस्कृत के उपसर्गो में परिवर्तन करके (तद्भव) उपसर्गो का निर्माण किया गया है।

उपसर्ग		**शब्द**
अ	:	अकाज, अचेत, अहल, अमर, अजर, असत्य, अचल, असमान, अभिज्ञ, अधर्म, अपवित्र, अपार
अन	:	अनपढ़, अनदेखा, अनमोल, अनजान, अनचाहा
अध	:	अधखिला, अधपका, अधमरा, अधकचरा, अधजला
औ	:	औगुण, औसर, औतार, औघड़
उन	:	उनसठ, उनचास, उन्नासी, उनहत्तर
कु	:	कुढंग, कुचाल, कुख्यात, कुमार्ग, कुपुत्र, कुजात
क	:	कपूत, कलंक, कठोर
चौ	:	चौराहा, चौमासा, चौखट, चौपाया, चौपाल
नि	:	निडर, निशान, निपट, निकम्मा, नियम, निधन
स	:	सपूत, सजल, सजीव, सजग, सफल, सहित
सु	:	सुयश, सुकान्त, सुपुत्र, सुडौल, सुजान, सुघड़
भर	:	भरपूर, भरसक, भरमार, भरपाई, भरपेट
ति	:	तिरंगा, तिपाही, तिमाही, तिराहा, तिकोना
दु	:	दुनाली, दुरंगा, दुमुँहा, दुगुना, दुपहर, दुबला
पर	:	परहित, परसुख, परकाज, परलोक, परजीवी
बिन	:	बिनदेखा, बिनखाया, बिनब्याहा, बिनमाँगा, बिनबोया
बहु	:	बहुमूल्य, बहुमत, बहुवचन, बहुपयोगी
सह	:	सहचर, सहगामी, सहयोग, सहवास
स्व	:	स्वदेश, स्वराज, स्वभाव, स्वाभिमान
आप	:	आपबीती, आपसुनी, आपकाज
पच	:	पचकूटा, पचरंगा, पचमेल

3. **विदेशी उपसर्ग :-** भारत में बहुत समय तक उर्दु व अन्य विदेशी भाषाएँ प्रचलित रही है। अत: इनके उपसर्ग भी प्रयुक्त होते है। जैसे:-

उपसर्ग	:	**शब्द**
अल	:	अलविदा, अलबेला, अलमस्त, अलगाव
ना	:	नालायक, नापसंद, नापाक, नाराज, नाबालिग
ऐन	:	ऐनवक्त, ऐनइनायत, ऐनमौका
ला	:	लाचार, लाजवाब, लापता, लावारिस, लाचार
बद	:	बदनाम, बदजात, बदतमीज, बदबू, बदमाश
बा	:	बाकायदा, बाअदब, बाइज्जत
गैर	:	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क, गैरहाजिर, गैरमर्द
खुश	:	खुशामिजाज, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशहाल

कम : कमजोर, कमअक्ल, कमबख्त, कमकीमत, कमसिन

हम : हमदम, हमसफर, हमराह, हमवतन, हमउम्र

बिला : बिलावजह, बिलाशक, बिलाकसूर, बिलाशर्त

बे : बेचारा, बेहद, बेचैन, बेदाग, बेहार, बेइज्जत

दर : दरअसल, दरकार, दरबार, दरखास्त

हर : हरघड़ी, हरवर्ष, हररोज, हरबार, हरदम, हरहाल

ब : बदस्तूर, बतौर, बशर्त, बखूबी, बदौलत, बजाय

सर : सरकार, सरदार, सरताज, सरपंच, सरहद

नेक : नेकदिल, नेकनीयत, नेकनाम, नेककाम

हैड : हैडमास्टर, हैडबॉय, हैड गर्ल, हैडक्लर्क

सब : सब इंस्पेक्टर, सब डिवीजन, सब कमेटी

हाफ : हाफपेंट, हाफटिकट, हाफशर्ट

जनरल : जनरल मैनेजर, जनरल सैक्रेट्री

★ कुछ शब्द एक से अधिक उपसर्ग युक्त होते है। जैसे:-

शब्द	**उपसर्ग**		**उपसर्ग**		**मूलशब्द**
पर्यावरण =	परि	+	आ	+	वरण
उपाध्यक्ष =	उप	+	अधि	+	अक्ष
अप्रत्याशा =	अ	+	प्रति	+	आशा
अभ्यागत =	अभि	+	आ	+	गत
दुर्व्यवहार =	दुर्	+	वि + अव	+	हार

प्रत्यय

प्रत्यय की परिभाषा:- वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के बाद में लगकर उसका अर्थ परिवर्तन करते हुए नये शब्दों का निर्माण करते हैं , प्रत्यय कहलाते हैं। जैसें:- झूल + आ = झूला

पढ़ + आकू = पढ़ाकू

1. **हिंदी के प्रत्यय:-**

प्रत्यय के भेद:- हिंदी प्रत्यय को मुख्यत: दो भागों में विभक्त किया गया है।

(1) कृत् प्रत्यय

(2) तद्धित प्रत्यय

1. कृत् प्रत्यय : - वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अंत में लगकर नए शब्दों की रचना करते है, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्यय से बनने वाले शब्द कृदन्त कहलाते हैं। जैसे-

प्रत्यय	:	**शब्द**
अक	:	लेखक, गायक पाठक, नायक, चालक, वाचक
आक	:	तैराक, चालाक
आकू	:	लड़ाकू, पढ़ाकू
अक्कड़	:	भुलक्कड़, पियक्कड़, घुमक्कड़
आऊ	:	बिकाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ, चलाऊ, कमाऊ
आड़ी	:	खिलाड़ी, कबाड़ी, अनाड़ी, जुगाड़ी
आलु	:	झगडालु, दयालु, ईर्ष्यालु, कृपालु
इयल	:	मरियल, अड़ियल, सड़ियल
ऊ	:	झाड़ू, बाजारू, चालू, खाऊ, बिगाड़ू
एरा	:	लुटेरा, बसेरा, कमेरा
ऐया	:	गवैया, पढ़ैया, खिवैया
ओड़ा	:	भगोड़ा, हँसोड़ा, निमोड़ा
ता	:	दाता, डूबता, मारता, बहता
वाला	:	रखवाला, लिखनेवाला, पढ़नेवाला
हार	:	पालनहार, चाखनहार, राखनहार
ई	:	बोली, सोची, सुनी, हँसी, खाँसी, फाँसी
औना	:	खिलौना, बिछौना
ना	:	पढ़ना, लिखना, गाना
नी	:	ओढ़नी, मथनी, छलनी, लेखनी, कतरनी, सूँघनी
आ	:	मेला, खेला, भूला, झूला, सूखा
न	:	बेलन, बंधन
अन	:	पठन, पालन, झाड़न, घुटन
आव	:	बनाव, खिंचाव, तनाव, घुमाव

आई	:	लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई, सिलाई, कटाई
आवट	:	सजावट, मिलावट, लिखावट
आहट	:	घबराहट, चिल्लाहट, बड़बड़ाहट
या	:	आया, बोया, खाया
कर	:	गाकर, देखकर, सुनकर

(2) तद्धित प्रत्यय :- क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय	:	**शब्द**
आर	:	सुनार, लुहार, कुम्हार
ई	:	माली, तेली
वाला	:	गाड़ीवाला, टोपीवाला, इमलीवाला, शहरवाला
आहट	:	कड़वाहट, गरमाहट, चिकनाहट
ता	:	सुंदरता, मानवता, दुर्बलता
आपा	:	मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा
इक	:	शारीरिक, सामाजिक, ऐतिहासिक
आलु	:	कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु
ईला	:	रंगीला, चमकीला, भड़कीला
तर	:	कठिनतर, समानतर, उच्चतर
वान	:	गुणवान, धनवान, बलवान
ईय	:	नाटकीय, भारतीय, राष्ट्रीय
आ	:	भूखा, रूखा
इया	:	उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया, लुटिया
ड़ी	:	पंखुड़ी, आँतड़ी
ओला	:	खटोला, सँपोला, मँझोला
आइन	:	पंडिताइन, ठकुराइन
इन	:	मालिन, जोगिन
नी	:	मोरनी, शेरनी, सिंहनी
आनी	:	सेठानी, देवरानी, जेठानी
इनी	:	कमलिनी, नंदिनी, हथिनी
एरा	:	सपेरा, घसेरा, चचेरा, ममेरा
आई	:	अच्छाई, बुराई, भलाई
पन	:	लड़कपन, बचपन, अपनापन, पागलपन

2. संस्कृत के प्रत्यय:-

प्रत्यय	:	**शब्द**
इत	:	हर्षित, गर्वित, लज्जित, पल्लवित
इक	:	मानसिक, धार्मिक, मार्मिक, पारिश्रमिक
एय	:	आग्नेय, पाथेय, राधेय, कौंतेय
तम	:	अधिकतम, श्रेष्ठतम
मान	:	श्रीमान, शक्तिमान, बुद्धिमान
त्व	:	गुरूत्व, लघुत्व, बंधुत्व
शाली	:	शक्तिशाली, गौरवशाली, वैभवशाली
तर	:	श्रेष्ठतर, उच्चतर, निम्नतर, लघुत्तर
इमा	:	नीलिमा, लालिमा, कालिमा, महिमा

3. विदेशी भाषा के प्रत्यय :-

प्रत्यय	:	**शब्द**
गी	:	ताजगी, बानगी, सादगी
गर	:	कारीगर, बाजीगर, सौदागर
ची	:	नकलची, तोपची, अफीमची
दार	:	हवलदार, जमींदार, किरायेदार
खोर	:	आदमखोर, चुगलखोर, रिश्वतखोर
गार	:	खिदमतगार, मददगार, गुनहगार
नामा	:	बाबरनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा
बाज	:	धोखेबाज, नशेबाज, चालबाज
मंद	-	जरूरतमंद, अहसानमंद, अक्लमंद
आबाद	-	सिकन्दराबाद, औरंगाबाद, मौजमाबाद
इन्दा	-	बाशिंदा, शर्मिंदा, परिंदा
गाह	-	ख्वाबगाह, ईदगाह, दरगाह
गीर	-	आलमगीर, जहाँगीर, राहगीर
आना	-	नजराना, दोस्ताना, सालाना
इयत	-	इंसानियत, खैरियत, आदमियत
ईन	-	शौकीन, रंगीन, नमकीन
कार	-	सलाहकार, लेखाकार, जानकार
दान	-	खानदान, पीकदान, कूड़ादान
बंद	-	कमरबंद, नजरबंद, दस्तबंद

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

मुहावरे एवं लोकोक्ति में अन्तर -

1. मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है जबकिलोकोक्ति हिन्दी भाषा का शब्द है।
2. मुहावरा एक वाक्यांश होता है जबकि लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होती है।
3. मुहावरे भाषा की लाक्षणिकता को दर्शाते है, जबकि लोकोक्तियाँ समास के भाषायी इतिहास को अभिव्यक्त करती है।
4. मुहावरे में लिंग, वचन और काल आदि के अनुसार कुछ परिवर्तन आ जाता है, जबकि लोकोक्ति में वाक्य में प्रयुक्त होने पर भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आता।

मुहावरें

☞ ऐसे वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध करवाकर किसी विलक्षण अर्थ का बोध कराए, मुहावरे कहलाते हैं।

पाठ्यपुस्तकों पर आधारित कुछ मुहावरे

मुहावरे -		अर्थ
हारिल की लकड़ी होना	-	सदा साथ रहना
मन में चकरी होना	-	मन अस्थिर होना
राजनीति पढ़ आना	-	छल-कपट सीख आना
हरा ही हरा सूझना	-	सब कुछ अच्छा दिखाई देना
काल को हाँक लाना	-	मृत्यु का भय दिखाना
काल कवल होना	-	मारा जाना
फूँक से पहाड़ उड़ाना	-	असंभव कार्य करना
काल के बस में होना	-	मौत के सिकंजे में होना
राई नमक उतारना	-	नजर न लगने का उपचार करना
सींवन उधेड़ना	-	छिपी बातों को सामने लाना
गागर रीति होना	-	कुछ भी सफलता न मिलना
हँसी उड़ना	-	कमियों पर हँसना
आँखे हटाये न हटना	-	आँखों का मुग्ध हो जाना
जान डाल देना	-	शक्ति और प्रभाव आ जाना
आँखे फेर लेना	-	नजर हटा लेना
आँखे चार होना	-	प्रेम हो जाना
मृगतृष्ण होना	-	भ्रम होना

दुख बाँचना	-	छिपे दुख को समझना
गला बैठना	-	स्पष्ट न बोल पाना
ढाँढस बँधाना	-	तसल्ली देना
आँखों ही आँखों में हँसना	-	आँखों से हँसी का भाव प्रकट होना
बतीसी दिखाना	-	जोर से हँसना
सब कुछ होम देना	-	सबकुछ बलिदान कर देना
ऊहापोह में होना	-	दुविधा में होना
आँखे भर आना	-	दुखी हो जाना/आँसू आ जाना
खरा उतरना	-	श्रेष्ठ प्रमाणित होना
दो टूक बात करना	-	साफ-साफ बात करना
झगड़ा मोल लेना	-	जानबूझकर झगड़ा करना
आसन जमा लेना	-	बैठ जाना
आँखे चुराना	-	जानकर भी न देखना
मुँह में पानी आना	-	खाने के लिए ललचाना
ज्ञान-चक्षु खुलना	-	वास्तविकता का पता चलना
होश सँभालना	-	समझदार होना
भट्टी में झोकना	-	नष्ट करना
आग बबूला होना	-	अत्यधिक क्रोधित होना
गुबार-निकालना	-	क्रोध शांत होना
मत मारी जाना	-	बुद्धि नष्ट होना
आग लगाना	-	भड़काना
थू-थू करना	-	अपमानित करना
लू उतारना	-	खरी-खोटी सुनाना
राहत की साँस लेना	-	तसल्ली महसूस करना
हाशिए पर चले जाना	-	प्रभाव कम होना
छक्के छुड़ाना	-	बुरी तरह हराना
ककहरा पढ़ाना	-	प्रारम्भिक शिक्षा देना
सरताज हो जाना	-	सबसे श्रेष्ठ हो जाना
तिलिस्म गढ़ना	-	नई-नई योजना बनाना
आँखे चमकाना	-	आँखों में खुशी छाना
सिर पर चढ़कर बोलना	-	जादुई प्रभाव होना
नायाब हीरा	-	अत्यधिक मूल्यवान

बाट जोहना	–	इंतजार करना
खबर लेना	–	कठोरता से पेश आना
नौ दो ग्यारह होना	–	भाग जाना
आँधी होना	–	तेज गति से भाग जाना
रोंगटे खड़े होना	–	बहुत डर जाना
जान हथेली पर लेना	–	प्राण संकट में डालना
काया पलट होना	–	पूरी तरह बदलाव होना
नाक न रह जाना	–	सम्मान न रह जाना
दिमाग खरोंचना	–	जोर देकर सोचना
जान में जान आना	–	मुसीबत टलने पर सुख की अनुभूमि होना
कानाफूंसी होना	–	दबी आवाज में बात करना
मन वृंदावन होना	–	मन प्रसन्न होना
ठगा-सा हर जाना	–	चकित हो जाना
सिर पर आकाश उठाना	–	परेशान कर देना
आँखों से मेघमाला घिरना	–	लगातार आँसू बहना

नोट :- मुहावरों के वाक्य प्रयोग का अभ्यास करें।

लोकोक्तियाँ

लोक में प्रचलित उक्ति या कथन लोकोक्ति कहलाती है। लोकोक्ति को कहावत भी कहते हैं।

पाठयपुस्तक पर आधारित लोकोक्तियाँ

जल माँह तेल की गागरि, बूँद न ताकों लागी-

अर्थ- तेल की गागरी पर जल की बूँद भी नहीं ठहरती।

चाहति हुती गुहारि जितहिं तै उत् तैं धार बही-

अर्थ- जिससे सहायता की आशा हो उसी के द्वारा प्रहार होना

सूर समर करनी करहि कहिं न जनावहि आयु-

अर्थ- शूरवीर कुछ करके दिखाते है केवल आत्म प्रशंसा नहीं करते है।

जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण-

अर्थ - बीते हुए को भुलाकर भविष्य पर ध्यान देना।

नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है-

अर्थ- रोने वालो की गिनती करना निरर्थक है

स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरूषों के लिए पीयूष का घूँट।

अर्थ- एक ही कार्य के परस्पर विपरीत फल।

गंगा-जमुनी संस्कृति - मिली जुली जीवन पद्धति।

जब खाएगा बड़े-बड़े कौर, तब पाएगा दुनिया में ठौर।

अर्थ- जमकर खाने वाला ही दुनिया में स्थान बना सकता है।

रामजी की चिरई रामजी का खेत-

अर्थ- सब कुछ ईश्वर की देन है।

शंख इंग्लैण्ड में बज रहा था गूँज हिन्दुस्तान में आ रही थी।

अर्थ- दूर तक खबर फैलाना

सड़के जवान हो गई।

अर्थ- नई जैसी आकर्षक हो गयी

मंजिल से कहीं ज्यादा रोमांचक होता है। मंजिल तक का सफर।

अर्थ- लक्ष्य से लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयत्न आनंदित करता है।

बगुला भगत।

अर्थ- बनावटी आचरण वाला।

लेखन विधि

विज्ञापन

1. आपके शहर में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन होने जा रहा है, इसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर-

पुस्तक -प्रेमियों के लिए शुभ-सूचना

आपके शहर में

विश्व पुस्तक मेले का आयोजन

दिनांक : 1 जनवरी, 2023 से 05 जनवरी, 2023 तक

रामलीला मैदान सीकर में

मेले मे सभी भाषाओं तथा अनेक लेखकों-प्रकाशकों की पुस्तकें उचित मूल्य पर उपलबध है।

आयोजक

नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया

एक बार अवश्य पधारें।

2. 'नव अंकुर' विधवा महिला सहायता संस्था जयपुर द्वारा बनाई गई कारपेट की बिक्री हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर-

नव-अंकुर विधवा महिला सहायता संस्था, जयपुर

कॉरपेट प्रदर्शनी

दिनांक 01 अप्रैल, 2023 से 07 अप्रैल, 2023 तक

सुनहरा अवसर ! ! 30 प्रतिशत छूट ! सुनहरा अवसर !

संस्थान में हस्तकला निर्मित सुन्दर व कलात्मक कॉरपेट ब्रिकी हेतु प्रदर्शनी रखी गई है। जिसमें पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

स्थान

नव-अंकुर विधवा महिला सहायता संस्थाान, जयपुर

समय :- सुबह 10:00 से सांय : - 6:00 तक

3. आपके विद्यालय में S.U.P.W शिविर में अनुपयोगी सामग्री से निर्मित उपयोगी सामग्री ब्रिकी हेतु एक विज्ञान लिखिए।

उत्तर-

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सामी (सीकर)

सुनहारा अवसर ! **सुनहरा अवसर!**

विद्यालय में S.U.P.W शिविर में अनुपयोगी सामग्री से निर्मित उपयोगी सामग्री की बिक्री हेतु लगी प्रदर्शनी में आइए ! मनभावन सामग्री को उचित मूल्य पर खरीद कर ले जाइए !!

आपके घर की शोभा बढ़ाइए!!!

प्रदर्शनी में पधार कर छात्रों का उत्वाहवर्द्धन कीजिए!

दिनांक : 14 नवम्बर, 2023

समय : प्रात: 10:00 बजे से सांय 4:00 बजे तक

स्थान : रा.उ.मा.वि. सामी

4. आपके शहर जयपुर में आयोजित निदेशालय द्वारा राष्ट्रीय हैण्डलूम उत्पादों का प्रदर्शन-बिक्रय मेला आयोजित किया जा रहा है। इसका एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर-

जयपुर शहर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला

नेशनल हैण्डलूम एक्सपो

दिनांक : 1 जनवरी, 2023 को 15 जनवरी, 2023 तक

समय : दोपहर 12 बजे से रात्रि 9 बजे तक

स्थान : स्टेच्यू सर्किल के पास

15 प्रतिशत छूट !

! हथकरधा एवं हस्तशिल्प के विविध आकर्षक उत्पाद !!

आयोजक

उद्योग दिनेशालय, जयपुर **विकास आयुक्त (हस्तकला)**

जयपुर **भारत सरकार**

5. आपका मित्र फूलों से बनी वस्तुओं, गुलदस्ते, हार, मालाएँ आदि की बिक्री बढ़ाना चाहता है। उसकी सहायता के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर-

!!श्री बालाजी पुष्प भण्डार !!

यहाँ पर सभी प्रकार के फूलों से बने हार, गुलदस्ते एवं ताजा फूलों की मालाएँ उपलब्ध है। शादि-पार्टियों में आर्डर पर तैयार बुक किये जाते हैं।

!! शादि-पार्टियों में मण्डप, स्टेज एवं गाड़ियाँ उचित रेट पर सजाये जाने का एक मात्र स्थान !!

स्थान

घण्टाधर के पास, सीकर

मो. न. 9999999999

6. कला अंकुर संस्था की कलाविथि में कुछ चित्र (पेंटिग्स) बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। इस हेतु एक विज्ञापन लगभग 25 से 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

कला अंकुर संस्था

!! ऑयल चित्रों की प्रदर्शनी !!

कलाविथि में ऑयल चित्रों की सुन्दर प्रदर्शनी बिक्री हेतु रखी गई है। आप सभी कलाप्रेमी इस कला प्रदर्शनी में सादर आमंत्रित है।

दिनांक : 25 जनवरी, 2023

समय : 12:00 बजे से सांय 8:00 तक

स्थान : कला अंकुर संस्था

जयपुर

पत्र-लेखन

पत्रों के प्रकार- पत्रों को दो भागों में बांटा जा सकता है-

1. औपचारिक-पत्र 2. अनौपचारिक-पत्र

1. औपचारिक-पत्र :- औपचारिक पत्र के अंतर्गत प्राधानाचार्य को पत्र, सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों को पत्र, संपादक को पत्र, व्यावसायिक पत्र आदि को शामिल किया जाता है।

2. अनौपचारिक-पत्र :- व्यक्तिगत या पारिवारिक पत्रों को अनौपचारिक पत्रों में शामिल किया जाता है, पिता, माता या मित्र के पत्र, बधाई-पत्र, निमंत्रण पत्र और संवेदना पत्र इसमें शामिल किये जाते हैं।

पत्र के मुख्य अंश:-

1. प्रेषक का पता और दिनांक - व्यक्तिगत पत्रों में ऊपर दाहिनी और प्रेषक अपना पता व पत्र लेखन की तिथि लिखता है। आजकल इसे बाई ओर भी लिखा जाता है।

2. विषय संकेत : - औपचारिक पत्रों में विषय शीर्षक देकर विषय संकेत लिखा जाता है जिसे पत्र के विषय की जानकारी मिल जाती है।

3. संबोधन तथा अभिवादन :- औपचारिक पत्रों में मान्यवर, महोदय आदि आदर सूचक शब्दों से संबोधन किया जाता है। अनौपचारिक पत्रों में अपने से बड़ों के लिए आदरणीय, पूजनीय, पूजनीया, माननीय आदि का प्रयोग किया जाता है।

अपने से छोटों के लिए- प्रिय, चिरंजीवी, अनुज, सुश्री, प्यारी आदि।

हम उम्र के लिए - प्रिय मित्र, प्रिय बंधु आदि।

4. विषय वस्तु :- यह पत्र का मुख्य अंग है। इस भाग में संबंधित विषय-वस्तु का संक्षिप्त और स्पष्ट विवरण लिखना चाहिए।

5. समापन सूचक शब्द :- पत्र की समाप्ति पर प्रेषक को पत्र प्राप्तकर्ता के संबंध के अनुसार समापन सूचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अपने से बड़ों के लिए- आपका आज्ञाकारी, आपका प्रिय आदि।

बराबर वाले के लिए - अभिन्न मित्र या सखी, तुम्हारा परम् मित्र या सखी।

अपने से छोटो के लिए - तुम्हारा शुभचिंतक या तुम्हारा अग्रज या पिता/माता आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

औपचारिक पत्रों में - प्रार्थी, भवदीय/भवदीया, आपका आज्ञाकारी शिष्य, आपकी आज्ञाकारी शिष्या आदि।

6. पत्र प्राप्त करने वाले का पता - यह प्राय: अंत में लिखा जाता है। पत्र लिफाफे में बंद है तो उसके ऊपर लिखा जाता है।

औपचारिक पत्रों में यह सबसे पहले/प्रारम्भ में बांई ओर लिखा जाता है।

पत्र लिखते समय निमन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. कागज अच्छे किस्म का हो।
2. लिखावाट सुन्दर व स्पष्ट हो।
3. वर्तनी की त्रुटियाँ न हो।
4. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग।
5. तिथि, अभिवादन, अनुच्छेद का उचित प्रयोग आदि।

1. अपने आपको राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सामी (सीकर) का छात्र कृष्ण सिंह मानकर अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को भौतिक भ्रमण पर जाने की अनुमति के लिए एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर- सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

सामी (सीकर)

विषय :- शैक्षणिक भ्रमण पर जाने की अनुमति हेतु।

मान्यवर,

सादर निवेदन है कि मेरी कक्षा के सभी छात्र-छात्राएँ शैक्षिक-भ्रमण पर जाना चाहते है। इससे हमारा ज्ञानवर्द्धन तो होगा ही साथ ही अन्य जगह की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक सौन्दर्य की जानकारी मिल सकेगी। हम इस बार उदयपुर, चितौड़गढ व माउंट आबू का भ्रमण करना चाहते है। इसके लिए कक्षाध्यापक जी व शारीरिक शिक्षक महोदय का मार्गदर्शन प्राप्त है।

अत: हमें शैक्षिक-भ्रमण पर जाने की अनुमति प्रदान कर अनुग्रहित करें।

दिनांक : 15 अक्टूम्बर, 2023

आपका आज्ञाकारी शिष्य

कृष्ण सिंह

कक्षा - 10

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

सामी (सीकर)

2. प्रधानचार्य राजकीय माध्यमिक विद्यालय गोवटी (सीकर) की ओर से अपने जिला सीकर के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए। जिसमें विद्यालय के छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण का निवेदन हो।

उत्तर-

कार्यालय प्रधानाचार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोवटी, सीकर

क्रमांक : रा.उ.मा.वि./गोवटी/200/2022-23 **दिनांक :** 15-1-2023

प्रेषक,

प्रधानाचार्य,

रा.उ.मा.वि. गोवटी (सीकर)

सेवामें,

श्रीमान मुख्य चिकित्सा अधिकारी,

सीकर

विषय : छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण करवाने हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शिक्षा विभाग के आदेश की अनुपालना में छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण विद्यालय परिसर में करना अनिवार्य है।

इस संबंध में विद्यालय में अध्ययनरत 600 छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए चिकित्सकों की एक टीम अतिशीघ्र विद्यालय में भिजवाने की कृपा करें।

भवदीय

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य

राउमावि, गोवटी, सीकर

3. आप सीकर निवासी रोहित है। जयपुर में अध्ययन कर रहे अपने छोटे भाई मोहित को पत्र लिखिए, जिसमें अध्ययन के साथ-साथ खेलों में भी भाग लेने की सलाह दीजिए।

सीकर

12 जनवरी, 2023

प्रिय अनुज मोहित,

शुभाशीष !

तुम्हारा पत्र मिला। जानकर बहुत खुशी हुई कि तुम्हारी पढ़ाई अच्छी चल रही है। पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद, व्यायाम व मनोरंजन भी शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक हैं। यह अच्छी बात है कि तुम्हारे विद्यालय में खेलकूद अनिवार्य कर रखे हैं। तुम्हे भी अध्ययन के साथ-साथ खेलों में भी भाग लेना चाहिए। इससे हमारा सर्वांगिण विकास होता है।

अन्त में मेरा यही कहना है कि कक्षा में ध्यान लगाकर सुनना तथा पढ़ाये हुए पाठ को अच्छी तरह से पढ़कर याद करना। साथ ही खेलों में भी अवश्य भाग लेना

तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त करो। इसी कामना के साथ।

तुम्हारा शुभेच्छु

रोहित

निबंध-लेखन

परीक्षापयोगी कुछ महत्त्वपूर्ण निबंध

1. बढ़ती महँगाई : दु:खद जीवन
2. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप
3. विद्यार्थी जीवन और अनुशासन
4. राजस्थान में बढ़ता जल संकट
5. रजास्थान की जन-कल्याणकारी योजनाएँ
6. बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या
7. विद्यार्थी जीवन में इन्टरनेट की भूमिका
8. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता
9. बेटी बचाओं - बेटी पढ़ओं।

अपठित गद्यांश व पद्यांश

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

भारतवर्ष पर प्रकृति की विशेष कृपा रही है। यहाँ सभी ऋतुएँ अपने समय पर आती है और पर्याप्त समय तक ठहरती है। ऋतुएँ अपने अनुकूल फल-फूलों का सृजन करती है। धूप और वर्षा के समान अधिकार के कारण यह भूमि श्स्यश्यामला हो जाती है। यहाँ का नगाधिराज हिमालय कवियों को सदा से प्रेरणा देता आ रहा है और यहाँ की नदियाँ मोक्षदायिनी समझी जाती रही है। यहाँ कृत्रिम धूप और रोशनी की आवश्यकता नहीं पड़ती। भारतीय मनीषि जंगल में रहना पसन्द करते थे। प्रकृति-प्रेम के ही कारण यहाँ के लोग पत्तों में खाना पसन्द करते है। वृक्षों में पानी देना एक धार्मिक कार्य समझते है। सूर्य और चन्द्र दर्शन नित्य और नैमितिक कार्यो में शुभ माना जाता है।

पारिवारिकता पर हमारी संस्कृति में विशेष बल दिया गया है। भारतीय संस्कृति में शोक की अपेक्षा आनन्द को अधिक महत्व दिया गया है। इसलिए हमारे यहाँ शोकान्त नाटकों का निषेद है। अतिथि को भी देवता माना गया है। अतिथि देवो भवः।

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है-

(क) भारत की नदियाँ (ख) अतिथि देवो भवः

(ग) भारतवर्ष और प्रकृति (घ) भारतीय मनीषि (ग)

2. 'अतिथि देवो भवः' मूलतः किस देश की संस्कृति मानी जाती है?

(क) श्रीलंका (ख) मॉरिशस (ग) भूटान (घ) भारत (घ)

3. भारतीय संस्कृति में नैमितिक कार्यो में शुभ माना जाता है-

(क) सूर्य-चन्द्र दर्शन (ख) मंगल-बृहस्पति (ग) शनि- राहु (घ) शुक्र-बुध (क)

4. भारत में मोक्षदायिनी स्वरूप माना गया है-

(क) पर्वतों को (ख) पेड़-पौधों को (ग) मैदानों को (घ) नदियों को (घ)

5. सदैव कवियों का प्रेरणास्त्रोत माना जाता है-

(क) गंगा नदी (ख) हिमालय पर्वत (ग) धूप और वर्षा (घ) फल-फूल (ख)

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश
पल पल परिवर्तित प्रकृति-वेश!
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्त्र-दृग-सुमन फार
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार
जिसके चरणों में पड़ा ताल
दर्पण-सा फैला है विशाल!
गिरी का गौरव गाकर झर-झर

मद में नस नस उत्तेजित कर

मोती की लड़ियों से सुन्दर

झरते है झाग भरे निर्झर!

1. प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक है-

(क) पर्वत प्रदेश में पावस (ख) प्रकृति-वेश

(ग) परिवर्तित प्रकृति (घ) उपर्युक्त सभी (क)

2. 'मेखलाकार पर्वत अपार' में किस पर्वतमाला का वर्णन हुआ है?

(क) मलयगिरी (ख) हिमालय (ग) नीलगिरी (घ) चित्रकूट (ख)

3. 'अपने सहस्त्र दृग-सुमन फार' में 'सहस्त्र' का अर्थ है-

(क) सौ (ख) हजार (ग) दर हजार (घ) हजारों (ख)

4. हिमालय से कौनसी पवित्र नदी का उद्‌गम होता है?

(क) यमुना (ख) गंगा (ग) गोदावरी (घ) नर्मदा (ख)

5. 'झरते है झाग भरे निर्झर' में 'निर्झर' से आश्य है-

(क) झरना (ख) झर-झर (ग) बिना झरे (घ) निर्जल (क)

मॉडल प्रश्न प्रत्र

विषय - हिन्दी

कक्षा -10

समय : 3 घण्टे 12 मिनट पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांकन अनिवार्यतः लिखे।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखे।
4. जिन प्रश्नों में आंतरिक खण्ड है, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखे।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्व लिखे।
6. प्रश्न संख्या 17, 18, 19, 20, 22, 23 में आंतरिक विकल्प है।

खण्ड - अ

प्रश्न 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 5 ×1 =5

उत्तर- जिस विद्यार्थी ने समय की कीमत जान ली वह सफलता को अवश्य प्राप्त करता है। प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी दिनचर्चा की समय-सारणी अथवा तालिका बनाकर उसका पूरी दृढ़ता से पालन करना चाहिए। जिस विद्यार्थी ने समय का सही उपयोग करना सीख लिया उसके लिए कोई भी काम करना असंभव नही है। कुछ लोग ऐसे भी है जो कोई काम पूरा न होने पर समय की दुहाई देते है। वास्तव में सच्चाई इसके विपरीत होती है। अपनी अकर्मण्यता और आलस को वे समय की कमी के बहाने छिपाते है। कुछ लोगों को अकर्ममण्य रह कर निठल्ले समय बिताना अच्छा लगता है। ऐसे लोग केवल बातुनी होते है। दुनिया के सफलतम व्यक्तियों ने सदैव कार्यव्यस्तता मे जीवन बिताया है। उनकी सफलता का रहस्य समय का सदुपयोग रहा है। दुनिया में अथवा प्रकृति में हर वस्तु का समय निश्चित है। समय बीत जाने के बाद कार्य फलप्रद नहीं होता।

1. विद्यार्थी को सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

(अ) समय की दुहाई देना (ब) समय की कीमत समझना

(स) समय पर काम करना (द) दृढ़ विश्वास क्से बनाए रखना ( )

2. कुछ लोग समय की कमी के बहाने क्या छुपाते है-

(अ) अपनी अकर्मण्यता और आलस्य (ब) अपना निठल्लापन

(स) अपनी विभिन्न कमियाँ (द) अपना बातूनीपन ( )

3. दुनिया के सफलता व्यक्तियों की सफलता का रहस्य क्या है?

(अ) समय का पालन (ब) समय का प्रयोग

(स) समय की कीमत (द) समय का सदुपयोग ( )

4. कोई कार्य किस स्थिति में फलप्रद नहीं होता-

(अ) समय न आने पर (ब) समय कम होने पर

(स) समय बीत जाने पर (द) समय अधिक होने पर ( )

5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है-

(अ) समय (ब) विद्यार्थी जीवन में समय का महत्त्व

(स) विद्यार्थी जीवन (द) विद्यार्थी की दिनचर्चा ( )

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए (प्रश्न संख्या 6 से 10 तक)

5 ×1 =5

मैं मजदूर मुझें देवों की बस्ती से क्या
अगणित बार धरा पर मैने स्वर्ग बनाये।
अम्बर में जितने तारे, उतने वर्षो से
मेरे पुरखों ने धरती का रूप सँवारा।
धरती को सुंदरतम करने की ममता में
बिता चुका है कई पीढ़ियाँ, वंश हमारा।
और आगे आने वाली सदियों में
मेरे वंशज धरती का उद्धार करेंगे।
इस प्यासी धरती के हित में ही लाया था।
हिमगिरी चीर सुखद गंगा की निर्मल धारा
मेंरे रेगिस्तानो की रेती धो-धोकर
बन्ध्या धरती पर भी स्वर्णिम पुष्प खिलाए।
मैं मजदूर मुझे देवों की बस्ती से क्या?

6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्ष है-

(अ) मजदूर और देव (ब) मजदूर के कर्त्तव्य

(स) मजदूर की आत्मकथा (द) धरती और मजदूर ( )

7. 'अगणित' शब्द का अर्थ है-

(अ) गणित (ब) अगणनीय (स) गणनीय (द) गणित के बिना ( )

8. 'अम्बर' का पर्यायवाची युग्म है-

(अ) नभ, गगन, व्योम (ब) कुसुम, अनल, आकाश

(स) इंदु, राशि, दृग (द) अबला, अनल, अंतरिक्ष ( )

9. मजदूर हिमालय की गोद से गंगा निकाल कर लाया था-

(अ) रेगिस्तान की मिट्टी धोने के लिए (ब) बंजर जगहों में फूल खिलाने के लिए

(स) प्यासी धरती के हित के लिए (द) धरा पर स्वर्ग बनाने के लिए ( )

10. **प्रस्तुत काव्यांश में 'बंध्या धरती पर भी स्वर्णिम पुष्प खिलाए' का अर्थ है-**

(अ) बंधी हुई धरती पर सोने के फूल खिलाए

(ब) बंजर धरती पर सोने के फूल खिलाए

(स) बंजर धरती को फसलों से हरा-भरा किया

(द) उर्वरा धरती पर स्वर्णिम पुष्प खिलाए ( )

11. **गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा जाता है?** 1

(अ) वहाँ बादशाह रहते हैं

(ब) वहाँ के लोग बहादुर होते है

(स) वहाँ बादशाह बहुत मेहनती होते है

(द) वहाँ के लोगों ने कठिन परिश्रम से शहर को खुबसूरत बनाया है ( )

12. **'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ की लेखन विधा है-** 1

(अ) व्यंगात्मक (ब) रेखाचित्र (स) यात्रा वृन्तांत (द) संस्मरण ( )

प्रश्न 2. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।** **6 ×1 = 6**

1. जिस संज्ञा शब्द से किसी पदार्थ के गुण, दोष, धर्म, अवस्था, भाव, व्यापार आदि का बोध होता है, उसे ..... कहते हैं।

2. सर्वनाम .....प्रकार के होते है।

3. 'मोर सुन्दर पक्षी है' वाक्य में.....विशेषण है।

4. जिस क्रिया का फल कर्ता के बजाय कर्म पर पड़ता है वह ..... होती है।

5. 'स्वागत' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग ..... है।

6. 'बुराई', 'भलाई' शब्दों में ..... प्रत्यय का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 3. **निम्नलिखित अति लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखिए-** **12 × 1 = 12**

1. संधि को परिभाषित करते हुए कोई दो उदाहरण लिखिए।

2. अव्ययीभाव समास की परिभाषा तथा कोई दो उदाहरण लिखिए।

3. 'दो टूक बात कहना' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

4. 'अक्ल बड़ी या भैंस' लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

5. महावीर प्रसार द्विवेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

6. 'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भण्डारी को उपलब्धियाँ संयोगवश मिली थी। क्या आप ऐसा मानते है?

7. डूँमराव गाँव किन कारणों से इतिहास में प्रसिद्ध है?

8. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

9. फसल के विकास में किन-किन का सहयोग होता है?

10. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

11. 'एही ठैंया झुलनी हेरानी हो रामा। कासों में कहूँ' दुलारी के - इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

12. लेखक की मइयाँ लेखक को किस युक्ति से खाना खिलाती थी? 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर लिखिए।

खण्ड - ब

प्रश्न संख्या 4 से 16 तक के लिए प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम उत्तर सीमा 45 शब्द है। $13 \times 2 = 26$

प्रश्न 4. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरूप्रयोग है। आपकी राय में विज्ञान का दुरूपयोग कहाँ और किस तरह से हो रहा है?

प्रश्न 5. 'साना-साना हाथ जोड़ि.....' पाठ में पीड़ा और सौन्दर्य का अद्‌भुत मेला है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 6. 'नई दिल्ली में सब था..... सिर्फ नाक नहीं थी' इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

प्रश्न 7. स्वर संधि किसे कहते है? स्वर संधि के भेद उदाहरण सहित लिखिए।

प्रश्न 8. कवि ने 'श्रीब्रजदूलह' किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक क्यों कहाँ है?

प्रश्न 9. लेखक ने फादर कामिल बुल्के को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग क्यों बताया है?

प्रश्न 10. 'उत्साह' शीर्षक कविता में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 11. गोपियों ने राजधर्म किसे कहा है और क्यों?

प्रश्न 12. 'स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का उपकार और अपराध करना है।' इस कथन का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 13. शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि क्यों दी गई है?

प्रश्न 14. गार्मियों की उमसभरी शाम को बालगोबिन भगत शीतल और मनमोहक बना देते थे। कैसे?

प्रश्न 15. कवि 'देव' का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 16. महावीर प्रसाद द्विवेदी का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए।

खण्ड - स

प्रश्न 17. निम्नलिखित पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 3

मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची जिसे कहते है बल्ट। और सुन्दर भी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो.....' वगैरह याद आने लगे थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज की कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानि चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था।

अथवा

हमारे हँसी-मजाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमे अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी जैसे किसी ऊँचाई पर देवदारू की छाया में खड़े हों।

प्रश्न 18. निम्नांकित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 3

ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी।

अपरस रहत सनेह तगा तै, नाहिन मन अनुरागी।

पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह ना त्यागी।

ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद व ताकौं लगी।

प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।

'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

अथवा

अट नहीं रही है

आभा फागुन की तन

सट नहीं रही है।

कहीं साँस लेते हो,

घर-घर भर देते हो,

उड़ने को नभ में तुम

पर-पर कर देते हो,

आँख हटाता हूँ तो

हट नहीं रही है।

प्रश्न 19. 'संगतकार' कविता के पीछे निहित उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 3

अथवा

परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 20. 'लखनवी अंदाज' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए। 3

अथवा

भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार मानव संस्कृति क्या है।

खण्ड - द

प्रश्न 21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 300-350 शब्दों में सारगर्भित निबंध लिखिए। 4

(अ) पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या

(i) प्रस्तावना (ii) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या एवं कुप्रभाव

(iii) प्रदूषण निवारण के उपाय (iv) उपसंहार

(ब) मोबाइल फोन वरदान या अभिशाप

(i)प्रस्तावना (ii) मोबाईल फोन से लाभ : वरदान

(iii) मोबाइल फोन से होने वाले दुष्परिणाम : अभिशाप

(iv) उपसंहार

(स) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन

(i) प्रस्तावना (ii) विद्यार्थी और अनुशासन

(iii) अनुशासित जीवन के लाभ और हानि

(iv) उपसंहार

(द) मेरे प्रिय अध्यापक

(i) प्रस्तावना (ii) आदर्श अध्यापक के गुण

(iii) आदर्श गुरू का व्यक्तित्व एवं छात्रों पर प्रभाव

(iv) उपसंहार

प्रश्न 22. स्वयं को अभिमन्यु, राजकीय उ.मा. विद्यालय लालगढ़, बीकानेर का छात्र मानते हुए अपने प्रधानाचार्य को विषयाध्यापको की कमी के कारण बाधित अध्ययन व्यवस्था को अध्यापको की वैकल्पिक व्यवस्था करवाकर सुचारू रूप से संचालित करवाने हेतु एक प्रार्थना-पत्र लिखिए। 4

अथवा

स्वयं को सीकर निवासी परीक्षित मानकर मित्र गौरव को एक पत्र लिखिए जिसमें हाल ही सम्पन्न हुई ग्रामीण ओलम्पिक खेल प्रतियोगिता में हुई क्रिकेट प्रतियोगिता में आपकी टीम द्वारा ट्राफी जीतने का उल्लेख किया गया हो।

प्रश्न 23. विवेकानन्द युवा संगठन, पलसाना, सीकर की ओर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में संगठन की ओर से एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 4

अथवा

यातायात अथवा परिवहन अधिकारी की ओर से सड़क पर वाहन सावधानी से चलाने का एक सार्वजनिक विज्ञान लिखिए।